पाण्डित्य पूजा प्रकाश

प्रधान सम्पादक
आचार्य अखिलेश द्विवेदी

सह सम्पादक
आचार्य वागीश द्विवेदी

सलाहकार
पं० प्रेमशंकर पाण्डेय एवं पं० भोला मिश्र

राष्ट्रीय संस्कृत महाविद्यालय
मुम्बई-400019

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान :
राष्ट्रीय संस्कृत महाविद्यालय
माटुंगा, मुम्बई
फोन नं : 022-24071423
मोबा० : 09820611270, 09820611290

संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

वि० सं० 2072 (2017 ई०)

मूल्य : 251.00

लेजर टाइपसेटिंग :
अखिल कम्प्यूटर, वाराणसी
मो० : 9450540139

मुद्रक :
साधना प्रेस, वाराणसी
मो० : 09336912547

भूमिका

हमारे वेदवक्ता ऋषि-मुनियों ने ईश्वर द्वारा रची गयी सृष्टि को सर्वप्रकार से सशक्त, समृद्धिशाली तथा सर्वप्रकार सम्पन्न बनाने के लिए जगन्नियन्ता के कण-कण में व्याप्त स्वरूप को जप, तप, यज्ञ, साधना, प्रार्थना द्वारा बाह्यान्तर रूप में प्राप्त किया। सत्, रज, तम त्रिगुणात्मक सृष्टि के स्वरूप को अनुशासित रूप में तीन भागों में विभक्त करते हुए सर्जक, पालक, प्रलयंकर प्रभुत्वों का निर्माण करते हुए ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आराधना की। साथ ही उनकी महाशक्तियों की भी उपासना महासरस्वती, महालक्ष्मी, श्रीदुर्गा के रूप में की। जो संसार का समुचित संचालन करती हैं। इनमें परमात्मा के सभी स्वरूप समन्वित हैं। उसी सर्वव्यापक प्रकृति, पुरुष को परमात्मा के नाम से सम्बोधित किया गया है। ईश्वर की प्रसन्नता के लिए ऋषियों ने वेदमन्त्रों का संकलन किया जिनसे न केवल प्राणीमात्र का अपितु अणु-परमाणु का भी समुचित विकास हो सका। उसी संसाररूपी रक्षा-कवच के रूप में प्रणेता ने "**पाण्डित्य पूजा प्रकाश**" नामक ऐसे ग्रन्थ संकलन करने का प्रयास किया, जिसके द्वारा देवपूजन तथा प्रार्थना करके देव-प्रकृति की प्रतिकूलता को अनुकूलता में परिवर्तित किया जा सकता है। ईश्वर की अनुकम्पा प्राणियों को चतुर्विध पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष अवश्य प्रदान करती है।

सनातन धर्म की परम्परा के महान् विद्वान्, मर्मज्ञ ज्योतिषी, तपोमूर्ति ब्रह्मलीन आचार्य **पं० त्रिभुवन नाथ द्विवेदी,** प्राचार्य, व्याकरणाचार्य पूज्य पिताश्री की पुण्यस्मृति में जन-कल्याण की भावना से तथा कर्मकाण्डी पुरोधाओं को सरलतम ढंग से कर्मकाण्ड सम्पादित कराने हेतु "**पाण्डित्य पूजा प्रकाश**" नामक ग्रन्थ की रचना की गयी है।

मैं इस कार्य के लिए अपने अग्रज आचार्यों, सुहृद्जनों और आत्मीय लोगों की अनुशंसा और प्रशंसा करना चाहता हूँ, जिन्होंने इस कार्य में उत्पन्न होनेवाली समस्याओं से सम्बन्धित उपयोगी ग्रन्थों को प्राप्त कराकर एवं उचित सुझाव देकर

सहयोग दिया है। **पं० उमादत्त ओझा, पं० दिनेश त्रिपाठी, पं० कमलाकान्त द्विवेदी, पं० ओम प्रकाश द्विवेदी, पं० शिवसागर शुक्ला, पं० विनोद तिवारी, पं० मनोज पाण्डेय, पं० मीनेश द्विवेदी, पं० लोकेश द्विवेदी, पं० विनोद शुक्ला एवं श्री आश्विन श्रोफ, श्रीमती उषा श्रोफ, श्री कैलाश मालपन्नी, श्री श्रीरामकपुर, श्री यतीन तेलंग, श्री हेमन्त भाई कापडीया** की विशेष प्रशंसा करना चाहता हूँ। इन्हीं महानुभावों और सुहृज्जनों की प्रेरणा और उत्साहवर्धन का ही यह परिणाम है, जिससे यह कार्य सम्पन्न हो सका है। आशा है सभी विद्वज्जन तथा संस्कृत पाठक इसका अधिकाधिक लाभ उठाते हुए यदि ग्रन्थ में कहीं कुछ त्रुटियाँ भूलवश रह गयी हों तो उसे क्षमा करने का कष्ट करेंगे।

अन्त में भगवती गायत्री एवं शिवशक्ति का सान्निध्य मानकर साकेतवासी पूज्य पिता आचार्य **पं० त्रिभुवन नाथ द्विवेदी** के पूज्यचरणों में प्रणाम करते हुए सभी भक्तों एवं विद्वतजनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

विदुषामनुचरः

आचार्य पं० अखिलेश द्विवेदी

जौनपुरजनपदान्तर्गत-भटौली-दुबान-ग्रामवास्तव्यः

जीवन-परिचय

जीवन एक यात्रा है। जन्म यात्रा का प्रारम्भ, तो मृत्यु गन्तव्य है। कुटुम्ब सह-यात्री एवं कुटुम्ब की व्यापकता ''**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' से होती है।

'अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'॥

महान् पुरुष कुशल अभिनेता की भाँति संसाररूपी रंगमंच पर अभिनय करते हुए यशरूपी सौरभ से सबको आमोदित करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहते हैं। आचार्य **पं० त्रिभुवन नाथ द्विवेदी जी** का जन्म ग्राम : भटौलीदुबान, (सुजानगंज) सुल्तानपुर, जौनपुर में 6 दिसम्बर, 1933 को जन्म हुआ था। पंडित जी की प्रारम्भिक शिक्षा सुजानगंज से प्रारम्भ होकर काशी नगरी में वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई। ज्योतिष एवं व्याकरण शास्त्र में आचार्य की उपाधि प्राप्त कर आपने अध्यापन का कार्य संस्कृत महाविद्यालय, सुजानगंज से प्रारम्भ किया। भारतीय विद्याभवन, बम्बई में आयोजित संस्कृत विद्वानों के शास्त्रार्थ में आप भी आमन्त्रित थे। शास्त्र चर्चा में उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। आपने संस्कृत विद्या और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु राष्ट्रीय संस्कृत महाविद्यालय, माटुंगा, बम्बई में स्थापना की। आज इस महाविद्यालय से अध्ययन पूरा करके निकले हजारों छात्र भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार देश तथा विदेश में कर रहे हैं। आपकी विद्वत्ता से भारत की भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा मस्कट के सुल्तान भी प्रभावित थे। ज्योतिष शास्त्र पर गहन अध्ययन ''**स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते**'' की कहावत को उन्होंने चरितार्थ किया। आपने अमेरिका जैसे देश में भी ज्योतिष विद्या का चमत्कार दिखाते हुए यह सिद्ध किया कि—

उत्तमस्तु जलस्त्रावः मध्यमं भूमिस्पर्शनम्।

अधमं तु रोदनं ज्ञेयं संदेशेन त्वधमाधमः॥

अर्थात् इष्टकाल कुण्डली का मेरुदण्ड होता है, यदि इष्टकाल शुद्ध है तो कुण्डली सार्थक होती है अन्यथा असार्थक। इससे विपरीत फलादेश प्राप्त होता है। पंडित जी ने गीता और माँ गायत्री को अपना अस्त्र बनाते हुए नाना प्रकार के यज्ञों से दैवीय शक्ति भी प्राप्त की।

पं० मदनमोहन मालवीय की तरह वह एक कर्मयोगी थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु बम्बई में संस्कृत विद्यालय तथा जौनपुर जनपदान्तर्गत भटौलीदुबान, (सुजानगंज) सुल्तानपुर, जौनपुर में निःशुल्क राजकली महादेव गुरुकुल हाईस्कूल विद्यालय एवं नारी शिक्षा के कल्याणार्थ कन्या विद्यालय की भी स्थापना की।

पंडित जी जो कुछ संग्रह करते थे उसे त्याग, तपस्या, दान, निर्धन छात्रों की शिक्षा, वस्त्र आदि में व्यय किया करते थे। **'आदानं हि विसर्गाय सतां वरिमुचामिव।'** पंडित जी अर्थ के पीछे नहीं भागते थे, अर्थ स्वयं ही उनके पीछे भागता था, कहा भी गया है—**''लौकिकानां हि साधूनां वागर्थमनुधारति। ऋषीणां पुनराधानमर्थः वाचमनुधावति॥''** नासिक एवं त्रिवेणी में प्रतिवर्ष कैम्प लगवाना तथा तमाम श्रद्धालुओं के लिए आवास, भोजन, दवा आदि की व्यवस्था करना तथा नाना प्रकार के यज्ञ, प्रवचन, हवन आदि कर्मों से प्राणियों हेतु अनेक प्रकार से सुख की कामना करना आपका मुख्य कर्त्तव्य था।

ज्योतिष शास्त्र पर पंडित जी का गहन अध्ययन एवं अटूट विश्वास होने के कारण अपनी मृत्यु समयपूर्व निश्चित कर देना आश्चर्यचकित ही था। मैं प्रतिदिन उनके आशीर्वाद एवं दर्शन हेतु जाया करता था, पंडित जी से बराबर मेरा शास्त्रार्थ किसी न किसी विषय पर बराबर होता रहता था। एक दिन जब वे तपस्या में घंटों लीन थे, तो मैं प्रतीक्षा में वहीं बैठा रहा। साधना पूर्ण होने के पश्चात् पंडित जी बोले—'बेटा अब समय आ गया है चलना चाहिए'। मैं उनके इस वाक्य पर अवाक् मन्त्रमुग्ध-सा उनके चेहरे की प्रतिभा को देखता रहा और पंडित जी इहलीला समाप्त हो गयी और वे सदैव के लिए अमर हो गये। उनकी पावन स्मृति हमारे ध्येय प्राप्ति की दिशा में प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी। पंडित जी आज हमारे बीच में नहीं है किन्तु उनकी तपस्या, साधना और एकमहान् कर्मयोगी के स्मारक के रूप में शास्त्रीय कृतियाँ और देववाणी संस्कृत के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित शिक्षण संस्थाएँ सुदीर्घ काल तक हमें उनका स्मरण कराती रहेंगी।

श्री निशिथ गुप्ता

विषयनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ क्र०

विषय	पृष्ठ क्र०

॥ ॐ गणेशाय नमः ॥

'मङ्गलाचरणम्'

विनायकं प्रणम्यादौ विष्णुं वाणीं शिवं रविम्।
पाण्डित्य प्रकाशः ग्रन्थोऽयमधुना लिख्यते मया॥
प्रातरूत्थानतो रात्रौ शयनावधि कर्म यत्।
नित्यं नैमित्तिकं काम्यं धर्म्यं तल्लिख्यते मया॥
सन्ध्यायाः ब्रह्मयज्ञस्य तर्पणस्य तथैव च।
पंचयज्ञस्य विधिवत्प्रयोगो वर्ण्यंते मया॥
प्रक्रियामिष्टसिद्ध्यर्थां देवदेवीसमर्चनम्।
शास्त्रोक्तविधिमालोक्य वर्णयामि प्रयत्नतः॥
पौत्रो महादेवस्य विद्वद्वर्यस्य धीमतः।
सूनुः त्रिभुवननाथस्य सद्विप्रस्य द्विवेदिनः॥
पाण्डित्य प्रकाश ग्रन्थोऽयम्अखिलेशेन विरच्यते॥

सन्ध्योपासना विधि

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

भस्म, चन्दन आदि का तिलक करे

मृत्तिका चन्दनं चैव भस्म तोयं चतुर्थकम्।
एभिर्द्रव्यैर्यथाकालमूर्ध्वपुण्ड्रं भवेत् सदा॥

आचमन् '**ॐ केशवाय नमः स्वाहा**', '**ॐ नारायणाय नमः स्वाहा**', '**ॐ माधवाय नमः स्वाहा**'—इन मन्त्रों के द्वारा आचमन करें। आचमन करने के पश्चात् 'ॐ गोविन्दाय नमः' हाथ धोले।

संकल्प करे—**हरिः ॐ तत्सदद्यैतस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणेअमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा वर्मा गुप्त अहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातः (सायं अथवा मध्याह्न) संध्योपासनं करिष्ये।**

विनयोग पढ़े—**ऋतं चेति त्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भव वृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

आचमन करें—**ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।**

गायत्री-मन्त्र पढ़कर रक्षा के लिये अपने चारों ओर जल छिड़के।

विनियोग पढ़े—**ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा**

देवता, सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती-पंक्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्नि वायुसूर्य बृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, आपोज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्नि वायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

प्राणायाम का मन्त्र—**ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।**

प्रातः काल विनियोग—**सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्योदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

आचमन करे—**ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।**

मध्याह्न विनियोग—**आपः पुनन्त्विति नारायण ऋषिरनुष्टुपछन्दः आपः पृथिवी ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

आचमन करे—**ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहँ स्वाहा॥**

सायंकाल विनियोग—**अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

आचमन करे—**ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणा शिश्ना अहनस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहमापोऽमृयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।**

विनियोग को पढ़ें—**आपो हिष्ठेति त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।**

मार्जन-मन्त्रः—**ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः। ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ॐ महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयतेह नः। ॐ उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपो जनयथा च नः।**

विनियोग करे—**द्रुपदादिवेत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽनुष्टुप्छन्द आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः।**

जल सिर पर छिड़के—**ॐ द्रुपदादिवमुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव पूतं पवित्रेणे वाज्यमापः शन्धन्तु मैनसः।**

विनियोग करे—**ऋतञ्चेति त्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तं दैवतमघमर्षणे विनियोगः।**

अघमर्षण-मन्त्र—**ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्रणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।**

विनियोग करे—**अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

आचमन करे—**ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥**

विनियोग पाठमात्र—**ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापति-ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।**

अर्घ्यमंत्र—**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि**

धियो यो नः प्रचोदयात्। इस मन्त्र को पढ़कर **'ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय इदमर्घ्यं दत्तं न मम'** ऐसा कहकर प्रातः काल अर्घ्य दे।

विनियोग करे—**उद्वयमिति प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, चित्रमिति कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङथर्वण ऋषिरेकाधिका ब्राह्मी त्रिष्टुपछन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।**

पाठ करना—**ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवता सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।**

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष॰ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं॰शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

विनियोग करे—**तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्यजुस्त्रिष्टुबृगुष्णिहौ छन्दसी सविता देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।**

गायत्री देवी का आह्वान करे—**ॐ तेजो ऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥**

विनियोग करे—**गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्-महाड्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।**

गायत्री को प्रणाम करे—**ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।**

विनियोग करे—**ॐकारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णि-गनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः। नीचे लिखे गायत्री-मन्त्र का कम-से-कम १ माला जप करें। मन्त्र इस प्रकार है—ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।**

विनियोग करे—**विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः।**

सूर्य देव की प्रदक्षिणा करे—**ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।**

विनियोग करे—**ॐ देवा गतुविद इति मनसस्पतिर्ऋषि-र्विराऽनुष्टुप्छन्दो वातो देवता जप निवेदने विनियोगः। ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः।**

अर्पण करे—**अनेन यथाशक्ति कृतेन गायत्रीजपाख्येन कर्मणा भगवान् सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम।**

विनियोग करे—**उत्तमे शिखरे इति वामदेव ऋषिरनुष्टुछन्दः गायत्री देवता गायत्री विसर्जने विनियोगः।**

उत्तमे शिखरे इति वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्द गायत्री देवता गायत्री विसर्जेने विनियोगः।

मंत्र पढ़े—**ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।**

मन्त्र को पढ़कर गायत्री देवी का विसर्जन करे और संध्योपासनकर्म परमेश्वरको समर्पित करे—अनेन सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

भगवान् का स्मरण करें

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥

॥ ॐ विष्णुस्मरणात्परिपूर्णतास्तु॥

॥ इति॥

दशविधस्नानम्

सङ्कल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे अमुकनामसंवत्सरे तथा च अमुके श्री विक्रमवर्षे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-पुण्यफलप्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्म प्रभृति अद्ययावत् ज्ञानाज्ञानकामा कामसकृदसकृत्कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्ट भुक्ताभुक्तपीता-पीतसकलपातकातिपातकोपपातकसंकरीकरण-मलिनीकरणा पात्रीकरणजतिभ्रंशकरण प्रकीर्णपातकनां मध्ये सम्भावितपापानां निरासार्थं पर्षदुपदिष्टं षडब्दप्रायश्चित्तममुकप्रत्यान्मायद्वारा अथवा अशीत्यधिकशत गोनिष्क्रय भूतयथाशक्तिरजतप्रत्यान्मायद्वारा प्राच्योदीच्यांग-सहितं त्वचा आचरितव्यं तेन तव शुद्धिर्भविष्यति।

श्लोक

तीर्थे पर्वण्यनुष्ठाने सर्वपातकनाशनम्।
भस्मादि विविधैर्द्रव्यैः स्नानं दशविधं चरेत्॥
यस्मिन् कस्मिन्ननुष्ठाने वाह्यान्तरविशुद्धये।
समग्रफलप्राप्त्यर्थं स्नानं दशविधं स्मृतम्॥

१. भस्मस्नानम्

ॐ अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म स्थलममिति भस्म व्योमेति भस्म, सर्व ँ ह वा इदं भस्म, मन एतानि यक्षू ँ षि भस्मानि। ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः॥

यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादिसञ्चयम्।
तथा मे दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम्॥

२. मृत्तिकास्नानाम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्क्रमे त्रेधानिदधेपदम्।
समृढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा॥
अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्ष मां त्वं पदे पदे॥
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥
मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्यपेनाभिवन्दिता।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्व प्रतिष्ठितम्॥

३. गोमयस्नानम्

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।

गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमङ्गला।
स्नानार्थं संस्कृता देवी पापं मे हर गोमय॥
अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्॥
यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमयम्।

४. पञ्चगव्यस्नानम्

सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमिᳬसर्व्वतस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः समन्वितम्।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम्॥

५. गोरजस्नानम्

आयङ्गौ पृश्निरक्क्रमीदसदन्नमातरम्पुरः। पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः।
गवां खुरेण निर्द्धूतं यद्रेणुर्गगने गतम्।
शिरसा तेन संल्लेपो महापातकनाशनम्॥

६. धान्यस्नानम्

ॐ धान्नयमसिधिनुहिदेवान्प्राणा यत्त्वोदानायत्त्वाव्व्यानायत्त्वा। दीर्ग्घामनुप्प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृब्भ्णात्त्व च्छिद्रेणपाणिनाचक्क्षुषेत्त्वामहीनाम्पयोसि।

धान्यौषधिर्मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु॥

७. फलस्नानम्

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति-प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वᳬहसः॥

वनस्पतिरसो दिव्यः फलपुष्पवृतः सदा।
तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनन्तकम्॥

८. सर्वौषधिस्नानम्

ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेनसहराज्ञा।
यस्मैकृणोतिब्राह्मणस्त ७७ राजन्पारयामसि।
औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः।
दूर्वासर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम्॥

९. कुशोदकस्नानम्

ॐ देवस्यत्त्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम्।
कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः।
कुशाग्रे शङ्करो देवस्तेन नश्यतु पातकम्॥

१०. हिरण्यस्नानम्

ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्न मृतम्मर्त्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन्।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

उपादेयता

देवपूजा, यज्ञ, श्रीमद्भागवत सप्ताह, ज्ञान-यज्ञ, ग्रहयाग, रुद्रयाग, विष्णुयाग, शतचण्डी, सहस्त्रचण्डी, वास्तु-शान्ति, देवप्रतिष्ठा आदि विशिष्ट आयोजनों के पूर्व दशविध स्नान का विधान है। इससे पूर्णतः वाह्यगात्र की शुद्धि होती है। दैनिक संध्या आदि में इसकी आवश्यकता नहीं है।

॥ ॐ दशविधस्नानम्पूर्णतास्तु ॥

॥ इति ॥

तर्पण-विधि

(देवर्षिमनुष्यपितृतर्पण-विधि)

पूर्वाभिमुख बैठकर। आचमन संध्योपासन एवं नित्यहोम करने के पश्चात् (पैंती) धारण करे। फिर हाथ में त्रिकुश, यव, अक्षत जल लेकर संकल्प पढ़े—

ॐ विष्णवे नमः ३। हरिः ॐ तत्सदद्यैतस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशेकलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुक संवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः) अहं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणंकरिष्ये।

एक ताँबे अथवा चाँदी के पात्र में श्वेत चन्दन, चावल, सुगन्धित पुष्प, जल और तुलसीदल रखे, हाथ से उसे ढँक ले और मन्त्र पढ़ते हुए देवताओं का आवाहन करें।

ॐ विश्वेदेवास आगत शृणुता म इमꣳहवम्। एदं बर्हिर्निषीदत॥ विश्वेदेवाः शृणुतेमꣳहवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यविष्ठ ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्॥

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते॥

इस प्रकार आवाहन कर कुशों द्वारा दायें हाथ की समस्त अङ्गुलियों के अग्रभाग अर्थात् देवतीर्थ से ब्रह्मादि देवताओं के लिये पूर्वोक्त पात्र में से एक-एक अञ्जलि चावल मिश्रित जल लेकर दूसरे पात्र में गिरावे।

देवतर्पण

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ

गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्।

ऋषितर्पण

इसी प्रकार मरीचि आदि ऋषियों को एक-एक अञ्जलि जल दे—

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्यमनुष्यतर्पण

इसके बाद जनेऊ को माला की भाँति गले में धारणकर (निवीती हो) कुशों को दायें हाथ की कनिष्ठिका के मूल-भाग से उत्तराभिमुख होकर दिव्यमनुष्यों के लिये दो-दो अञ्जलि यव सहित जल अर्पण करे—

ॐ सनकस्तृप्यताम्॥ २॥ ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्॥ २॥ ॐ सनातनस्तृप्यताम्॥ २॥ ॐ कपिलस्तृप्यताम्॥ २॥ ॐ आसुरिस्तृ-प्यताम्॥ २॥ ॐ वोढुस्तृप्यताम्॥ २॥ ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्॥ २॥

दिव्यपितृतर्पण

तत्पश्चात् कुशों को अँगूठे और तर्जनी के बीच में रखे और स्वयं दक्षिणाभिमुख होकर अपसव्य-भाव से (जनेऊ को दाये कंधे पर रखकर) जल में काला तिल मिलाकर तीन-तीन अञ्जलि जल दे—

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा॥ ३॥

ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जल तस्मै स्वधा॥ ३॥

ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा॥ ३॥

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधाः नमः॥ ३॥

ॐ अनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा॥ ३॥

ॐ अर्यमातृप्यताम इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा॥ ३॥

ॐ सोमपाः पिरस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा॥ ३॥

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा॥ ३॥

यमतर्पण

ॐ यमाय नमः॥ ३॥ ॐ धर्मराजाय नमः॥ ३॥ ॐ मृत्यवे नमः॥ ३॥ ॐ अन्तकाय नमः॥ ३॥ ॐ वैवस्वताय नमः॥ ३॥ ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः॥ ३॥ ॐ औदुम्बराय नमः॥ ३॥ ॐ दध्नाय नमः॥ ३॥ ॐ नीलाय नमः॥ ३॥ ॐ परमेष्ठिने नमः॥ ३॥ ॐ वृकोदराय नमः॥ ३॥ ॐ चित्राय नमः॥ ३॥ ॐ चित्रगुप्ताय नमः॥ ३॥

मनुष्यपितृतर्पण

पितरों का आवाहन करें—

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आवाह पितृन्हविष अत्तवे॥
आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

तदनन्तर अपने पितृगणों का नाम-गोत्र आदि उच्चारण करते हुए प्रत्येक के लिये पूर्वोक्त विधि से ही तीन-तीन अञ्जलि तिल सहित जल दें।

अमुक गोत्रः अस्मपिता (पिता) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह; (दादा) अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामह; (परदादा) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अमुक गोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी दा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अमुकगोत्रा आस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अमुक गोत्रा अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली मा) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥

इसके बाद नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए पितृतीर्थ से जल गिराते रहे—

ॐ उदिरतामवरऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुवरवृका ऽऋृतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥
ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वाऽअथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषांवयं ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥
ॐ आयन्तु नः पितरः सौम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेवन्त्वस्मान्॥
ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्।
स्वधास्थ तर्पयत् मे पितॄन्॥

ॐ पितृभ्य स्वधायिभ्य स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।

ॐ ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्मयां २ ॥ उ च न प्रविद्म त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञꣳसुकृतं जुषस्व।

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ मधु । मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

फिर नीचे लिखे मन्त्र का पाठ करे

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पिरतः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त।

द्वितीयगोत्रतर्पण

इसके बाद मातामह आदि को तीन-तीन बार तिल सहित जल दे—

अमुकगोत्रः अस्मत्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनामा) अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ ३॥

पत्न्यादितर्पण

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ १॥ अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै

स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ १॥ अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी (बुआ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ १॥ अमुक गोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ १॥ अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ १॥ अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहिन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ १॥ अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः (श्वशुर) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ २॥ अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥ अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥

इसके बाद सव्य होकर जल गिरावे—

ॐ देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः॥

जलेचरा भूनिलया वाय्वाधारश्च जन्तवः।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः॥
ॐ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया॥
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकाङ्क्षिणः॥
ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्॥
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा॥

वस्त्र-निष्पीडन

वस्त्र को चार आवृत्ति लपेटकर जल में डुबावे और अपसव्यभाव से अपने बायें भाग में भूमि पर उस वस्त्र को निचोड़े। (यदि घर में किसी मृत पुरुष का वार्षिक श्राद्ध आदि कर्म हो तो वस्त्र-निष्पीडन नहीं करना चाहिये।)

ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

भीष्म-तर्पण

दक्षिणाभिमुख हो जनेऊ अपसव्य करके भीष्म के लिये तिलमिश्रित जल दे।

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृति प्रवराय च।
गङ्गापुत्राय भीष्माय प्रदास्येऽहं तिलोदकम्॥
अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे।

अर्घ्यदान

शुद्ध जल से आचमन करके प्राणायाम करें। एक पात्र में षड्दल-कमल बनावे और उसमें श्वेत चन्दन, अक्षत, पुष्प तथा तुलसीदल ले। दूसरे पात्र में चन्दन से षड्दल-कमल बनाकर उसमें पूर्वादि दिशा के क्रम से ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन-पूजन करे।

षड्दल-कमल
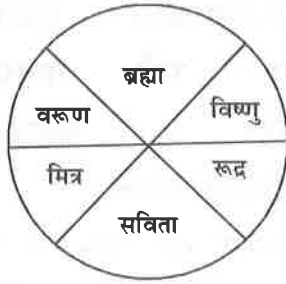
ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं पूजयामि॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाᳪसुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः। विष्णुं पूजयामि॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यांमुत ते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं पूजयामि॥

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ सवित्रे नमः। सवितारं पूजयामि॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवोदेवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ ॐ मित्राय नमः। मित्रं पूजयामि॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्तुराचके॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणं पूजयामि॥

सूर्योपस्थान

ॐ अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनाँ २ अनु भ्राजन्तो अग्नयोयथा। उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय। सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहम्मनुष्येषु भूयासम् हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वारसदृतसद्व्योम-सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

इसके पश्चात् दिग्देवताओं को पूर्वादि क्रम से नमस्कार करे—

'ॐ इन्द्राय नमः' प्राच्यै। 'ॐ अग्नेय नमः' आग्नेय्यै॥ 'ॐ यमाय नमः' दक्षिणायै। 'ॐ नैर्ऋतये नमः' नैर्ऋत्यै॥ 'ॐ वरुणाय नमः' पश्चिमायै॥ 'ॐ वायवे नमः' वायव्यै॥ 'ॐ सोमाय नमः' उदीच्यै॥ 'ॐ ईशानाय नमः' ऐशान्यै॥ 'ॐ ब्रह्मणे नमः' ऊर्ध्वायै॥ 'ॐ अनन्ताय नमः' अधरायै॥

जल में नमस्कार करे—

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्योनमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

मुखमार्जन

शुद्ध जल से मुँह धो डाले—

ॐ संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सꣳशिवेन त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्।

विसर्जन

देवताओं का विसर्जन करे—

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः॥

समर्पण

वाक्य पढ़कर तर्पण-कर्म भगवान् को समर्पित करे—

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्तपितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु। ॐ विष्णवे नमः।

॥ ॐ इति तर्पणविधानामविधी पूर्णतास्तु॥

पञ्चबलि के मन्त्र

१. गोबलि

सव्यभाव से गौओं के लिए बलि अर्पण करें—

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः॥
इदं गोभ्यो न मम।

२. स्वानबलि

माला की भाँति यज्ञोपवीत करके कुत्तों के लिये ग्रास दे—

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ॥
इदं श्वभ्यां न मम।

३. काकबलि

यज्ञोपवीतको अपसव्य करके कौओं के लिये भूमिपर ग्रास दे—

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्॥
इदं वायसेभ्यो न मम।

४. देवादिबलि

सव्यभाव से देवता आदि के लिये अन्न अर्पण करें—

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घा। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति प्रदत्तम्॥

इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

५. पिपीलकादिबलि

इसी प्रकार चींटी आदि के लिये अन्न दे—

ॐ पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु॥ इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

॥ ॐ पञ्चबलिके मन्त्र पूर्णतास्तु ॥

॥ इति ॥

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

हरिः ॐ॥ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः त्वं

कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादीन् पूर्वमुच्चार्य वर्णादीन तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्॥ १ ॥ तारेण रुद्रम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। रदञ्च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजिम्॥ भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतञ्च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये, नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः ॥

आवाहनम्

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशङ्गुलम्॥

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव॥
यावत्पूजा करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥

आसनम्-(पुष्प अर्पण करें)

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वं य्यभ्दूतंयच्च भाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

पाद्यम्-(जल अर्पण करें)

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्यविश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्य संयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

अर्घ्यम्-(गन्ध, अक्षत, पुष्प युक्त जल अर्पण करें)

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्क्रा मत्साशनानशनेऽअभि॥
अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
करूणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

आचमनम्-(जल अर्पण करे)

ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽअधिपूरूषः।
स जातो ऽ अत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्त गृहीत्वा परमेश्वर॥

स्नानम्-(जल से स्नान करायें)

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्क्रे वायव्यानारण्णया ग्राम्याश्च ये॥
गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरूष्व मे॥

पयः स्नानम्-(दूध से स्नान करायें)

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
पयस्तुभ्यं प्रयच्छामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दधिस्नानम्—(दधि से स्नान करायें)

ॐ दधिक्क्राव्वणो ऽअकारिषं जिष्णोऽरश्श्वस्य व्वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्त्प्रण ऽ आयूँषि तारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

घृतस्नानम्-(घृत से स्नान करायें)

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमस्य धाम।
अनुष्ष्वधमावह मादयस्व स्वाहाघृतं व्वृषभ वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मधुस्नानम्-(मधु से स्नान करायें)

ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधु क्क्षरन्ति सिन्धवः माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधमत्त्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ २॥ अस्तुसूर्य्यः। माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः।

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्करास्नानम्-(शर्करा से स्नान करायें)

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्य्येसन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्ययो रसस्तम्वो गृह्ण्णाम्म्युत्त ममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्ट्ंगृहण्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्थानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पञ्चामृतस्नानम्-(पञ्चामृत से स्नान करायें)

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यान्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे ऽभवत्सरित्॥
पयोदधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गन्धोदकस्नानम्-(गन्ध से स्नान करायें)

ॐ गन्धर्व्वत्वाव्विश्वावसुः परिदधातुव्विश्वस्या रिष्ट्यैयजमानस्यपरिधि-रस्यग्निरिडऽईडितः ॥
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसंयुतम्।
चन्दनं च मया दत्तं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्॥

शुद्धोदकस्नानम्-(शुद्ध जल से स्नान करायें)

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षो-रूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।
स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।
तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाण परमेश्वर॥

वस्त्रम्-(वस्त्र अर्पण करें)

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ग्नेव्विश्वरूपꣳसंव्ययस्वव्विभावसो ॥
सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

यज्ञोपवीतम्-(जनेऊ अर्पण करें)

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजायतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

चन्दनम्-(चन्दन चढावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ गृहाण परमेश्वर॥

अक्षतान्-(अक्षत चढ़ायें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया ऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रानविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभनाः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

पुष्पाणि-(पुष्प चढ़ायें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्व्वीरूधः पारयिष्ष्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूर्वाङ्कुरान्-(दूर्वा चढ़ायें)

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ति परुषः परूषस्प्परि।
एवा नो दूर्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।

दूर्वो ह्यमृतसम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे।
शतं पातक-संहन्त्री शतमायुष्यवर्धिनी॥

विष्णवादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा।
क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव॥

विल्वपत्रम्-(विल्वपत्र चढ़ायें)

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च॥

त्रिशाखैर्विल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभै।
तव पूजा करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥

कुङ्कुमम्-(रोली चढ़ायें)

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामनाकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर॥

सिन्दूरम्-(सिन्दूर चढायें)

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धाराऽअरुषो नव्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सौभाग्यद्रव्याणि-(अबीर, गुलाल चढ़ायें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान पुमान पुमांꣳसं परि पातु विश्वतः॥

अबीरं च गुलालञ्च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देव! अतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

सुगन्धितद्रव्या-(इत्र, अतर चढ़ायें)

ॐ अꣳशुना ते अंꣳशुः पृच्यतां परूषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः॥

चम्पकाशोकवकुलमालती मोगरादिभिः।
वासितं स्निग्धताहेतु तैलं चारु प्रगृह्यताम्॥

12 **धूपम्**-(धूप अर्पण करें)

ॐ धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्वतँय्योस्मान् धूर्वति तन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितम ᳪ सस्निन्तमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद्भू तो गन्धाढ्यो गन्ध-उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रति गृह्यताम्॥

13 **दीपम्**-(दीपक दिखायें)

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चोज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चोज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योति स्वाहा।

साज्यञ्च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥

14 **नैवेद्यम्**-(प्रसाद अर्पण करें)

**ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षᳪशीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ऽअकल्पयन्॥**

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

धेनु, मुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शतेत्। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। आचमनीयं समर्पयामि।

ऋतुफलम्-(फल चढ़ावें)

**ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वᳪहसः॥**

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिभवेज्जन्मनिजन्मनि॥

15 **ताम्बूलम्**-(पान, सुपारी अर्पण करें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

16 **दक्षिणाम्**-(दक्षिणा अर्पण करें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

कर्पूरारार्तिक्यम्-(~~पुष्पाञ्जलि चढ़ायें~~) आरती करें

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्प्रायिधामभिः।
दिवः सदाꣳसि बृह तीव्वितिष्ठस आत्त्वेषं व्वर्त्तते नमः॥

ॐ अग्निर्द्देवता व्वातोदेवता सूर्य्योदेवता चन्द्रमादेवता व्वसवोदेवता रुद्रादेवतादित्त्यादेवता मरुतोदेवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवता व्वरुणोदेवता।

पुष्पाञ्जलि-(पुष्पाञ्जलि चढ़ायें)

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे न्कामान् कामकामाय मह्यं। कामेश्वरोवैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः

सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरूत्तस्याऽवसन्गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति। ॐ विश्वतश्चचक्षुरुत विश्वतो मुखोविश्वतो बाहुरूतविश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यांधमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजन- यन्देवऽएकः॥ ॐ नाना-सुगन्धि-पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषांँसहस्त्रयोजने वधन्वानितन्मसि॥

विशेषार्घ

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षकः।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वंरदेहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥

प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

मन्त्रः अनेन यथाशक्ति कृत्तेन पूजनेन अमुक देवता प्रीयतां न मम्।

पूजाविधानम्

पवित्रकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचम्य

ॐ केशवाय नमः ॐ माधवाय नमः ॐ नारायणाय नमः। तीन बार आचमन करे। **ॐ हृषीकेशाय नमः** हाथ धो लें। '**प्राणायम**' करे।

पवित्रीधारणम्

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्त्पुनाम्यच्छिद्रेण-पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्त्कामः पूनेतच्छकेयम्॥

यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा।
त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा मम पवित्रकम्॥

यज्ञोपवीत

ॐ यज्ञोपवीतं परम पवित्रं प्रजा पतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्य मग्रंय प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः॥
तंय्यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्ञातमग्रतः।
तेनदेवाऽ अयजन्तसाध्याऽ ऋषयश्चये॥

शिखाबन्धन

ॐ मानस्तोके तनये मानऽ आयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषुरीरिषः।
मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्यधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरूष्व मे॥

मङ्गलतिलकम्

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
ॐ आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धमकामार्थसिद्धये॥

रक्षाबन्धनम्

ॐ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल॥

पृथ्वीपूजनम्

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

भद्रसूक्तं पठेत

ॐ आ नो भद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नाप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयता न्देवानाꣳरातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा त्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे व्वयम्भग म्मित्रमिदितन्दक्ष-मस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥ तन्नोव्वातो मयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो

अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनोदेवाऽ अवसागमन्निह॥ ७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाममदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्त्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८॥ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता स पुत्रः। व्विश्वे देवा अदितिःपञ्चजना अदितिर्जातम-दितिर्जनित्वम्॥ १०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिंवनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥ ११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयंडकुरू। शन्नः कुरू प्प्रजाक्योऽभयन्नः पशुब्भ्यः॥ १२॥ सुशान्तिर्भवतु-श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। इष्टदेवताभ्योनमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृ-चरणकमलेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। एतत् कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तुते॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कार्यार्थ सिद्धये॥

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करे।

सङ्कल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागे श्रीमल्लवणाब्लेरूत्तरे तीरे अमुके श्रीशालिवानशके अस्मिन्वर्तमाने अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ

अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेशु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषण विशिष्टयां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम् ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थम् प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकलमन ईप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके सभायांराजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थम् इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं मम जन्मराशेंरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरूद्धचतुर्थाष्टमद्वादशस्था नस्थितक्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा तृतीयै कादशस्थान स्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थम् आदित्यादि-नवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थम् इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नतासिद्ध्यर्थम् आधिदैवि-काऽऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिकत्रिविधतापोशमनार्थम् धर्मार्थकाम-मोक्षफला-वाप्त्यर्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहना-दिषोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च अमुक देवस्य पूजनमहं करिष्ये। तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं शङ्खघण्टार्चनं च करिष्ये॥

दिगरक्षणम्

(वामहस्ते सर्षपान् आदाय दक्षिणहस्तेन आच्छाद्य) **ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवी-मिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्टयो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखाने दमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्न्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यांकिरामि। रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वोवलगहनोऽवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वोवलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्था॥ रक्षसां**

भागोऽसि निरस्त७रक्ष इदमहं ७रक्षोऽभि तिष्ठामीदमह७रक्षाऽवे बाध इदमह७रक्षौऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रौर्णुवाथां वायो वे स्तोकाना मग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्॥ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानंत्यक्त्वातु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः। स्थानादस्माद् व्रजन्त्यन्यत्स्वीकरोमि भुवंत्विमाम्॥ भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन। ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यावत्कर्म करोम्यहम्। (सर्षपान् सर्वदिक्षु विकीर्य वामपादेन भूमि त्रिवारं ताडयेत्। नेत्रोदकस्पर्शः।) पूर्वे रक्षतु वाराह .... इति मन्त्रै।

भैरवनमस्कारः

ॐ योभूतानामधिपतिर्यस्मिंल्लोका अधिश्रिताः। यऽईशे महतो महाँस्तेन गृहणामि त्वामहम् मयि गृहणामि त्वामहम्॥

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥

हनुमन्नमस्कारः

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श७सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२ अवन्तु देवाः।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनां अग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणांधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।

कर्मपात्र पूजनम्

(स्ववामभागे अक्षतपुंजोपरि कलशं संस्थाप्य वरुणंआवाहयेत्) **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहैडमानो वरुणेह बोध्युरुश७स मान आयुः प्रमोषीः।** सर्वे समुद्राः

सरित: तीर्थानि जलदानदा:। आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम॥ ॐ भूर्भुव: स्व: अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि। स्थापयामि।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ।

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता। प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मंडले दैवतै: सह। वरुण सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। **पूजनम्**—पूर्वे ऋग्वेदाय नम:। दक्षिणे यजुर्वेदाय नम:। पश्चिमे सामवेदाय नम:। उत्तरे अथर्ववेदाय नम:। मध्येऽपांपतये वरुणाय नम:। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ततोऽनामिकया कलशं स्पृष्टवा कलशजलाभिमंत्रणम्। **कलशं प्रार्थयेत्**—कलशस्य मुखे विष्णु: कण्ठे रुद्र: समाश्रित:। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा: स्मृता:॥ १॥ कुक्षौ तु सागरा: सर्वे सप्तद्वीपा वसुंधरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद: सामवेदो ह्यथर्वण:॥ २॥ अङ्गैश्च सहिता: सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिता:। अत्र गायत्री सावित्री शान्ति: पुष्टिकरी तथा। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारका:॥ ३॥ गङ्गे च यमुनो चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरू॥ ४॥ ब्रह्मण्डोदरतीर्थानि करै: स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर:॥ ५॥ अङ्कुशमुद्रया सर्वाणि तीर्थन्यावाह्य धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य **'हुम्'** इति कवचेनावगुण्ठ्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य **"वं वरुणाय नम:"** इत्यनेनाष्टवारमभिमन्त्र्य तस्मादुदकादुदकं गृहीत्वा स्वात्मानं प्रोक्षयेत्। ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो व: शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहन:। उशतीरिव मातर:॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च न॥ **पूजासंभारप्रोक्षणम्**—ॐ युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षितास्थ। अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्यग्नीषोमाभ्यांत्वा जुष्टं प्रोक्षामि। दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वोऽशुद्धा: पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि॥ देव (देवी) पूजनकाले तु यानि यानीह वस्तूनि। वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै॥

दीपपूजनम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ भो दीप देव (देवी) रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत। यावत्पूजां करिष्यामि तावदत्र स्थिरो भव। ॐ भू० दीपस्थदेवतायै नमः गंधाक्षतपुष्पाणि सम० नम०।

सूर्यनमस्कारः

ॐ आ कृष्णेन०। ॐ अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ २ऽअनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा। उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय। सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्॥ ॐ यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् तं सर्ववेदं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्। ॐ भू० सूर्याय नमः गंधाक्षतपुष्पाणि०। सम० नम०

शंखपूजनम्

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्। उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चस एष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे। शंखं चंद्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणदैवतम् पृष्ठे प्राजापतिं विद्यादग्रे गंगासरस्वतीम्। त्रैलोक्य यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शंखे तिष्ठन्ति विप्रेंन्द्र तस्मात् शंखं प्रपूजयेत्। शंखस्थदेवतायै नमः—सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्णाणि समर्पयामि। नमस्करोमि।

घंटापूजनम्

ॐ सुपर्णोऽसि गुरूत्माँस्त्रिवत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गुरूत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत। आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम्। घंटानादं प्रकुर्वीत पश्चात् घंटां प्रपूजयेत्॥ घंटायै नमः। सर्वोपचारार्थे नमः।

॥ ॐ इति पूजाविधानम् पूर्णतास्तु ॥ गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० नमः

❧ ❧ ❧

कलशस्थापनम्

भूमिस्पर्श-(भूमि का स्पर्श करें)

ॐ भूरसि भूमिरस्यादितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीन्दृꣳह पृथिवीं मा हिंꣳसीः। ॐ मही द्यौः पृथिवी न न ऽइमं यज्ञम्मिक्षताम्। पिपृता न्नो भरीमभिः॥ विश्वाधारासि धरणी शेषनागोपरिस्थिता। उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।

धान्यप्रक्षेप-(पृथ्वी पर सप्तधान्य रखें)

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन पारयामसि॥

कलशस्थापनम्-(सप्तधान्य पर कलश रखें)

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरूधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्द्रयि॥

हेमरूप्यादिसंभूतं ताम्रजं सुदृढं नवम्।
कलशं धौतकल्माषं छिद्रव्रणविवर्जितम्॥

जलपूरणम्-(कलश में जल डालें)

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद॥

जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्मकम्।
बीजं सर्वोषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यम्॥

गन्धप्रक्षेप-(कलश में चन्दन छोड़ दें)

ॐ त्वां गंधर्वा० केशरागरू कङ्कोलघनसार समन्वितम्। मृगनाभियुतं गन्धकलशे प्रक्षिपाम्यहम्।

धान्यप्रक्षेप-(कलश में सप्तधान्य छोड़ दें)

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वो दानयत्त्वा व्यानायत्त्वा। दीर्ग्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्क्षुषेत्त्वा महीनां पयोऽसि॥ धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्। निर्मिता ब्रह्मणा पूर्वं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्॥

सर्वौषधीप्रक्षेप-(कलश में सर्वौषधी डालें)

ॐ याऽओषधी सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः। तासामसि त्वमुत्तमारं कायाम शहृदे॥ औषधयः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः। दूर्वासर्षपसंयुक्ता कलशे प्रक्षिपाम्यहम्॥

दूर्वाप्रक्षेप-(कलश में दूर्वा छोड़ें)

ॐ कांडात् कांडात्० दूर्वोह्यमृतसंपन्ने शतमूले शतांकुरे। शतं पातक संहन्त्री कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।

पंचपल्लवप्रक्षेप-(कलश में पञ्चपल्लव या आम का पत्ता रखें)

ॐ अश्वत्थे वोनिषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥ अश्वत्थोदुम्बर प्लक्ष चूतन्यग्रोधपल्लवाः। पंचैतान् पल्लवानस्मिन् कलशे प्रक्षिपाम्यहम्॥

सप्तमृद्प्रक्षेपः-(कलश में सप्तमृत्तिका या मिट्टी छोड़े)

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्क्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ अश्वस्थानाद् गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गभाद् ह्रदात् राजस्थानाच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्॥

फल प्रक्षेप-(कलश में पञ्चरत्न डालें)

ॐ याः फलिनी० पूगीफलमिदंदिव्यं पवित्रं पुण्यदं नृणाम्। हारकं पापपुंजानां कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।

पंचरत्नप्रक्षेप-(कलश में पञ्चरत्न डालें)

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे। कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्। एतानि पंचरत्नानि कलशे प्रक्षिपाम्यहम्॥

हिरण्यप्रक्षेप-(कलश में दक्षिणा डालें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवा हविषा विधेम॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजम् विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्॥

रक्तसूत्रवेष्टनम्-(कलश में लालवस्त्र या मौली लपेट दें)

ॐ सुजातो ज्योति० ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान् भवति जायमानः। तंधीरासःकवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसादेवयन्तः। सूत्रं कार्पाससंभूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। येन बद्धं जगत्सर्वं तेनेमं वेष्टयाम्यहम्॥

पूर्णपात्रस्थापनम्-(कलश पर पूर्णपात्र रखें)

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत। व्वस्नेव विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्ज॑ शतक्क्रतो। पिधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थ साधनम्। संपूर्णः कलशा येन पात्रं (श्रीफलं) तत्कलशोपरि॥

वरुणप्रार्थना

ॐ नमो नमोस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक। पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं संनिधो भव॥

यजमान घुटने टेककर कमल की कोंढ़ी की तरह अञ्जलि अपने दाहिने हाथ में जलपात्र (लोटे) को ले। उसे सिर से लगाकर ब्राह्मणों से अपनी दीर्घ आयु का आशीर्वाद माँगे—

यजमान— ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च। तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥

ब्राह्मण—अस्तु दीर्घमायुः। (तीन बार कहें।)

यजमान— ॐ त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥ तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण— पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु। (दो बार सिर से कलश का स्पर्श कर रख दें।)

यजमान— (ऐसा कहकर ब्राह्मणों के हाथों में जल दे।) **ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्। ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः॥ ॐ शिवा आपः सन्तु।**

ब्राह्मण— सन्तु शिवा आपः।

यजमान— (ब्राह्मण के हाथ में पुष्प दें) **लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे। सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे॥ सौमनस्यमस्तु।**

ब्राह्मण— 'अस्तु सौमनस्यम्'।

यजमान— अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्। यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

ब्राह्मण— 'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'।

इसी प्रकार आगे यजमान ब्राह्मणों के हाथों में चन्दन, अक्षत, पुष्प आदि देता जाय और ब्राह्मण इन्हें स्वीकार करते हुए यजमान की मङ्गलकामना करें।

यजमान— (चन्दन) **गन्धाः पान्तु। ब्राह्मण—सौमङ्गल्यं चास्तु। यजमान—**(अक्षत) **अक्षताः पान्तु। ब्राह्मण—आयुष्यमस्तु। यजमान—**(पुष्प) **पुष्पाणि पान्तु। ब्राह्मण—सौश्रियमस्तु। यजमान—**(सुपारी-पान) **सफलताम्बूलानि पान्तु। ब्राह्मण—ऐश्वर्यमस्तु। यजमान—**(दक्षिणा) **दक्षिणाः पान्तु। ब्राह्मण—बहुदेयं**

चास्तु। यजमान—(जल) **आपः पान्तु। ब्राह्मण—स्वर्चितमस्तु। यजमान**—(हाथ जोड़कर) **दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।**

ब्राह्मण— **'तथास्तु'**—ब्राह्मण कलश का छल छिड़ककर आशीर्वाद दें—**ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु।**

यजमान— (अक्षत लेकर) **यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः समाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिसम्मतं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण— **'वाच्यताम्'—मन्त्रों का पाठ करें—**

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत॥ सविता त्वा सवानाꣳसुवतामग्नि-र्गृहपतीनाꣳसोमा वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रूद्रः पशुभ्भो मित्रः सत्यो वरूणो धर्मपतीनाम्। न तद्रक्षाꣳनि पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणꣳहिरण्यꣳसदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः। उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रꣳशर्म महि श्रवः॥ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२इयक्षते।

यजमान— **व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुशमदमदयादान-विशिष्टानांसर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।**

ब्राह्मण— **समाहितमनसः स्मः।**

यजमान— **प्रसीदन्तु भवन्तः। ब्राह्मण—प्रसन्नाः स्मः।**

यजमान पहले से रखे गये दो सकोरों में से पहले सकोरे में आम के पल्लव या दूब से थोड़ा-थोड़ा जल कलश में डाले और ब्राह्मण बोलते जायँ—

पहले पात्र में—ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

दूसरे पात्र में—ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु।

पहले पात्र में—ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्र-ग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रह लग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरूद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरून्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषय-श्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वो इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

दूसरे पात्र में—ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः॥

पहले पात्र में—**ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा औषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पति शनैश्चराहुकेतुसोम-सहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।**

इसके बाद यजमान कलश को कलश के स्थान पर रखकर पहले पात्र में गिराये गये जल से मार्जन करे। इसके बाद इस जल को घर में चारों तरफ छिड़क दें। द्वितीय पात्र का जल घर से बाहर एकान्त स्थान में गिरा दें।

यजमान हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे—

यजमान— ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण— वाच्यताम्।

यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

यजमान— ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः मम सुकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण— ॐ पुण्याहम् (तीन बार उच्चारण करें)

ॐ पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मां॥

यजमान— पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुकर्मणः कल्याणंभवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण— ॐ कल्याणम्। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याᳩ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान— ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण— ॐ ऋद्ध्यताम्। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम।
दिवं पृथिव्या अध्याऽरूहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥

यजमान— ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याण वृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण— ॐ आयुष्मते स्वस्ति। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

यजमान— ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।

यजमान— भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण— ॐ अस्तु श्रीः। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुंमइषाण सर्वलोकं मऽइषाण॥

यजमान— ॐ मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

ब्राह्मण— ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥

यजमान— ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे॥
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि॥

ब्राह्मण— ॐ अस्तु श्रीः। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय।
पशूनाᳬरूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

यजमान— प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः॥

ब्राह्मण— ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पिता सावस्य पिता व्ययᳬस्याम पतयोरयीणाम्॥

यजमान— आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिते दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोगृहे।

एकलिङ्गे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम॥

ब्राह्मण— ॐ आयुष्मते स्वस्ति। (तीन बार उच्चारण करें।)

ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति बिन्दते वसु॥ ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु॥

यजमान— अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विविधरूपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्चपरिपूर्णोऽस्तु।

दक्षिणा संकल्प—

कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याह-वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य अहं दास्ये।

ब्राह्मण— ॐ स्वस्ति।

अभिषेक

पुण्याहवाचनोपरान्त कलश के जल से ब्राह्मण अभिषेक करे। अभिषेक के समय यजमान पत्नी बायीं तरफ बैठे।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ १॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ २॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥ ३॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहिमा॥ ४॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा

साम्राज्येनाभि षिञ्चाम्यसौ॥५॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि॥६॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चा-मीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि॥७॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥८॥ ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥९॥ ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄं : पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुतत्मना॥१०॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥११॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष७ँशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व७ँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥१२॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरू प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥१३॥ सुशान्तिर्भवतु। सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये॥१४॥ शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु॥

दक्षिणादान—ॐ अद्य..... कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

॥ ॐ अभिषेक पूर्णतास्तु॥

॥ इति॥

मण्डपपूजनम्

१. मध्यवेदीशानस्तम्भे ब्रह्माणं पूजयेत्—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् व्रिसीमतः सुरुचो व्वेन ऽ आवः। स वुध्न्या ऽउपमा ऽ अस्य व्विष्ठाः

सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॐ ऊद्ध्र्वऽऊषणऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता॥ ऊद्ध्र्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे। ॐ आयंगो पृश्निरक्रमीदसदन्मांतरं पुरः॥ पितरं प्रयन्त्स्वः॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु॥ शंनः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयन्नः पशुभ्यः॥

२. आग्नेयस्तम्भे विष्णु पूजयेत्—ॐ इदं व्विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥ २॥ ॐ उद्धर्व ऽऊषुणः०॥ ॐ आयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

३. नैऋत्यस्तम्भे शङ्करं पूजयेत्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः ॐ ऊद्धर्व ऽऊपुणः०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतो यतः०॥

४. वायव्यकोणस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत्—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार-मिन्द्रँ हवे हवे सुहवँशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामि शक्रं पुरूहूतमिन्द्रँस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॐ ऊद्धर्व ऊषुण०॥ ॐ आयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

५. बाह्येशानकोणस्तम्भे सूर्यं पूजयेत्—ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ उद्धर्व ऽऊपुणः०॥ ॐ आयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

६. ईशानपूर्वयोर्मध्ये गणेशं पूजयेत्—ॐ गणानां त्त्वा गणपतिँहवामहे प्रियाणां त्त्वां प्रियपतिँहवामहेनिधीनां त्त्वा निधिपतिँहवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्॥ ॐ ऊद्धर्व ऊषुणः०॥ ॐ आयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

७. पूर्वाग्नयोर्मध्ये यमं पूजयेत्—ॐ यमाय त्त्वा मखाय त्त्वा सूर्य्यस्य त्त्वा तपसे॥ देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः सँस्पृशस्पाहि॥ अर्च्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥ ७॥ ॐ ऊद्धर्व ऽऊषुण०॥ ॐ अयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

८. आग्नेयकोणे नागराजं पूजयेत्—ॐ नमोऽस्तु सर्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु॥ ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेभ्योनमः॥ ॐ उद्धर्व ऽ ऊषुण०॥ ॐ आयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

९. आग्नेयदक्षिणयोर्मध्ये स्कन्दं पूजयेत्—ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्स मुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहु ऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽअर्व्वन्॥६॥ ॐ ऊर्द्धव ऽ ऊषुणः०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतो यतः०॥

१०. दक्षिणनैर्ऋत्यकोणे वायु पूजयेत्—ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरा गहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥ ॐ उद्धर्व ऽ ऊषुण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतो यतः०॥

११. नैर्ऋत्ययोर्मध्ये सोमं पूजयेत्—ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा व्वाजस्य सङ्गथे॥ ॐ उद्धर्व ऽऊषुण०॥ ॐ आयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

१२. नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये वरूणं पूजयेत्—ॐ इमं मे व्वरुण श्श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ ॐ ऊर्ध्व ऽ ऊषुण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतो यतः०॥

१३. पश्चिमवायव्यान्तरालेऽष्टवसून् पूजयेत्—ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वा रूद्रेब्भ्यस्त्वा ऽऽदित्येब्भ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्या वताम्। व्यन्तु व्वयोक्तꣳरिहाणा मरुतां पृषतीर्ग्गच्छ व्वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह। चक्षुष्पा ऽ अग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि। ॐ उद्धर्व ऽ ऊषुण०॥ ॐ आयङ्गौ०॥ ॐ यतो यतः०॥

१४. वायव्ये धनदं पूजयेत्—ॐ सोमो धेनुꣳ सोमोऽअर्व्वन्तमाशुꣳ सोमो व्वीरं कर्म्मण्य ददाति। सादन्यं व्विदत्थ्यꣳसभेयं पितृश्श्रवणंय्यो ददाशदस्मै॥ ॐ ऊद्धर्व ऽ ऊषुण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतो यतः०॥

१५. उत्तरवायव्योरन्तराले गुरूं पूजयेत्—ॐ बृहस्पतये ऽ अति यदर्य्यो ऽ अर्हाद् द्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणंधेहि चित्रम्॥ ॐ ऊद्धर्व ऽऊषुण०॥ ॐ यतो यतः०॥

१६. उत्तरेशानयोर्मध्ये विश्वकर्माणम् पूजयेत्—ॐ व्विश्वकर्म्मन् हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृष्णोरवद्ध्यम्॥ तस्मै व्विशः

समनमन्त पूर्व्वीरय-मुग्रो व्विहव्यो यथासत्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽ ऊषुण:० ॥ ॐ आयङ्गौ:० ॥ ॐ यतो यत:० ॥

सतोरणद्वारपालदिक्पालपूजनम्

सतोरणद्वारपालपूजनम्—(**पूर्व ऋग्वेदज्ञस्य**) ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्॥ होतारं रत्नधातमम्॥ १॥ (**याम्ये यजुवेदज्ञस्य**) ॐ इषे त्त्वोर्ज्जे त्त्वा व्वायस्थ देवो व÷सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽ आप्यायद्ध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳसो द्ध्रुवा ऽ अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि॥ २॥ (**पश्चिमे सामवेदज्ञस्य**) ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये॥ निहोता सत्सि बर्हिषि॥ ३॥ (**उत्तरे अथर्ववेदज्ञस्य**) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये॥ शय्योरभिस्रवन्तु न:॥ ४॥

दिक्पालपूजनम्—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रं ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र:॥ १॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देवपायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते॥ २॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्म्माय स्वाहा धर्म्मे: पित्रे॥ ३॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेन-स्येत्यामन्विहितस्करस्य अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्य-मस्तु॥ ४॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि: अहेळमानो वरुणेह बोद्ध्युरुꣳसमानऽआयु: प्रमोषी:॥ ५॥ ॐ आ नो नियुद्धि: शतिनीभिरध्वर: सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभि: सदा न:॥ ६॥ ॐ वयꣳ ॐ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत: प्रजावन्त: सचेमहि॥ ७॥ ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्व-मवसे हूमहे वयं। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये॥ ८॥ ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषा: यश ꣳ सते स्तुवते धायि वज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवा:॥ ९॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा न: सर्मसप्रथा:॥ १०॥

विष्णु-प्रकरणम्

ॐ सशंख चक्रं सकिरीट कुण्डलं सपीतवस्त्रं सरशीरुहेक्षणम्।
सहार वक्षस्थल कौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥

अङ्गपूजनम्—ॐ दामोदराय नमः पादौ पूजयामि। ॐ माधवाय नमः जानुनीः पूजयामि। ॐ पद्मनाभाय नमः नाभिं पूजयामि। ॐ विश्वमूर्तये नमः उदरं पूजयामि। ॐ ज्ञानगम्याय नमः हृदयं पूजयामि। ॐ श्रीकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ सहस्त्रभानवे नमः बाहूं पूजयामि। ॐ योगिने नमः नेत्रं पूजयामि। ॐ उरगाय नमः ललाटं पूजयामि। ॐ नाकसुरेश्वराय नमः नासिकां पूजयामि। ॐ श्रवणेशाय नमः श्रोत्रे पूजयामि। ॐ सर्वकर्मप्रदाय नमः शिखां पूजयामि। ॐ सहस्त्रशीर्ष्णे नमः शिरः पूजयामि। ॐ सर्वस्वरूपिणे नमः सर्वाङ्ग पूजयामि।

श्री विष्णुसहस्त्रनामावलिः

ॐ गणेशाय नमः। अस्य श्री विष्णोर्दिव्यसहस्त्रनामस्तोत्र मंत्रस्य। भगवान वेदव्यास ऋषिः। श्री विष्णुः परमात्मा देवता। अनुष्टुप छंदः। अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्। देवकीनंदनः स्त्रष्टेति शक्तिः। त्रिसामासामगः सामेति हृदयम्। शंखभृन्नंदकी चक्रीति कीलकम्। रथांगपाणिरक्षोभ्य इति कवचम्। उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मंत्रः। धर्मादि चतुर्विध-पुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाविष्णु-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्—शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्॥ लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

१. ॐ विश्वस्मै नम:
२. विष्णवे नम:
३. वषट्काराय नम:
४. भूतभव्यभवत्प्रभवे नम:
५. भूतकृते नम:
६. भूतभृते नम:
७. भावाय नम:।
८. भूतात्मने नम:
९. भूतभावनाय नम:
१०. पूतात्मने नम:
११. परमात्मने नम:
१२. मुक्तानां परमागतये नम:
१३. अव्ययाय नम:
१४. पुरुषाय नम:
१५. साक्षिणेनम:
१६. क्षेत्रज्ञाय नम:
१७. अक्षराय नम:
१८. योगाय नम:
१९. योगविदां नेत्रे नम:
२०. प्रधानपुरुषेश्वराय नम:
२१. नारसिंहवपुषे नम:
२२. श्रीमते नम:
२३. केशवाय नम:
२४. पुरुषोत्तमाय नम:
२५. सर्वाय नम:

२६. शर्वाय नम:
२७. शिवाय नम:
२८. स्थाणवे नम:
२९. भूतादये नम:
३०. निधये अव्याय नम:
३१. सम्भवाय नम:
३२. भावनाय नम:
३३. भर्त्रे नम:
३४. प्रभवाय नम:
३५. प्रभवे नम:
३६. ईश्वराय नम:
३७. स्वयम्भुवे नम:
३८. शम्भवे नम:
३९. आदित्याय नम:
४०. पुष्कराक्षाय नम:
४१. महास्वनाय नम:
४२. अनादिनिधनाय नम:
४३. धात्रे नम:
४४. विधात्रे नम:
४५. धातुरुत्तमाय नम:
४६. अप्रमेयाय नम:
४७. हृषीकेशाय नम:
४८. पद्मनाभाय नम:
४९. अमरप्रभवे नम:
५०. विश्वकर्मणे नम:

५१. मनवे नम:
५२. त्वष्ट्रे नम:
५३. स्थविष्ठाय नम:
५४. स्थविरायध्रुवाय नम:
५५. अग्राह्याय नम:
५६. शाश्वताय नम:
५७. कृष्णाय नम:
५८. लोहिताक्षाय नम:
५९. प्रतर्दनाय नम:
६०. प्रभूताय नम:
६१. त्रिककुब्धाम्ने नम:
६२. पवित्राय नम:
६३. मंगलाय परस्मै नम:
६४. ईशानाय नम:
६५. प्राणदाय नम:
६६. प्राणाय नम:
६७. ज्येष्ठाय नम:
६८. श्रेष्ठाय नम:
६९. प्रजापतये नम:
७०. हिरण्यगर्भाय नम:
७१. भूगर्भाय नम:
७२. माधवाय नम:
७३. मधुसूदनाय नम:
७४. ईश्वराय नम:
७५. विक्रमिणे नम:

७६. धन्विने नमः
७७. मेधाविने नमः
७८. विक्रमाय नमः
७९. क्रमाय नमः
८०. अनुत्तमाय नमः
८१. दुराधर्षाय नमः
८२. कृतज्ञाय नमः
८३. कृतये नमः
८४. आत्मवते नमः
८५. सुरेशाय नमः
८६. शरणाय नमः
८७. शर्मणे नमः
८८. विश्वरेतसे नमः
८९. प्रजाभवाय नमः
९०. अह्ने नमः
९१. संवत्सराय नमः
९२. व्यालाय नमः
९३. प्रत्ययाय नमः
९४. सर्वदर्शनाय नमः
९५. अजाय नमः
९६. सर्वेश्वराय नमः
९७. सिद्धाय नमः
९८. सिद्धये नमः
९९. सर्वादये नमः
१००. अच्युताय नमः
१०१. वृषाकपये नमः
१०२. अमेयात्मने नमः
१०३. सर्वयोगविनिः सृताय नमः
१०४. वसवे नमः
१०५. वसुमनसे नमः
१०६. सत्याय नमः
१०७. समात्मने नमः
१०८. संमिताय नमः
१०९. समाय नमः
११०. अमोघाय नमः
१११. पुण्डरीकाक्षाय नमः
११२. वृषकर्मणे नमः
११३. वृषाकृतये नमः
११४. रुद्राय नमः
११५. बहुशिरसे नमः
११६. बभ्रवे नमः
११७. विश्वयोनये नमः
११८. शुचिश्रवसे नमः
११९. अमृताय नमः
१२०. शाश्वतस्थावणे नमः
१२१. वरारोहाय नमः
१२२. महातपसे नमः
१२३. सर्वगाय नमः
१२४. सर्वविद्धानवे नमः
१२५. विष्वक्सेनाय नमः
१२६. जनार्दनाय नमः
१२७. वेदाय नमः
१२८. वेदविदे नमः
१२९. अव्यङ्गाय नमः
१३०. वेदाङ्गाय नमः
१३१. जेत्रे नमः
१३२. कवये नमः
१३३. लोकाध्यक्षाय नमः
१३४. सुराध्यक्षाय नमः
१३५. धर्माध्यक्षाय नमः
१३६. कृताकृताय नमः
१३७. चतुरात्मने नमः
१३८. चतुर्व्यूहाय नमः
१३९. चतुर्दंष्ट्राय नमः
१४०. चतुर्भुजाय नमः
१४१. भ्राजिष्वणे नमः
१४२. भोजनाय नमः
१४३. भोक्त्रे नमः
१४४. सहिष्णवे नमः
१४५. जगदादिजाय नमः
१४६. अनघाय नमः
१४७. विजयाय नमः
१४८. विश्वयोनये नमः
१५०. पुनर्वसवे नमः
१५१. उपेन्द्राय नमः
१५२. वामनाय नमः
१५३. प्रांशवे नमः
१५४. अमोघाय नमः
१५५. शुचये नमः
१५६. ऊर्जिताय नमः
१५७. अतीन्द्राय नमः
१५८. सङ्ग्रहाय नमः
१५९. सर्गाय नमः
१६०. धृतात्मने नमः

१६१. नियमाय नमः
१६२. यमाय नमः
१६३. वेद्याय नमः
१६४. वैद्याय नमः
१६५. सदायोगिने नमः
१६६. वीरघ्ने नमः
१६७. माधवाय नमः
१६८. मधवे नमः
१६९. अतीन्द्रियाय नमः
१७०. महामायाय नमः
१७१. महोत्साहाय नमः
१७२. महाबलाय नमः
१७३. महाबुद्धये नमः
१७४. महावीर्याय नमः
१७५. महाशक्तये नमः
१७६. महाद्युतये नमः
१७७. अनिर्देश्यवपुषे नमः
१७८. श्रीमते नमः
१७९. अमेयात्मने नमः
१८०. महाद्रिधृगे नमः
१८१. महेष्वासाय नमः
१८२. महीभर्त्रे नमः
१८३. श्रीनिवासाय नमः
१८४. सताङ्गतये नमः
१८५. अनिरुद्धाय नमः
१८६. सुरानन्दाय नमः
१८७. गोविन्दाय नमः
१८८. गोविदाम्पतये नमः
१८९. मरीचये नमः
१९०. दमनाय नमः
१९१. हंसाय नमः
१९२. सुपर्णाय नमः
१९३. भुजगोत्तमाय नमः
१९४. हिरण्यनाभाय नमः
१९५. सुतपसे नमः
१९६. पद्मनाभाय नमः
१९७. प्रजापतये नमः
१९८. अमृत्यवे नमः
१९९. सर्वदृशे नमः
२००. सिंहाय नमः
२०१. संधात्रे नमः
२०२. सन्धिमते नमः
२०३. स्थिराय नमः
२०४. अजाय नमः
२०५. दुर्मर्षणाय नमः
२०६. शास्त्रे नमः
२०७. विश्रुतात्मने नमः
२०८. सुरारिघ्ने नमः
२०९. गुरवे नमः
२१०. गुरुतमाय नमः
२११. धाम्ने नमः
२१२. सत्याय नमः
२१३. सत्यपराक्रमाय नमः
२१४. निमिषाय नमः
२१५. अनिमिषाय नमः
२१६. स्रग्विणे नमः
२१७. वाचस्पतये उदारधिये नमः
२१८. अग्रण्ये नमः
२१९. ग्रामण्ये नमः
२२०. श्रीमते नमः
२२१. न्यायाय नमः
२२२. नेत्रे नमः
२२३. समीरणाय नमः
२२४. सहस्रमूर्ध्ने नमः
२२५. विश्वात्मने नमः
२२६. सहस्राक्षाय नमः
२२७. सहस्रपदे नमः
२२८. आवर्त्तनाय नमः
२२९. निवृत्तात्मने नमः
२३०. संवृताय नमः
२३१. सम्प्रमर्दनाय नमः
२३२. अहःसंवर्त्तकाय नमः
२३३. वह्नये नमः
२३४. अनिलाय नमः
२३५. धरणीधराय नमः
२३६. सुप्रसादाय नमः
२३७. प्रसन्नात्मने नमः
२३८. विश्वेधृगे नमः
२३९. विश्वभुजे नमः
२४०. विभवे नमः
२४१. सत्कर्त्रे नमः
२४२. सत्कृताय नमः
२४३. साधवे नमः

२४४. जह्नवे नमः
२४५. नारायणाय नमः
२४६. नराय नमः
२४७. असंख्येयाय नमः
२४८. अप्रेमयात्मने नमः
२४९. विशिष्टाय नमः
२५०. शिष्टकृते नमः
२५१. शुचये नमः
२५२. सिद्धार्थाय नमः
२५३. सिद्धसङ्कल्पाय नमः
२५४. सिद्धिदाय नमः
२५५. सिद्धिसाधनाय नमः
२५६. वृषाहिणे नमः
२५७. वृषभाय नमः
२५८. विष्णवे नमः
२५९. वृषपर्वणे नमः
२६०. वृषोदराय नमः
२६१. वर्द्धनाय नमः
२६२. वर्द्धमानाय नमः
२६३. विविक्ताय नमः
२६४. श्रुतिसागराय नमः
२६५. सुभुजाय नमः
२६६. दुर्धराय नमः
२६७. वाग्मिने नमः
२६८. महेन्द्राय नमः
२६९. वसुदाय नमः
२७०. वसवे नमः
२७१. नैकरूपाय नमः
२७२. बृहद्रूपाय नमः
२७३. शिपिविष्टाय नमः
२७४. प्रकाशनाय नमः
२७५. ओजस्तेजोतिद्युधराय
२७६. प्रकाशात्मने नमः
२७७. प्रतापनाय नमः
२७८. ऋद्धाय नमः
२७९. स्पष्टाक्षराय नमः
२८०. मन्त्राय नमः
२८१. चन्द्रांशवे नमः
२८२. भास्करद्युतये नमः
२८३. अमृतांशूद्भवाय नमः
२८४. भानवे नमः
२८५. शशिबिन्दवे नमः
२८६. सुरेश्वराय नमः
२८७. औषधाय नमः
२८८. जगतः सेतवे नमः
२८९. सत्यधर्मपराक्रमाय०
२९०. भूतभव्यभवन्नाथाय०
२९१. पवनाय नमः
२९२. पावनाय नमः
२९३. अनलाय नमः
२९४. कामघ्ने नमः
२९५. कामकृते नमः
२९६. कान्ताय नमः
२९७. कामाय नमः
२९८. कामप्रदाय नमः
२९९. प्रभवे नमः
३००. युगादिकृते नमः
३०१. युगावर्ताय नमः
३०२. नैकमायाय नमः
३०३. महाशनाय नमः
३०४. अदृश्याय नमः
३०५. अव्यक्तरूपाय नमः
३०६. सहस्रजिते नमः
३०७. अनन्तजिते नमः
३०८. इष्टाय नमः
३०९. विशिष्टाय नमः
३१०. शिष्टेष्टाय नमः
३११. शिखण्डिने नमः
३१२. नहुषाय नमः
३१३. वृषाय नमः
३१४. क्रोधघ्ने नमः
३१५. क्रोधकृत्कर्त्रे नमः
३१६. विश्वबाहवे नमः
३१७. महीधराय नमः
३१८. अच्युताय नमः
३१९. प्रथिताय नमः
३२०. प्राणाय नमः
३२१. प्राणदाय नमः
३२२. वासवानुजाय नमः
३२३. अपांनिधये नमः
३२४. अधिष्ठानाय नमः
३२५. अप्रमत्ताय नमः
३२६. प्रतिष्ठिताय नमः
३२७. स्कन्दाय नमः

३२८. स्कन्दधराय नमः
३२९. धुर्याय नमः
३३०. वरदाय नमः
३३१. वायुवाहनाय नमः
३३२. वासुदेवाय नमः
३३३. बृहद्भावने नमः
३३४. आदिदेवाय नम
३३५. पुरन्दराय नमः
३३६. अशोकाय नमः
३३७. तारणाय नमः
३३८. ताराय नमः
३३९. शूराय नमः
३४०. शौरये नमः
३४१. जनेश्वराय नमः
३४२. अनुकूलाय नमः
३४३. शतावर्ताय नमः
३४४. पद्मिने नमः
३४५. पद्मनिभेक्षणाय नमः
३४६. पद्मनाभाय नमः
३४७. अरविन्दाक्षाय नमः
३४८. पद्मगर्भाय नमः
३४९. शरीरभृते नमः
३५०. महर्द्धये नमः
३५१. ऋद्धाय नमः
३५२. वृद्धात्मने नमः
३५३. महाक्षाय नमः
३५४. गरुडध्वजाय नमः
३५५. अतुलाय नमः

३५६. शरभाय नमः
३५७. भीमाय नमः
३५८. समयज्ञाय नमः
३५९. हरिर्हरये नमः
३६०.सर्वलक्षणलक्षण्याय०
३६१. लक्ष्मीवते नमः
३६२. समितिञ्जयाय नमः
३६३. विक्षराय नमः
३६४. रोहिताय नमः
३६५. मार्ग हेतवे नमः
३६६. दामोदराय नमः
३६७. सहाय नमः
३६८. महीधराय नमः
३६९. महाभागाय नमः
३७०. वेगवते नमः
३७१. अमिताशनाय नमः
३७२. उद्भवाय नमः
३७३. क्षोभणाय नमः
३७४. देवाय नमः
३७५. श्रीगर्भाय नमः
३७६. परमेश्वराय नमः
३७७. करणाय नमः
३७८. कारणाय नमः
३७९. कर्त्रे नमः
३८०. विकर्त्रे नमः
३८१. गहनाय नमः
३८२. गुहाय नमः
३८३. व्यवसायाय नमः

३८४. व्यवस्थानाय नमः
३८५. संस्थानाय नमः
३८६. स्थानदाय नमः
३८७. ध्रुवाय नमः
३८८. परर्द्धये नमः
३८९. परमाय नमः
३९०. स्पष्टाय नमः
३९१. तुष्टाय नमः
३९२. पुष्टाय नमः
३९३. शुभेक्षणाय नमः
३९४. रामाय नमः
३९५. विरामाय नमः
३९६. विरजाय नमः
३९७. मार्गाय नमः
३९८. नेयाय नमः
३९९. नयाय नमः
४००. अनयाय नमः
४०१. वीराय नमः
४०२. शक्तिमतां नमः
४०३. धर्माय नमः
४०४. धर्मविदुत्तमाय नमः
४०५. वैकुण्ठाय नमः
४०६. पुरुषाय नमः
४०७. प्राणाय नमः
४०८. प्राणदाय नमः
४०९. प्रणवाय नमः
४१०. पृथवे नमः
४११. हिरण्यगर्भाय नमः

४१२. शत्रुघ्नाय नमः
४१३. व्याप्ताय नमः
४१४. वायवे नमः
४१५. अधोक्षजाय नमः
४१६. ऋतवे नमः
४१७. सुदर्शनाय नमः
४१८. कालाय नमः
४१९. परमेष्ठिने नमः
४२०. परिग्रहाय नमः
४२१. उग्राय नमः
४२२. संवत्सराय नमः
४२३. दक्षाय नमः
४२४. विश्रामाय नमः
४२५. विश्वदक्षिणाय नमः
४२६. विस्तारायनमः
४२७. स्थावरस्थाणवे नमः
४२८. प्रमाणाय नमः
४२९. बीजायाव्ययाय नमः
४३०. अर्थाय नमः
४३१. अनर्थाय नमः
४३२. महाकोशाय नमः
४३३. महाभोगाय नमः
४३४. महाधनाय नमः
४३५. अनिर्विण्णाय नमः
४३६. स्थविष्ठाय नमः
४३७. अभुवे नमः
४३८. धर्मयूपाय नमः
४३९. महामखाय नमः
४४०. नक्षत्रनेमये नमः
४४१. नक्षत्रिणे नमः
४४२. क्षमाय नमः
४४३. क्षामाय नमः
४४४. समीहनाय नमः
४४५. यज्ञाय नमः
४४६. ईज्याय नमः
४४७. महेज्याय नमः
४४८. क्रतवे नमः
४४९. सत्राय नमः
४५०. सताङ्गतये नमः
४५१. सर्वदर्शिने नमः
४५२. विमुक्तात्मने नमः
४५३. सर्वज्ञाय नमः
४५४. ज्ञानमुत्तमाय नमः
४५५. सुव्रताय नमः
४५६. सुमुखाय नमः
४५७. सूक्ष्माय नमः
४५८. सुघोषाय नमः
४५९. सुखदाय नमः
४६०. सुहृदे नमः
४६१. मनोहराय नमः
४६२. जितक्रोधाय नमः
४६३. वीरबाहवे नमः
४६४. विदारणाय नमः
४६५. स्वापनाय नमः
४६६. स्ववशाय नमः
४६७. व्यापिने नमः
४६८. नैकात्मने नमः
४६९. नैककर्मकृते नमः
४७०. वत्सराय नमः
४७१. वत्सलाय नमः
४७२. वत्सिने नमः
४७३. रत्नगर्भाय नमः
४७४. धनेश्वराय नमः
४७५. धर्मगुपे नमः
४७६. धर्मकृते नमः
४७७. धर्मिणेनमः
४७८. सते नमः
४७९. असते नमः
४८०. क्षराय नमः
४८१. अक्षराय नमः
४८२. अविज्ञात्रे नमः
४८३. सहस्त्रांशवे नमः
४८४. विधात्रे नमः
४८५. कृतलक्षणाय नमः
४८६. गभस्तिनेमये नमः
४८७. सत्त्वस्थाय नमः
४८८. सिंहाय नमः
४८९. भूतमहेश्वराय नमः
४९०. आदिदेवाय नमः
४९१. महादेवाय नमः
४९२. देवेशाय नमः
४९३. देवभृद्गुरवे नमः
४९४. उत्तराय नमः
४९५. गोपतये नमः

४९६. गोप्त्रे नम:
४९७. ज्ञानगम्याय नम:
४९८. पुरातनाय नम:
४९९. शरीरभूतभृते नम:
५००. भोक्त्रे नम:
५०१. कपींन्द्राय नम:
५०२. भूरिदक्षिणाय नम:
५०३. सोमपाय नम:
५०४. अमृतपाय नम:
५०५. सोमाय नम:
५०६. पुरूजिते नम:
५०७. पुरुसोत्तमाय नम:
५०८. विनयाय नम:
५०९. जयाय नम:
५१०. सत्यसंधाय नम:
५११. दाशार्हाय नम:
५१२. सात्वतां पतये नम:
५१३. जीवाय नम:
५१४. विनयितासाक्षिणे नम:
५१५. मुकुन्दाय नम:
५१६. अमितविक्रमाय नम:
५१७. अम्भोनिधये नम:
५१८. अनन्तात्मने नम:
५१९. महोदधिशयाय नम:
५२०. अन्तकाय नम:
५२१. अजाय नम:
५२२. महार्हाय नम:
५२३. स्वाभाव्याय नम:

५२४. जितामित्राय नम:
५२५. प्रमोदनाय नम:
५२६. आनन्दाय नम:
५२७. नन्दनाय नम:
५२८. नन्दाय नम:
५२९. सत्यधर्मिणे नम:
५३० त्रिविक्रमाय नम:
५३१. महर्षिकपिलाचार्याय०
५३२. कृतज्ञाय नम:
५३३. मेदिनीपतये नम:
५३४. त्रिपदाय नम:
५३५. त्रिदशाध्यक्षाय नम:
५३६. महाशृङ्गाय नम:
५३७. कृतान्तकृते नम:
५३८. महावराहाय नम:
५३९. गोविन्दाय नम:
५४०. सुषेणाय नम:
५४१. कनकाङ्गदिने नम:
५४२. गुह्याय नम:
५४३. गभीराय नम:
५४४. गहनाय नम:
५४५. गुप्ताय नम:
५४६. चक्रगदाधराय नम:
५४७. वेधसे नम:
५४८. स्वाङ्गाय नम:
५४९. अजिताय नम:
५५०. कृष्णाय नम:
५५१. दृढाय नम:

५५२. सङ्कर्षणाय नम:
५५३. अच्युताय नम:
५५४. वरुणाय नम:
५५५. वारुणाय नम:
५५६. वृक्षाय नम:
५५७. पुष्कराक्षाय नम:
५५८. महामनसे नम:
५५९. भगवते नम:
५६०. भगघ्ने नम:
५६१. आनंदिने नम:
५६२. वनमालिने नम:
५६३. हलायुधाय नम:
५६४. आदित्याय नम:
५६५. ज्योतिरादित्याय नम:
५६६. सहिष्णवे नम:
५६७. गतिसत्तमाय नम:
५६८. सुधन्वने नम:
५६९. खण्डपरशवे नम:
५७०. दारुणाय नम:
५७१. द्रविणप्रदाय नम:
५७२. दिवस्पृशे नम:
५७३. सर्वदृग्व्यासाय नम:
५७४. वाचस्पतितये नम:
५७५. अयोनिजायं नम:
५७६. त्रिसाम्ने नम:
५७७. सामगाय नम:
५७८. सामाय नम:
५७९. निर्वाणाय नम:

५८०. भेषजाय नमः
५८१. भिषजे नमः
५८२. संन्यासकृते नमः
५८३. शमाय नमः
५८४. शांताय नमः
५८५. निष्ठाशांतिः परायणाय नमः
५८६. शुभांगाय नमः
५८७. शान्तिदाय नमः
५८८. स्त्रष्ट्रे नमः
५८९. कुमुदाय नमः
५९०. कुवलेशयाय नमः
५९१. गोहिताय नमः
५९२. गोपतये नमः
५९३. गोप्त्रे नमः
५९४. वृषभाक्षाय नमः
५९५. वृषप्रियाय नमः
५९६. अनिवर्तिने नमः
५९७. निवृत्तात्मने नमः
५९८. संक्षेप्त्रे नमः
५९९. क्षेमकृते नमः
६००. शिवाय नमः
६०१. श्रीवत्सवक्षसे नमः
६०२. श्रीवासाय नमः
६०३. श्रीपतये नमः
६०४. श्रीमतांवराय नमः
६०५. श्रीदाय नमः
६०६. श्रीशाय नमः
६०७. श्रीनिवासाय नमः
६०८. श्रीनिधये नमः
६०९. श्रीविभावनाय नमः
६१०. श्रीधराय नमः
६११. श्रीकराय नमः
६१२. श्रेयसे नमः
६१३. श्रीमते नमः
६१४. लोकत्रयाश्रयाय नमः
६१५. स्वक्षाय नमः
६१६. स्वंगाय नमः
६१७. शतानंदाय नमः
६१८. नंदिने नमः
६१९. ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
६२०. विजितात्मने नमः
६२१. विधेयात्मने नमः
६२२. सत्कीर्तये नमः
६२३. छिन्नसंशयाय नमः
६२४. उदीर्णाय नमः
६२५. सर्वतश्चक्षुषे नमः
६२६. अनीशाय नमः
६२७. शाश्वतस्थिराय नमः
६२८. भूशयाय नमः
६२९. भूषणाय नमः
६३०. भूतये नमः
६३१. विशोकाय नमः
६३२. शोकनाशनाय नमः
६३३. अर्चिष्मते नमः
६३४. अर्चिताय नमः
६३५. कुंभाय नमः
६३६. विशुद्धात्मने नमः
६३७. विशोधनाय नमः
६३८. अनिरुद्धाय नमः
६३९. अप्रतिरथाय नमः
६४०. प्रद्युम्नाय नमः
६४१. अमितविक्रमाय नमः
६४२. कालनेमिनिघ्ने नमः
६४३. वीराय नमः
६४४. शौरये नमः
६४५. शूरजनेश्वराय नमः
६४६. त्रिलोकात्मने नमः
६४७. त्रिलोकेशाय नमः
६४८. केशवाय नमः
६४९. केशिघ्ने नमः
६५०. हरये नमः
६५१. कामदेवाय नमः
६५२. कामपालाय नमः
६५३. कामिने नमः
६५४. कांताय नमः
६५५. कृतागमाय नमः
६५६. अनिर्देश्यवपुषे नमः
६५७. विष्णवे नमः
६५८. वीराय नमः
६५९. अनंताय नमः
६६०. धनंजयाय नमः
६६१. ब्रह्मण्याय नमः
६६२. ब्रह्मकृते नमः

६६३. ब्रह्मणे नमः
६६४. ब्रह्मणे नमः
६६५. ब्रह्मविवर्धनाय नमः
६६६. ब्रह्मविदे नमः
६६७. ब्राह्मणाय नमः
६६८. ब्रह्मिणे नमः
६६९. ब्रह्मज्ञाय नमः
६७०. ब्राह्मणप्रियाय नमः
६७१. महाक्रमाय नमः
६७२. महाकर्मणे नमः
६७३. महातेजसे नमः
६७४. महोरगाय नमः
६७५. महाक्रवते नमः
६७६. महायज्वने नमः
६७७. महायज्ञाय नमः
६७८. महाहविषे नमः
६७९. स्तव्याय नमः
६८०. स्तवप्रियाय नमः
६८१. स्तोत्राय नमः
६८२. स्तुतये नमः
६८३. स्तोत्रे नमः
६८४. रणप्रियाय नमः
६८५. पूर्णाय नमः
६८६. पूरयित्रे नमः
६८७. पुण्याय नमः
६८८. पुण्यकीर्तये नमः
६८९. अनामयाय नमः
६९०. मनोजवाय नमः

६९१. तीर्थकराय नमः
६९२. वसुरेतसे नमः
६९३. वसुप्रदाय नमः
६९४. वसुप्रदाय नमः
६९५. वासुदेवाय नमः
६९६. वसवे नमः
६९७. वसुमनसे नमः
६९८. हविषे नमः
६९९. सद्गतये नमः
७००. सत्कृतये नमः
७०१. सत्तायै नमः
७०२. सद्भूतये नमः
७०३. सत्परायणाय नमः
७०४. शूरसेनाय नमः
७०५. यदुश्रेष्ठाय नमः
७०६. सन्निवासाय नमः
७०७. सुयामुनाय नमः
७०८. भूतावासाय नमः
७०९. वासुदेवाय नमः
७१०. सर्वासुनिलयाय नमः
७११. अनलाय नमः
७१२. दर्पघ्ने नमः
७१३. दर्पदाय नमः
७१४. दृप्ताय नमः
७१५. दुर्धराय नमः
७१६. अपराजिताय नमः
७१७. विश्वमूर्तये नमः
७१८. महामूर्तये नमः

७१९. दीप्तमूर्तये नमः
७२०. अमूर्तिमते नमः
७२१. अनेकमूर्तये नमः
७२२. अव्यक्ताय नमः
७२३. शतमूर्तये नमः
७२४. शताननाय नमः
७२५. एकाय नमः
७२६. नैकाय नमः
७२७. सवाय नमः
७२८. काय नमः
७२९. कस्मै नमः
७३०. यस्मै नमः
७३१. तस्मै नमः
७३२. पदमनुत्तमाय नमः
७३३. लोकबंधवे नमः
७३४. लोकनाथाय नमः
७३५. माधवाय नमः
७३६. भक्तवत्सलाय नमः
७३७. सुवर्णवर्णाय नमः
७३८. हेमांगाय नमः
७३९. वरांगाय नमः
७४०. चंदनाङ्गदिने नमः
७४१. वीरघ्ने नमः
७४२. विषमाय नमः
७४३. शून्याय नमः
७४४. धृताशिषे नमः
७४५. अचलाय नमः
७४६. चलाय नमः

७४७. अमानिने नमः
७४८. मानदाय नमः
७४९. मान्याय नमः
७५०. लोकस्वामिने नमः
७५१. त्रिलोकधृगे नमः
७५२. सुमेधसे नमः
७५३. मेधजाय नमः
७५४. धन्याय नमः
७५५. सत्यमेधसे नमः
७५६. धराधराय नमः
७५७. तेजोवृषाय नमः
७५८. द्युतिधराय नमः
७५९. सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः
७६०. प्रग्रहाय नमः
७६१. निग्रहाय नमः
७६२. व्यग्राय नमः
७६३. नैकशृंगाय नमः
७६४. गदाग्रजाय नमः
७६५. चतुर्मूर्त्तये नमः
७६६. चतुर्बाहवे नमः
७६७. चतुर्व्यूहाय नमः
७६८. चतुर्गतये नमः
७६९. चतुरात्मने नमः
७७०. चतुर्भावाय नमः
७७१. चतुर्वेदविदे नमः
७७२. एकपदे नमः
७७३. समावर्ताय नमः
७७४. निवृत्तात्मने नमः
७७५. दुर्जयाय नमः
७७६. दुरतिक्रमाय नमः
७७७. दुर्लभाय नमः
७७८. दुर्गमाय नमः
७७९. दुर्गाय नमः
७८०. दुरावासाय नमः
७८१. दुरारिघ्ने नमः
७८२. शुभांगाय नमः
७८३. लोकसारंगाय नमः
७८४. सुतंतवे नमः
७८५. तन्तुवर्धनाय नमः
७८६. इन्द्रकर्मणेनमः
७८७. महाकर्मणे नमः
७८८. कृतकर्मणे नमः
७८९. कृतागमाय नमः
७९०. उद्भवाय नमः
७९१. सुन्दराय नमः
७९२. सुन्दाय नमः
७९३. रत्नाभाय नमः
७९४. सुलोचनाय नमः
७९५. अर्काय नमः
७९६. वाजसनाय नमः
७९७. शृङ्गिणे नमः
७९८. जयन्ताय नमः
७९९. सर्वविज्जयिने नमः
८००. सुवर्णविन्दवे नमः
८०१. अक्षोभ्याय नमः
८०२. सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
८०३. महाहृदाय नमः
८०४. महागर्त्ताय नमः
८०५. महाभूताय नमः
८०६. महानिधये नमः
८०७. कुमुदाय नमः
८०८. कुन्दराय नमः
८०९. कुन्दाय नमः
८१०. पर्जन्याय नमः
८११. पवनाय नमः
८१२. अनिलाय नमः
८१३. अमृतांशाय नमः
८१४. अमृतवपुषे नमः
८१५. सर्वज्ञाय नमः
८१६. सर्वतोमुखाय नमः
८१७. सुलभाय नमः
८१८. सुव्रताय नमः
८१९. सिद्धाय नमः
८२०. शत्रुजिते नमः
८२१. शत्रुतापनाय नमः
८२२. न्यग्रोधाय नमः
८२३. उदुम्बराय नमः
८२४. अश्वत्थाय नमः
८२५. चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः
८२६. सहस्रार्चिषे नमः
८२७. सप्तजिह्वाय नमः
८२८. सप्तैधसे नमः
८२९. सप्तवाहनाय नमः

८३०. अमूर्तये नमः
८३१. अनघाय नमः
८३२. अचिन्त्याय नमः
८३३. भयकृते नमः
८३४. भयनाशनाय नमः
८३५. अणवे नमः
८३६. बृहते नमः
८३७. कृशाय नमः
८३८. स्थूलाय नमः
८३९. गुणभृते नमः
८४०. निर्गुणाय नमः
८४१. महते नमः
८४२. अधृताय नमः
८४३. स्वधृताय नमः
८४४. स्वास्याय नमः
८४५. प्राग्वंशाय नमः
८४६. वंशवर्द्धनाय नमः
८४७. भारभृते नमः
८४८. कथिताय नमः
८४९. योगिने नमः
८५०. योगीशाय नमः
८५१. सर्वकामदाय नमः
८५२. आश्रमाय नमः
८५३. श्रमणाय नमः
८५४. क्षामाय नमः
८५५. सुपर्णाय नमः
८५६. वायुवाहनाय नमः
८५७. धनुर्धराय नमः
८५८. धनुर्वेदाय नमः
८५९. दण्डाय नमः
८६०. दमयित्रे नमः
८६१. दमाय नमः
८६२. अपराजिताय नमः
८६३. सर्वसहाय नमः
८६४. नियन्त्रे नमः
८६५. नियमाय नमः
८६६. यमाय नमः
८६७. सत्त्ववते नमः
८६८. सात्त्विकाय नमः
८६९. सत्याय नमः
८७०. सत्यधर्मपरायणाय नमः
८७१. अभिप्रायाय नमः
८७२. प्रियार्हाय नमः
८७३. अर्हाय नमः
८७४. प्रियकृते नमः
८७५. प्रीतिवर्धनाय नमः
८७६. विहायसगतये नमः
८७७. ज्योतिषे नमः
८७८. सुरुचये नमः
८७९. हुतभुजे नमः
८८०. विभवे नमः
८८१. रवये नमः
८८२. विरोचनाय नमः
८८३. सूर्याय नमः
८८४. सवित्रे नमः
८८५. रविलोचनाय नमः
८८६. अनन्ताय नमः
८८७. हुतभुजे नमः
८८८. भोक्त्रे नमः
८८९. सुखदाय नमः
८९०. नैकजाय नमः
८९१. अग्रजाय नमः
८९२. अनिर्विण्णाय नमः
८९३. सदामर्षिणे नमः
८९४. लोकाधिष्ठानाय नमः
८९५. अद्भुताय नमः
८९६. सनान्नमः
८९७. सनातनतमाय नमः
८९८. कपिलाय नमः
८९९. कपये नमः
९००. अव्ययाय नमः
९०१. स्वस्तिदाय नमः
९०२. स्वस्तिकृते नमः
९०३. स्वस्तिने नमः
९०४. स्वस्तिभुजे नमः
९०५. स्वस्तिदक्षिणाय नमः
९०६. अरौद्राय नमः
९०७. कुण्डलिने नमः
९०८. चक्रिणे नमः
९०९. विक्रमिणे नमः
९१०. ऊर्जितशासनाय नमः
९११. शब्दातिगाय नमः
९१२. शब्दसहाय नमः
९१३. शिशिराय नमः
९१४. शर्वरीकराय नमः
९१५. अक्रूराय नमः
९१६. पेशलाय नमः

९१७. दक्षाय नमः
९१८. दक्षिणाय नमः
९१९. क्षमिणांवराय नमः
९२०. विद्वत्तमाय नमः
९२१. वीतभयाय नमः
९२२. पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः
९२३. उत्तारणाय नमः
९२४. दुष्कृतिघ्ने नमः
९२५. पुण्याय नमः
९२६. दुःस्वप्ननाशनाय नमः
९२७. वीरघ्ने नमः
९२८. रक्षणाय नमः
९२९. संताय नमः
९३०. जीवनाय नमः
९३१. पर्यवस्थिताय नमः
९३२. अनन्तरूपाय नमः
९३३. अनन्तश्रिये नमः
९३४. जितमन्यवे नमः
९३५. भयापहाय नमः
९३६. चतुरस्राय नमः
९३७. गभीरात्मने नमः
९३८. विदिशाय नमः
९३९. व्यादिशाय नमः
९४०. दिशाय नमः
९४१. अनादये नमः
९४२. भुवे नमः
९४३. भुवोलक्ष्म्यै नमः
९४४. सुवीराय नमः
९४५. रुचिराङ्गदाय नमः
९४६. जननाय नमः
९४७. जनजन्मादये नमः
९४८. भीमाय नमः
९४९. भीमपराक्रमाय नमः
९५०. आधारनिलयाय नमः
९५१. धात्रे नमः
९५२. पुष्पहासाय नमः
९५३. प्रजागराय नमः
९५४. ऊर्ध्वगाय नमः
९५५. सत्पथाचाराय नमः
९५६. प्राणदाय नमः
९५७. प्रणवाय नमः
९५८. पणाय नमः
९५९. प्रमाणाय नमः
९६०. प्राणनिलयाय नमः
९६१. प्राणभृते नमः
९६२. प्राणजीवनाय नमः
९६३. तत्त्वाय नमः
९६४. तत्त्वविदे नमः
९६५. एकात्मने नमः
९६६.जन्ममृत्युजरातिगाय०
९६७.भूर्भुवः स्वस्तरवे नमः
९६८. ताराय नमः
९६९. सवित्रे नमः
९७०. प्रपितामहाय नमः
९७१. यज्ञाय नमः
९७२. यज्ञपतये नमः
९७३. यज्वने नमः
९७४. यज्ञाङ्गाय नमः
९७५. यज्ञवाहनाय नमः
९७६. यज्ञभृते नमः
९७७. यज्ञकृते नमः
९७८. यज्ञिने नमः
९७९. यज्ञभुजे नमः
९८०. यज्ञसाधनाय नमः
९८१. यज्ञान्तकृते नमः
९८२. यज्ञगुह्याय नमः
९८३. अन्नाय नमः
९८४. अन्नादाय नमः
९८५. आत्मयोनये नमः
९८६. स्वयञ्जाताय नमः
९८७. वैखानाय नमः
९८८. सामगानाय नमः
९८९. देवकीनन्दनाय नमः
९९०. स्रष्ट्रे नमः
९९१. क्षितीशाय नमः
९९२. पापनाशाय नमः
९९३. शङ्खभृते नमः
९९४. नन्दकिने नमः
९९५. चक्रिणे नमः
९९६. शार्ङ्गधन्वने नमः
९९७. गदाधराय नमः
९९८. रथाङ्गपाणये नमः
९९९. अक्षोभ्याय नमः
१०००.सर्वप्रहरणायुधाय नमः

॥ इति श्रीविष्णु सहस्त्रनामावलिः समाप्ता ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीसत्यनारायणव्रत कथा

प्रथमोऽध्यायः

(व्रत की महिमा तथा विधि)

व्यास उवाच एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः। पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु॥ १॥ *ऋषय ऊचुः* व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वाञ्छितं फलम्। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने!॥ २॥ *सूत उवाच* नारदेनैव सम्पृष्टो भगवान् कमलापतिः। सुरर्षये यथैवाऽऽह तच्छृणुध्वं समाहिताः॥ ३॥ एकदा नारदो योगी पराऽनुग्रह-काङ्क्षया। पर्यटन् विविधान् लोकान् मृत्युलोक-मुपागतः॥ ४॥ ततोदृष्ट्वा जनान् सर्वान् नानाक्लेश-समन्वितान्। नानायोनि-समुत्पन्नान् क्लिश्यमानान् स्वकर्मभिः॥ ५॥ केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम्। इति सञ्चिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा॥ ६॥ तत्र नारायणं देवं शुक्लवर्णं चतुर्भुजम्। शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-वनमाला-विभूषितम्॥ ७॥ दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे। *नारद उवाच* नमो वाङ्-मनसातीत रूपायाऽनन्त-शक्तये॥ ८॥ आदि-मध्या-ऽन्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने। सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशने॥ ९॥ श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत॥ *श्री भगवानुवाच* किमर्थमागतोऽसि त्वं किं ते मनसि वर्त्तते। कथयस्व महाभाग! तत्सर्वं कथयामि ते॥ १०॥ *नारद उवाच* मर्त्यलोके जनाःसर्वे नानाक्लेश समन्विताः। नानायोनि-समुत्पन्नाः पच्यन्ते पापकर्मभिः॥ ११॥ तत्कथं शमयेन्नाथ! लघूपायेन तद्वद। श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपाऽस्ति यदि ते मयि॥ १२॥ *श्रीभगवानुवाच* साधु पृष्टं त्वया वत्स! लोकानुग्रहकाङ्क्षया। यत्कृत्वा मुच्यते मोहात्तच्छृणुष्व वदामि ते॥ १३॥ व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम्। तव स्नेहान् मया विप्र! प्रकाशः क्रियतेऽधुना॥ १४॥

सत्यनारायणस्यैव व्रतं सम्यग् विधानतः। कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात्॥ १५॥ तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत्। *नारद उवाच* कि फल? किं विधानं च? कृतं केनैव तद्व्रतम्॥ १६॥ तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं व्रतं प्रभो?। *श्रीभगवानुवाच* दुःख-शोकादि-शमनं धन-धान्य-प्रवर्धनम्॥ १७॥ सौभाग्य-सन्ततिकरं सर्वत्र विजयप्रदम्। यस्मिन् कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्ति-श्रद्धा-समन्वितः॥ १८॥ सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे। ब्राह्मणर्बान्धवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः॥ १९॥ नैवेद्यं भक्तितो दद्यात् सपादं भक्ष्यमुत्तमम्। रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्॥ २०॥ अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा। सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत्॥ २१॥ विप्राय दक्षिणां दद्यात् कथां श्रुत्वा जनैः सह। ततश्च बन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रति भोजयेत्॥ २२॥ प्रसादं भक्षयेद् भक्त्या नृत्य-गीतादिकं चरेत्। ततश्च स्वगृहं गच्छेत् सत्यनारायणं स्मरन्॥ २३॥ एवं कृते मनुष्याणां वाच्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्। विशेषतः कलियुगे लघुपायोस्ति भूतले॥ २८॥

॥ इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सूत-शौनक-संवादे सत्यनारायण-व्रत कथायां प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

द्वितीयोऽध्यायः

(निर्धन ब्राह्मण तथा काष्ठ क्रेता की कथा)

सूत उवाच अथाऽन्यत् सम्प्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विज। कश्चित् काशीपुरे रम्ये ह्यासीद् विप्रोऽतिनिर्धनः॥ १॥ क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले। दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान् ब्राह्मणप्रियः॥ २॥ वृद्धब्राह्मणरूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात्। किमर्थं भ्रमसे विप्र! महीं नित्यं सुदुःखितः॥ ३॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम!। *ब्राह्मण उवाच* ब्राह्मणोऽतिदरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम्॥ ४॥ उपायं यदि जनासि कृपया कथय प्रभो!। *वृद्धब्राह्मण*

उवाच सत्यनारायणो विष्णुर्वाञ्छितार्थफलप्रदः॥ ५॥ तस्य त्वं पूजनं विप्र! कुरुष्व व्रतमुत्तमम्। यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः॥ ६॥ विधानं च व्रतस्याऽपि विप्रायाऽऽभाष्य यत्नतः। सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवाऽन्तरधीयत॥ ७॥ तद्व्रतं सङ्करिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेन वै। इति सञ्चिन्त्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रां न लब्धवान्॥ ८॥ ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम्। 'करिष्ये' इति सङ्कल्प्य भिक्षार्थमगमद् द्विजः॥ ९॥ तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान्। तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरत्॥ १०॥ सर्व-दुःख-विनिर्मुक्तः सर्वसम्पत्समन्वितः। बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्याऽस्य प्रभावतः॥ ११॥ ततः प्रभृतिकालं च मासि मासि व्रतं कृत्तम्। एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः। सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान्॥ १२॥ व्रतमस्य यदा विप्र पृथिव्यां संकरिष्यति तदैव सर्वदुःखं तु मनुजस्य विनश्यति॥ १३॥ एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने। मया तत् कथितं विप्राः किमन्यत् कथयामि वः॥ १४॥ *ऋषय ऊचुः* तस्माद् विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने!। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते॥ १५॥ *सूत उवाच* शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येन कृतं भुवि। एकदा स द्विजवरो यथा-विभव विस्तरैः॥ १६॥ बन्धुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः। एतस्मिन्नन्तरे काले काष्ठक्रेता समागमत्॥ १७॥ बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ। तृष्णाया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रं कृतं व्रतम्॥ १८॥ प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया। कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद् वद मे प्रभो!॥ १९॥ *विप्र उवाच* सत्यानारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम्। तस्य प्रासादान्मे सर्वं धन-धान्यादिकं महत्॥ २०॥ तस्मादेतद् व्रत ज्ञात्वा काष्ठक्रेताऽतिहर्षितः। पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ॥ २१॥ सत्यनारायणं देवं मनसा इत्यचिन्तयत्। काष्ठं विक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाऽद्य यद्धनम्॥ २२॥ तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम्। इति सञ्चिन्त्य मनसा काष्ठं धृत्वा तु मस्तके॥ २३॥ जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः। तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ॥ २४॥ ततः

प्रसन्नहृदयं सुपक्वं कदलीफलम्। शर्करा-घृत-दुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम्॥ २५॥ कृत्वैकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ। ततो बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम्॥ २६॥ तद् व्रतस्य प्रभावेण धन-पुत्रान्वितोऽभवत्। इह लोके सुखं भुक्त्वा चाऽन्ते सत्यपुरं ययौ॥ २७॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेरेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

तृतीयोऽध्यायः

(राजा उल्कामुख साधुवणिक एवं लीलावती कलावती कथा)

सूत उवाच पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः। पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चाऽऽसीन्महामतिः॥ १॥ जितेन्द्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति। दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान् सन्तोषयत् सुधीः॥ २॥ भार्या तस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती। भद्रशीलानदीतीरे सत्यस्य व्रतमाचरत्॥ ३॥ एतस्मिन्नन्तरेः तत्र साधुरेकः समागतः। वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः॥ ४॥ नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति। दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं पप्रच्छ विनयान्वितः॥ ५॥ *साधुरुवाच* किमिदं कुरुषे राजन्! भक्तियुक्तेन चेतसा? । प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम्॥ ६॥ *राजोवाच* पूजनं क्रियते साधो! विष्णोरतुलतेजसः। व्रतं च स्वजनैः सार्द्धं पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया॥ ७॥ भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम्। सर्वं कथय मे राजन्! करिष्येऽहं तवोदितम्॥ ८॥ ममाऽपि सन्ततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम्। ततो निवृत्त्य वाणिज्यात् सानन्दो ग्रहमागतः॥ ९॥ भार्यायै कथितं सर्वं व्रतं सन्ततिदायकम्। तदा व्रतं करिष्यामि यदा मे सन्ततिर्भवेत्॥ १०॥ इति लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स-सत्तमः। एकस्मिन् दिवसे तस्य भार्या लीलावती सती॥ ११॥ भर्तृयुक्ताऽऽनन्दचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा। गर्भिणी साऽभवत्तस्य भार्या सत्यप्रसादतः॥ १२॥ दशमे मासि वै तस्याः कन्यारत्नमजायत। दिने दिने स ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी॥ १३॥ नाम्ना कलावती चेति तन्नामकरणं कृतम्। ततो लीलावती प्राह

स्वामिनं मधुरं वचः॥ १४॥ न करोषि किमर्थं वै पुरा सङ्कल्पितं व्रतम्?। *साधुरूवाच* विवाहसमये त्वस्याः करिष्यामि व्रतं प्रिये!॥ १५॥ इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति। ततः कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि॥ १६॥ दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह। मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित्॥ १७॥ विवहार्थं च कन्याया वरं श्रेष्ठं विचारय। तेनाऽऽज्ञप्तश्च दूतोऽसौ काञ्चनं नगरं ययौ॥ १८॥ तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादाय गतो हिसः। दृष्ट्वा तु सुन्दरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम्॥ १९॥ ज्ञातिभिर्बन्धुभिः सार्द्धं परितुष्टेन चेतसा। दत्तवान् साधुः पुत्राय कन्यां विधिः-विधानतः॥ २०॥ ततो भाग्यवशात्तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम्। विवाहसमये तस्यास्तेन रुष्टोऽभवत् प्रभुः॥ २१॥ ततः कालेन नियतो निजकर्मविशारदः। वाणिज्यार्थं ततः शीघ्रं जामातृसहितो वणिक्॥ २२॥ रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिन्धुसमीपतः। वाणिज्यमकरोत् साधुर्जामात्रा श्रीमता सह॥ २३॥ तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च। एकस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः॥ २४॥ भ्रष्टप्रतिज्ञामालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान्। दारुणं कठिनं चाऽस्य महद्दुःखं भविष्यति॥ २५॥ एकस्मिन् दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः। तत्रैव चाऽऽगतश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ॥ २६॥ तत्पश्चाद्धावकान् दूतान् दृष्ट्वा भीतेन चेतसा। धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः॥ २७॥ ततो दूताःसमायाता यत्राऽऽस्ते सज्जनो वणिक्। दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वा नीतौ वाणिक्-सुतौ॥ २८॥ हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः। तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याऽऽज्ञापय प्रभो!॥ २९॥ राज्ञाऽऽज्ञप्तस्ततः शीघ्रं दृढं बद्ध्वा तु तावुभौ। स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारे विचारतः॥ ३०॥ मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः। अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चन्द्रकेतुना॥ ३१॥ तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवाऽतिदुःखिता। चौरेणाऽपहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम्॥ ३२॥ आधि व्याधि-समायुक्ता क्षुत्-पिपासा-ऽतिदुःखिता। अन्नचिन्तापरा भूत्वा बभ्राम च गृहे-गृहे॥ ३३॥ कलावती तुकन्यापि बभ्राम प्रतिवासरम्। एकस्मिन्

दिवसे जाताक्षुधार्ता द्विजमन्दिरम्। गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च॥ ३४॥ उपविश्य कथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि। प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति॥ ३५॥ माता कलावती कन्या कथयामास प्रेमतः। पुत्रि! रात्रौ स्थिता कुत्र? किं ते मनसि वर्तते?॥ ३६॥ कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्त्वरम्। द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वाञ्छित-सिद्धिदम्॥ ३७॥ तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता। सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च॥ ३८॥ व्रतं चक्रे सैव साध्वी बन्धुभिः स्वजनैः सह। भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम्॥ ३९॥ अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षन्तुमर्हसि। व्रतेनाऽनेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः पुनः॥ ४०॥ दर्शयामास स्वप्नं हि चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्। वन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम!॥ ४१॥ देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्त्वयाऽधुना। नो चेत्त्वां नाशयिष्यामि स-राजधन-पुत्रकम्॥ ४२॥ एवमाभाष्य राजानं ध्यानगम्योऽभवत् प्रभुः। ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह॥ ४३॥ उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति। बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ॥ ४४॥ इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ। समानीय नृपस्याऽग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः॥ ४५॥ अनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तौ निगडबन्धनात्। ततो महाजनौ नत्वा चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्॥ ४६॥ स्मरन्तौ पूर्ववृत्तान्तं नोचतुर्भयविह्वलौ। राजा वणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम्॥ ४७॥ दैवात् प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम्। तदा निगडसंत्यागं क्षौरकर्माद्यकारयत्॥ ४८॥ वस्त्रालङ्कारकं दत्वा परितोष्य नृपश्च तौ। पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वच साऽतोषयद् भृशम्॥ ४९॥ पुरानीतं तु यद्द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान्। प्रोवाच च ततो राजा गच्छ साधो! निजाश्रमम्॥ ५०॥ राजानं प्रणिपत्याऽऽह गन्तव्यं त्वत्प्रसादतः। इत्युक्त्वातौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति॥ ५१॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

चतुर्थोऽध्यायः

(असत्य भाषण तथा भगवान् के प्रसाद की अवहेलना का परिणाम)

यात्रां तु कृतवान् साधुर्मङ्गलायन-पूर्विकाम्। ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्वा तदा तु नगरं ययौ॥ १॥ कियद् दूरे गते साधौ सत्यनारायणः प्रभु। जिज्ञासां कृतवान् साधो! किमस्ति तव नौस्थितम्॥ २॥ ततो महाजनौ मत्तो हेलया च प्रहस्य वै। कथं पृच्छसि भो दण्डिन्! मुद्रां नेतुं किमिच्छसि ?॥ ३॥ लता-पत्रादिकं चैव वर्त्तते तरणौ मम। निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः॥ ४॥ एवमुक्तौ गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः। कियद् दूरे ततो गत्वा स्थितः सिन्धुसमीपतः॥ ५॥ गते दण्डिनि साधुश्च कृत-नित्य-क्रियस्तदा। उत्थितां तरणीं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ॥ ६॥ दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितो न्यपतद् भुवि। लब्धसञ्ज्ञो वणिक्पुत्रस्ततश्चिन्तान्वितोऽभवत्॥ ७॥ तदा तु दुहितुः कान्तो वचनं चेदमब्रवीत्। किमर्थं क्रियते शोकः? शापो दत्तश्च दण्डिना॥ ८॥ शक्यतेऽतेन सर्वं हि कर्तुं चाऽत्र न संशयः। अतस्तच्छरणं यामो वाञ्छितार्थो भविष्यति॥ ९॥ जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा। दृष्ट्वा च दण्डिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम्॥ १०॥ क्षमस्व चाऽपराधं मे यदुक्तं तव सन्निधौ। एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत्॥ ११॥ प्रोवाच वचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च। मारोदीः शृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः॥ १२॥ ममाऽऽज्ञया च दुर्बुद्धे! लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः। तच्छ्रुत्वा भगवद्-वाक्यं स्तुति कर्तुं समुद्यतः॥ १३॥ *साधुरुवाच* त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः। न जानन्ति गुणान् रूपं तवाऽऽश्चर्यमिदं प्रभो!॥ १४॥ मूढोऽहं त्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया। प्रसीद पूजयिष्यामि यथा विभव-विस्तरैः॥ १५॥ पुरा वित्तं च तत्सर्वं त्राहि मां शरणागतम्। श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः॥ १६॥ वरं च वाञ्छितं दत्त्वा तत्रैवाऽन्तर्दधे हरिः। ततो नावं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम्॥ १७॥ कृपया सत्यदेवस्य सफलं वाञ्छितं मम।

इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधि॥ १८॥ हर्षेण चाऽभवत् पूर्णः सत्यदेव-प्रसादतः। नावं संयोज्य यत्नेन स्वदेशगमनं कृतम्॥ १९॥ साधुर्जामातारं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम। दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम्॥ २०॥ दूतोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च। प्रोवाच वाञ्छितं वाक्यं नत्वा बद्धाऽञ्जलिस्तदा॥ २१॥ निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक्। आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः॥ २२॥ श्रुत्वा दूतमुखाद् वाक्यं महाहर्षवती सती। सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति॥ २३॥ व्रजामि शीघ्र मागच्छ साधुसन्दर्शनाय च। इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च॥ २४॥ प्रसादं च परित्यज्य गता साऽपि पतिं प्रति। तेन रुष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणीं तथा॥ २५॥ संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्याममज्जयत्। ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम्॥ २६॥ शोकेन महता तत्र रुदन्ती चाऽपतद् भुवि। दृष्ट्वा तथाविधां नावं कन्यां बहुदुःखिताम्॥ २७॥ भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदं भवेत्। चिन्त्यमानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तरिवाहकाः॥ २८॥ ततो लीलावतीं कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाऽभवत्। विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत्॥ २९॥ इदानीं नौकया सार्धं कथं सोऽभूदलक्षितः। न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता॥ ३०॥ सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते?। इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैः सहः॥ ३१॥ ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोद ह। ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखिता॥ ३२॥ गृहीत्वा पादुकां तस्याऽनुगन्तुं च मनोःदधे। कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनो वणिक्॥ ३३॥ अतिशोकेन सन्तप्तश्चिन्तयामास धर्मवित्। हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया॥ ३४॥ सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभव-विस्तरैः। इति सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम्॥ ३५॥ नत्वा च दण्डवद् भूमौ सत्यदेवं पुनः पुनः। ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः॥ ३६॥ जगाद वचनं चैनं कृपया भक्तवत्सलः। त्यक्त्वा प्रसादं तं कन्या पतिं द्रष्टुं समागता॥ ३७॥ अतोऽदृष्टोऽ-

भवत्तस्याःकन्यकायाः पतिर्ध्रुवम्। गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा साऽऽयाति चेत् पुनः॥ ३८॥ लब्धभर्तीसुता साधो! भविष्यति न संशयः। कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगन मण्डलात्॥ ३९॥ क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा। सा पश्चात् पुनरागत्य ददर्श स-जनं पतिम्॥ ४०॥ ततः कलावती कन्या जगाद पितरं प्रति। इदानीं च गृहं याहि विलम्ब कुरुषे कथम्?॥ ४१॥ तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं सन्तुष्टोऽभूद वणिक्सुतः। पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधि-विधानतः॥ ४२॥ धनैर्बन्धुगणैः सार्धं जगाम निजमन्दिरम्। पौर्णमास्यां च संक्रान्तौ कृतवान् सत्यस्य पूजनम्॥ ४३॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा चाऽन्ते सत्यपुरं ययौ॥ ४४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥

पञ्चमोऽध्यायः
(राजा तुङ्गध्वज और गोपगणों की कथा)

सूत उवाच अथाऽन्यत् सम्प्रवक्ष्यामि श्रृणुध्वं मुनिसत्तमाः। आसीत्तुङ्गध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः॥ १॥ प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दुःखमवाप सः। एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान् पशून्॥ २॥ आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम्। गोपाः कुर्वन्ति सन्तुष्टा भक्तियुक्ताः स-बान्धवाः॥ ३॥ राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गत्वा न ननाम सः। ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ॥ ४॥ संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वेयथेप्सितम्। ततःप्रसादं सन्त्यज्य राजा दुःखमवाप सः॥ ५॥ तस्य पुत्रशतं नष्टं धन-धान्यादिकं च यत्। सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम्॥ ६॥ अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम्। मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ॥ ७॥ ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैः सह। भक्ति-श्रद्धान्वितो भूत्वा चकार विधिना नृपः॥ ८॥ सत्यदेवप्रसादेन धन-पुत्रान्वितोऽभवत्। इह लोके सुखं भुक्त्वा चाऽन्ते सत्यपुरं ययौ॥ ९॥ य इदं कुरुते सत्यं व्रतं परमदुर्लभम्। श्रृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम्॥ १०॥ धन-

धान्यादिकं तस्य भवेत् सत्यप्रसादतः। दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥ ११॥ भीतो भयात् प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः। ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चाऽन्ते सत्यपुरं व्रजेत्॥ १२॥ इति वः कथितं विप्राः सत्यनारायणव्रतम्। यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः॥ १३॥ विशेषतः कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा। केचित् कालं वदिष्यन्ति सत्यमीशं तमेव च॥ १४॥ सत्यनारायणं केचित् सत्यदेवं तथापरे। नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामांप्सितप्रदम्॥ १५॥ भविष्यति कलौ सत्य-व्रतरूपी सनातनः। श्रीविष्णुना घृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम्॥ १६॥ य इदं पठते नित्यं शृणोति मुनिसत्तमाः। तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेवप्रसादतः॥ १७॥ व्रतं यैस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च। तेषां त्वपर-जन्मानि कथयामि मुनीश्वराः॥ १८॥ शतानन्दो महाप्राज्ञः सुदामा ब्राह्मणोह्यभूत्। तस्मिन् जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवापह॥ १९॥ काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूवह। तस्मिन् जन्मनि श्रीरामं सेव्य मोक्ष जगामवै॥ २०॥ उल्कामुखो महाराजो नृपो दशरथोऽभवत्। श्रीरङ्गनाथं सम्पूज्य श्रीवैकुण्ठं तदाऽगमत्॥ २१॥ धार्मिकः सत्यसन्धश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत्। देहार्धं क्रकचैश्छित्वा दत्वा मोक्षमवाप ह॥ २२॥ तुङ्गध्वजो महाराजः स्वायम्भुवोऽभवत् किल। सर्वान् भागवतान् श्रुत्वा श्रीबैकुण्ठं तदागमत॥ २३॥ भूत्वा गोपाश्च ते सर्वे व्रजमण्डलवासिनः। निहत्य राक्षसान् सर्वान् गोलोकं तु तदा ययुः॥ २४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ १ ॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ २ ॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपेतरखिलं मधुरम्॥ ३ ॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूप मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ४ ॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ५ ॥

गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीथी मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ६ ॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मुधराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ७ ॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुमरम्॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्॥

श्री गोविन्द-दामोदर स्तोत्र

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ १॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव, गोविन्द दामोदर माधवेति॥ २॥
विक्रेतुकामा किल गोपकन्या मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ३॥
गृहे गृहे गोपवधू-कदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम्।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ४॥
सुखं शयाना निलये निजेऽपि नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ५॥
जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्त-भक्तार्ति-विनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ६॥
सुखावसाने इदमेव सारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम्।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ७॥
जिह्वे रसज्ञे मधुर-प्रिया त्वं सत्यं हितं त्वां परमं वदामि।
आवर्णयेथा मधुराक्षराणि गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ८॥
त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतान्ते।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ९॥
श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धननाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति॥ १०॥

श्री नारायणास्त्रम्

हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः। श्री पुरुषोत्तमाय युष्मद्दृष्टिप्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्ण पंचविषूचिकां हन हन। ऐकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय। चतुरशीतिवातानष्टादशकुष्टान् अष्टादशक्षयरोगान हन हन। सर्वदोषान् भंजय भंजय। तत्सर्वान् नाशय नाशय। शोषय शोषय। आकर्षय आकर्षय। शत्रून मारय मारय। उच्चाटयोच्चाटय। विद्वेषय विद्वेषय। स्तंभय स्तंभय निवारय निवारय। विघ्नैर्हन हन दह दह मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय। चक्रं गृहीत्वा शीघ्र मागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय छेदय भेदय भेदय। चतुरः शीतानि विस्फोटय विस्फोटय। अर्शोवात शूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद पदे बाह्यदिवि भूव्यन्तरिक्षे अन्यानपि कांश्चित् तद्द्वेषकान्तसर्वान् हन हन। विद्युन्मेघ नदी पर्वता टवी सर्वस्थान रात्रि दिन पन्था चौरान् वशं कुरू कुरू। हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठ ठ ठ ठ हृदयादत्ता।

❧ ❧ ❧

शिवप्रकरणम्

गणेश ध्यान

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥

अम्बिका ध्यान

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननी गौरीमावाहयाम्यहम्॥ ॐ अम्बेऽ अम्बिके ऽम्बालिके नमा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वक सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

नदीश्वर-ध्यान

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शत७सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः॥ ॐ प्रैतु व्वाजी कनिक्क्रदन्ना नदद्रासभः पत्त्वा। भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥

वीरभद्र-ध्यान

ॐ भद्द्रं कर्ण्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा७सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ

भद्रो नो ऽ अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो ऽअध्वरः। भद्रा ऽउत प्रशस्तयः॥

स्वामिकार्तिकेय ध्यान

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्स मुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽ अर्व्वन्॥ ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा ऽइव। तत्र ऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु॥

कुबेर-ध्यान

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नम ऽ उक्तिं यजन्ति॥ ॐ व्वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

कीर्तिमुख-ध्यान

ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाविभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳसर्प्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतये स्वाहा॥ ॐ ओजश्चमे सहश्चमेऽआत्माचमे तनूश्चमे शर्म्मचमे व्वर्म्मचमेऽङ्गानिचमे ऽस्थीनिचमे परूꣳषिचमे शरीराणि चम ऽ आयुश्चमे जरा चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्॥

नागेश्वर ध्यान

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

शिव ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अङ्गपूजनम्

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि॥ १॥ ॐ शङ्कराय नमः जंघे पूजयामि॥ २॥ ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि॥ ३॥ ॐ शम्भवे नमः कटीं पूजयामि॥ ४॥ ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि॥ ५॥ ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि॥ ६॥ ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि॥ ७॥ ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि॥ ८॥ ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि॥ ९॥ ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि॥ १०॥ ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि॥ ११॥ ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि॥ १२॥ ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि॥ १३॥ ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्ग पूजयामि॥ १४॥

आवरणपूजनम्

ॐ अघोराय नमः ॐ पशुपतये नमः ॐ शिवाय नमः

ॐ विरूपाय नमः ॐ विश्वरूपाय नमः ॐ त्र्यम्बकाय नमः

ॐ भैरवाय नमः ॐ कपर्दिने नमः ॐ शूलपाणये नमः

ॐ ईशानाय नमः ॐ महेशाय नमः

एकादश शक्ति पूजनम्

ॐ उमायै नमः ॐ शङ्करप्रियायै नमः ॐ पार्वत्यै नमः

ॐ गौर्यै नमः ॐ काटिव्यै नमः ॐ कालिन्द्यै नमः

ॐ कोटर्यै नमः ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॐ विश्वमात्रे नमः

ॐ भगवत्यै नमः ॐ विश्वेश्वर्यै नमः

गणपूजनम्

ॐ गणपतये नमः ॐ कार्तिकाय नमः ॐ पुष्पदन्ताय नमः

ॐ कपर्दिने नमः ॐ भैरवाय नमः ॐ शूलपाणये नमः
ॐ ईश्वराय नमः ॐ दण्डपाणये नमः ॐ नन्दिने नमः
ॐ महाकालाय नमः

अष्टमूर्तिपूजनम्

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः ॐ भवाय जलमूर्तये नमः
ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः
ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः
ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः

एकादशरुद्रपूजनम्

ॐ अघोराय नमः ॐ पशुपतये नमः ॐ शर्वाय नमः
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॐ विश्वरूपिणे नमः ॐ त्र्यम्बकाय नमः
ॐ कपर्दिने नमः ॐ भैरवाय नमः ॐ शूलपाणये नमः
ॐ ईशानाय नमः ॐ महेश्वराय नमः

अष्टोत्तरशतनामभिः शिवार्चनम्

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशत-नामभिः शिवपूजने विनियोगः।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

✿ अष्टोत्तरशत नामभिः शिवार्चनम् ✿

१. ॐ शिवाय नमः	२. ॐ महेश्वराय नमः	३. ॐ शंभवे नमः
४. ॐ पिनाकिने नमः	५. ॐ शशिशेखराय नमः	६. ॐ वामदेवाय नमः
७. ॐ विरूपाक्षाय नमः	८. ॐ कपर्दिने नमः	९. ॐ नीललोहिताय नमः
१०. ॐ शंकराय नमः	११. ॐ शूलपाणये नमः	१२. ॐ खट्वांगिने नमः
१३. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः	१४. ॐ शिपिविष्टाय नमः	१५. ॐ अंबिकानाथाय नमः
१६. ॐ श्रीकंठाय नमः	१७. ॐ भक्तवत्सलाय नमः	१८. ॐ भवाय नमः
१९. ॐ शर्वाय नमः	२०. ॐ त्रिलोकीशाय नमः	२१. ॐ शितिकंठाय नमः
२२. ॐ शिवाप्रियाय नमः	२३. ॐ उग्राय नमः	२४. ॐ कपालिने नमः
२५. ॐ कामारये नमः	२६. ॐ अन्धकारसुरसूदनाय नमः	२७. ॐ गंगाधराय नमः
२८. ॐ ललाटाक्षाय नमः	२९. ॐ कालकालाय नमः	३०. ॐ कृपानिधये नमः
३१. ॐ भीमाय नमः	३२. ॐ परशुहस्ताय नमः	३३. ॐ मृगपाणये नमः
३४. ॐ जटाधराय नमः	३५. ॐ कैलासवासिने नमः	३६. ॐ कवचिने नमः
३७. ॐ कठोराय नमः	३८. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः	३९. ॐ वृषांकाय नमः
४०. ॐ वृषभारूढाय नमः	४१. ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः	
४२. ॐ सामप्रियाय नमः	४३. ॐ स्वरमयाय नमः	४४. ॐ त्रिमूर्तये नमः
४५. ॐ अश्विनीश्वराय नमः	४६. ॐ सर्वज्ञाय नमः	४७. ॐ परमात्मने नमः
४८. ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः	४९. ॐ हविषे नमः	५०. ॐ यज्ञमयाय नमः
५१. ॐ भूतपतये नमः	५२. ॐ पंचवक्त्राय नमः	५३. ॐ सदाशिवाय नमः
५४. ॐ विश्वेश्वराय नमः	५५. ॐ वीरभद्राय नमः	५६. ॐ गणनाथाय नमः
५७. ॐ प्रजापतये नमः	५८. ॐ हिरण्यरेतसे नमः	५९. ॐ दुर्द्धर्षाय नमः
६०. ॐ गिरीशाय नमः	६१. ॐ गिरिशाय नमः	६२. ॐ अनघाय नमः
६३. ॐ भुजंगभूषणाय नमः	६४. ॐ भर्गाय नमः	६५. ॐ गिरिधन्वने नमः
६६. ॐ गिरिप्रियाय नमः	६७. ॐ कृत्तिवासने नमः	६८. ॐ पुरारातये नमः
६९. ॐ भगवते नमः	७०. ॐ प्रमथाधिपाय नमः	७१. ॐ मृत्युंजयाय नमः
७२. ॐ सूक्ष्मतमवे नमः	७३. ॐ जगद्व्यापिने नमः	७४. ॐ जगद्गुरवे नमः
७५. ॐ व्योमकेशाय नमः	७६. ॐ महासेनाय नमः	७७. ॐ चारुविक्रमाय नमः

७८. ॐ रुद्राय नमः
७९. ॐ जनकाय नमः
८०. ॐ स्थाणवे नमः
८१. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः
८२. ॐ दिगंबराय नमः
८३. ॐ अष्टमूर्तये नमः
८४. ॐ अनेकात्मने नमः
८५. ॐ सात्त्विकाय नमः
८६. ॐ शुभविग्रहाय नमः
८७. ॐ शाश्वताय नमः
८८. ॐ खंडपरशवे नमः
८९. ॐ अजाय नमः
९०. ॐ पाशविमोचकाय नमः
९१. ॐ मृडाय नमः
९२. ॐ पशुपतये नमः
९३. ॐ देवाय नमः
९४. ॐ महादेवाय नमः
९५. ॐ अव्ययाय नमः
९६. ॐ हरये नमः
९७. ॐ पूष्पदंतभिदे नमः
९८. ॐ अव्यग्राय नमः
९९. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
१००. ॐ हराय नमः
१०१. ॐ भगनेत्रभिंदे नमः
१०२. ॐ अव्यक्ताय नमः
१०३. ॐ सहस्राक्षाय नमः
१०४. ॐ सहस्रपदे नमः
१०५. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
१०६. ॐ अनंताय नमः
१०७. ॐ तारकाय नमः
१०८. ॐ परमेश्वराय नमः

रुद्राष्टाध्यायी

अथ षडङ्गन्यासः

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमि मन्तनो त्वरिष्टं य्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्वैदेवासऽइहमा दयन्तामोंꣳ३प्रतिष्ठ॥ **ॐ हृदयाय नमः** ॥ १ ॥

ॐ अबोद्ध्यग्नि꞉समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायती मुषासम्। यह्वाऽइव प्प्रवयामुज्जिहानाःप्प्रभानवः सिस्त्रेतेनाकमच्छ॥ **ॐ शिरसे स्वाहा** ॥ २ ॥

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिम्पृथिव्याव्वैश्वानर मृतऽ आजातमग्निम्॥ कविꣳसम्म्राजममितिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयनन्त देवा꞉॥ **ॐ शिखायै वषट्** ॥ ३ ॥

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणा च्छादयामिसोम स्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु॥ **ॐ कवचाय हुम्** ॥ ४ ॥

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत विव्वश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुतव्विश्वतस्प्पात्॥

सम्बाहुब्भ्या न्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः। **ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्**॥ ५॥

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः॥ मानोव्वीरानुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥ **ॐ अस्त्राय फट्**॥ ६॥

(ध्यानम्) ध्यायेन्नित्यम्महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नकल्पोज्वलाङ्गम्परशुमृग वराभीतिहस्तम्प्रसन्नम्॥ पद्मासीनं समन्ता त्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्व वन्द्यंनिखिलभयहर म्पञ्चवक्त्रन्त्रिनेत्रम्॥ १॥ ॐ नमः पार्वतीपते हर हर महादेव हर॥

प्रथमोऽध्याय

ॐ गणनान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम। आहमजानिगर्ब्भध मात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ १॥

गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह। बृहत्यु ष्णिहा ककुप्पसूचीभिः शम्म्यन्तुत्वा॥ २॥

द्विपदायाश्चतुष्पदा स्त्रिपदायाश्चषट् पदाः। व्विच्छन्छायाश्चसच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा॥ ३॥

सहस्तोमाः सहसछन्दसऽ आवृतः सहप्प्रमाऽऋषयः सप्तदैव्याः। पूर्व्वेषाम्पन्था मनुदृश्यधीराऽ अन्वालेभिरेरथ्योनरश्म्मीन्॥ ४॥

ॐ यज्जाग्रतो दूर मुदैतिदैवन्तदुसुप्त स्यतथैवैति। दूरङ्ग मञ्ज्योतिषा ञ्ज्योतिरेक न्तन्नमेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥ ५॥

येनकर्म्माण्यपसोमनीषिणो यज्ञेकृणवन्तिव्विदथेषु धीराः। यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥ ६॥

यत्त्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्चयज्ज्योतिरन्त रमृतम्प्रजासु। यस्म्मान्नऽऋते किञ्चनकर्म्मक्रियते तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥ ७॥

येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीत ममृतेनसर्व्वम्। येनयज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ८॥

यस्मिन्नृचः सामयजूंᳪषि यस्मिन्नप्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तᳪसर्व्वमोत म्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ९॥

सुषारथिरश्वा निवयन्मनुष्यान्ने नीयते भीशुभिर्व्वाजिनऽइव। हृत्प्रतिष्ठं य्यदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ १०॥ इति प्रथमोऽध्याय॥ १॥

द्वितीयोऽध्याय

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमिᳪ सर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १॥

पुरुषऽएवेदᳪ सर्व्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्। उतामृतत्त्वस्ये शानोय-दन्नेनातिरोहति॥ २॥

एतावानस्य महिमातोज्ज्यायांश्चपूरुषः। पादोस्यव्विश्वा भूतानित्रिपादस्या मृतन्दिवि॥ ३॥

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः। ततोव्विष्ष्वङ्व्यक्रा मत्साशनानशने ऽअभि॥ ४॥

ततोव्विराड जायतव्विराजोऽ अधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्य रिच्च्यतपश्चाद् भूमिमथोपुरः॥ ५॥

तस्माद्यज्ञा त्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्या नारण्या ग्राम्म्याश्चये॥ ६॥

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दांᳪसिजज्ञिरे तस्म्माद्य-जुस्तस्म्मादजायत॥ ७॥

तस्म्मादश्वाऽअजायन्त येकेचोभयादतः। गवोहजज्ञिरे तस्मात्त-स्माज्जाताऽअजावयः॥ ८॥

तंय्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः। तेनदेवाऽ अयजन्तसाध्याऽ ऋषयश्चये॥ ९॥

यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकल्प्पयन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहुकि-मूरूपादाऽउच्च्येते॥ १०॥

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः। ऊरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याॅंशूद्रोऽ अजायत॥ ११॥

चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणाश्च मुखादग्निरजायत॥ १२॥

नाब्भ्याऽआसीदन्त रिक्षॅं शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पभ्द्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोतात्तथालोकाँ २ ऽअकल्प्पयन्॥ १३॥

यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः॥ १४॥

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवायद्यज्ञन्तन्वाना-ऽअबघ्न न्पुरुषम्पशुम्॥ १५॥

यज्ञेय यज्ञमयजन्तदेवा स्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्। तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः॥ १६॥

अभ्द्यः सम्भृतः पृथिव्यैरसाच्चव्विश्व कर्म्मणः समवर्त्तताग्ग्रे। तस्यत्त्वष्टा व्विदधद्रूपमेतितन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥ १७॥

व्वेदा हमेतम्पुरुषम्महान्त मादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव व्विदित्त्वाति मृत्युमेतिनान्यः पन्थाव्विद्यतेयनाय॥ १८॥

प्रजापतिश्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानो बहुधाव्विजायते। तस्ययो निम्परिश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हतस्त्थुर्ब्भुवना निव्विश्वा॥ १९॥

योदेवेब्भ्यऽआतपतियोदेवानाम्पुरोहितः। पूर्व्वोयोदेवेब्भ्यो जातोनमो रुचायब्ब्राह्मये॥ २०॥

रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन्। यस्त्वैवम्ब्राह्मणो व्विद्यात्तस्य देवा असन्वशे॥ २१॥

श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण॥ २२॥ इति द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

तृतीयोऽध्याय

हरिः—ॐ आशुः शिशानो व्वृषभोनभीमो घना घनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्द नोनिमिषऽएकवीरः शतꣳसेनाअजयत्त्साकमिन्द्रः॥ १॥

सङ्क्रन्दनो जिष्ष्णुनायुत्तकारेण दुश्च्चयवनेन धृष्णुना तदिन्द्रेण जयततत्त्सहध्वं य्युधोनरऽइषुहस्तेनव्वृष्ष्णा॥ २॥

सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳ स्त्रष्टा सयुधऽइन्द्रोगणेन। सꣳसृष्टजित्त्सोमपाबाहु शर्ध्युग्ग्रधन्वा प्प्रतिहिताभिरस्ता॥ ३॥

बृहस्प्पते परिदीया रथेनरक्षोहा मित्राँ॥ २॥ ऽअपबाधमानः। प्प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणोयुधा जय न्नस्म्माकमेद्ध्यविताृथानाम्॥ ४॥

बलविज्ञायस्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्वा जीसहमानऽउग्रः। अभिवीरो अभिस त्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठगोवित्॥ ५॥

गोत्रभिदङ्गोविदंव्व ज्ज्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्प्रमृणान्तमोजसा॥ इमꣳसजाताऽअनु वीरयध्ध्वमिन्द्रꣳसखायोऽ अनुसꣳरभद्ध्वम्॥ ६॥

अभिगोत्राणि सहसागाह मनोदयोवीरः शतमन्न्युरिन्द्रः। दुश्च्चयवनः पृतनाषाडयुध्योस्म्माकꣳ सेनाऽअवतुप्प्रयुत्त्सु॥ ७॥

इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्प्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञꣳ पुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जती नाञ्जयन्ती नाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ ८॥

इन्द्रस्य व्वृष्ष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽ आदित्याना म्मरुताꣳशर्द्धऽउग्ग्रम्॥ महामनसाम्भुवनच्चयवानाङ्घोषोदेवाना ञ्जयतामुदस्त्थात्॥ ९॥

उद्धर्षयमघ वन्ना युधान्युत्सत्त्वनाम्मा मकानाम्मनाꣳसि॥ उद्वत्रहन्वाजिनां व्वाजिन्नान्युद्रथानाञ्जयतांय्यन्तुघोषाः॥ १०॥

अस्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्व् जेष्ष्वस्माकं य्याऽइषवस्ताजयन्तु॥ अस्माकं व्वीराऽ उत्तरेभवन्त्वस्माँ॥ २॥ उदेवाऽअवताहवेषु॥ ११॥

अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणा ङ्गान्य्यप्प्वेपरेहि॥ अभिप्प्रेहि निर्द्दहहृत्सुशोकै रन्धेनामित्रा स्तमसासचन्ताम्॥ १२॥

अवसृष्टा परापतशख्व्येब्रह्मशᳪशिते॥ गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व मामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः॥ १३॥

प्रेताजयतानरऽइन्द्रोवः शर्म्मयच्छतु॥ उग्गावः सन्तु बाहवोना धृष्ष्यायथासथ॥ १४॥

असौयासेना मरुतः परैषाम्भ्यै तिनऽओजसास्प्पर्द्धमाना॥ ताङ्गूहततमसा पव्रते न यथामीऽ अन्न्योऽ अन्न्यन्नजानन्॥ १५॥

यत्रबाणाः सम्पतन्तिकुमारा व्विशिखाऽइव॥ तन्नऽइन्द्रो बृहस्प्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु व्विश्श्वा हाशर्म्मयच्छतु॥ १६॥

मर्म्माणिते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्॥ उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतुजयन्तन्त्वानु देवामदन्तु॥ १७॥ इति तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

चतुर्थोऽध्याय

ॐ व्विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्म्यम्मद्ध्वा युर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्॥ व्वा तजूतोयोऽ अभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाः पुपोष पुरुषा व्विराजति॥ १॥

उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवं व्वहन्तिकेतवः॥ दृशेव्विश्श्वायसूर्य्यम्॥ २॥

येना पावकचक्षसाभुरणयन्तञ्जनाँ २॥ ऽअनु॥ त्वं व्वरुणपश्यसि॥ ३॥

देव्यावद्ध्वर्य्यूऽ आगतᳪरथेनसूर्य्यत्वचा॥ मद्ध्वायज्ञᳪसमञ्जाथे॥ तम्प्र त्क्नथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानाम्॥ ४॥

तम्प्रत्क्नथा पूर्व्वथाव्विश्श्वथेम थाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदᳪस्वर्व्विदम्॥ प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसेधु निमाशुञ्जयन्त मनुयासुव्वर्द्धसे॥ ५॥

अयंव्वेनश्चोदयत्पृश्नि गर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोव्विमाने॥ इममपाᳪसङ्गमेसूर्य्यस्य शिशुन्नविप्प्रा मतिभीरिहन्ति॥ ६॥

चित्रन्देवानामुदगा दनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणास्याग्ग्नेः॥ आप्प्राद्यावापृथिवीऽ अन्तरिक्षᳪ सूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्त्थुषश्च॥ ७॥

आनऽइडाभिर्व्विदथेसु शस्तिविश्वानरः सवितादेवऽएतु। अपियथा- युवानो मत्सथानो व्विश्श्वञ्ज गदभिपित्वेमनीषा॥ ८॥

यदद्यकच्चवृत्र हन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥ ९ ॥

तरणिर्व्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृ दसिसूर्य्य ॥ व्विश्श्वमाभासिरोचनम् ॥ १० ॥

तत्सूर्य्यस्यदेवत्व न्तन्महित्वम्मध्दा कर्त्तोर्व्विततंसञ्जभार ॥ यदेदयुक्तहरितः सध स्थादादद्रात्रीव्वासस्तनुते सिमस्म्मै ॥ ११ ॥

तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्योरूपङ्कृणु तेद्योरुपस्थे ॥ अनन्त मन्न्युद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ १२ ॥

बण्महाँ २ ॥ असिसूर्य्यबडादित्य महाँ२ ॥ ऽअसि ॥ महस्तेसतो महिमापनस्यते द्धादेवमहाँ२ ॥ ऽअसि ॥ १३ ॥

महस्तेसतो महिमापनस्यते द्धादेवमहाँ२ ॥ ऽअसि ॥ १३ ॥

बट्सूर्य्यश्रवसामहाँ ॥ २ ॥ ऽअसि सत्रादेवमहाँ२ ।। ऽअसि ॥ महन्नादेवानामसुर्य्यः पुरो हितो व्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम् ॥ १४ ॥

श्रायन्तऽ इवसूर्य्यं व्विश्वेदिन्द्रस्यभक्षत ॥ व्वसूनिजाते जनमानऽओजसा प्प्रतिभाग न्नदीधिम ॥ १५ ॥

अद्यादेवाऽउदिता सूर्यस्य निरंहसः पिपृतानिरवद्यात् ॥ तन्नोमित्रोव्व रुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुपृथिवीऽउत द्यौः ॥ १६ ॥

आकृष्णेनरजसा व्व र्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसविता रथेना देवोयाति भुवनानिपश्यन् ॥ १७ ॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽध्यायः

ॐ नमस्तेरुद्र मन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः ॥ १ ॥

याते रुद्रशिवातनूर घोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्न्वा शन्तमयागिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥ २ ॥

यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते बिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरि त्रताङ्कुरु माहिंसीः पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥

शिवेनव्वचसात्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥ यथानः सर्व्वमि ज्जगद यक्ष्मंसुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥

अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमोदैव्योभिषक्॥ अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्स र्वाश्चयातुधान्योधराचीः परासुव॥५॥

असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनᳯरुद्राऽअभितो- दिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाᳯ हेडऽईमहे॥६॥

असौयोवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः॥ उतैनंगोपाऽअदृ श्रन्नदश्र- न्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः॥७॥

नमोस्तुनीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्य सत्त्वानोहन्ते- ब्भ्योकरन्नमः॥८॥

प्रमुञ्चधन्न्वन स्त्वमुभयो रात्त्र्योज्ज्यार्म्॥ याश्चतेहस्तऽइषवः पराता भगवोव्वप॥९॥

व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२॥ ऽउत॥ अनेशन्नस्ययाऽ इषव आभुरस्यनिषङ्गधिः॥१०॥

यातेहेतिर्म्मीढुष्ट्टम् हस्तेब्भूवते धनुः॥ तयास्म्मान्व्विश्वतस्त्वमयक्ष्म- मयापरिभुज॥११॥

परितेधन्न्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तुव्विश्वतः॥ अथोयऽइषुधिस्तवारेऽ अस्म्मन्निधेहितम्॥१२॥

अवतत्यधनुष्ट्वᳯसहस्राक्षशतेषुधे॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव॥१३॥

नमस्तऽआयु धायानाततायधृष्णवे॥ उभाब्भ्या मुततेनमो बाहु- ब्भ्यान्तवधन्न्वने॥१४॥

मानोमहान्त मुतमानोऽ अर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमात रम्मानः प्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्ररीरिषः॥१५॥

मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानो ऽअश्वेषुरीरिषः॥ मानोव्वीरान्नुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥१६॥

नमोहिरण्यबाहवे सेनान्येदिशाञ्चपतयेनमो नमोव्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतयेनमो नमः शष्प्पिञ्जरायत्त्विषी मतेपथीनाम्पतयेनमो नमो हरिकेशायोपवीति ने पुष्ट्टानाम्पतयेनमो ॥ १७ ॥

नमोबभ्लुशायब्याधिनेन्नाना म्पतयेनमो नमोभवस्यहेत्त्यै जगताम्पतयेनमोनमोरुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सूताया हन्त्यैवनाना म्पतयेनमो ॥ १८ ॥

नमोरोहितायस्थपतये व्वृक्षाणाम्पतयेनमो नमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृता यौषधीनाम्पतयेनमो नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नम ऽ उच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतयेनमोनमः ॥ १९ ॥

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतयेनमो नमः सहमानाय निव्याधिनऽआव्याधिनीनाम्पतयेनमो नमोनिषङ्गिणेककुभायस्ते नानाम्पतयेनमो नमो निचेरवेपरिचरा यारण्यानाम्पतये नमो ॥ २० ॥

नमोव्वञ्चते परिवञ्चतेस्तायू नाम्पतयेनमो नमोनिषङ्गिणऽइषु-धिमतेतस्कराणाम्पतयेनमो नमः सृकायिब्भ्योजि-घाᳬसभ्द्योमुष्णताम्पतये नमो नमो सिमभ्द्योनक्क्तञ्च रभ्द्यो व्विकृन्तानाम्पतयेनमः ॥ २१ ॥

नमऽउष्षणीषिणे गिरिचरायकुलु ञ्चानाम्पतयेनमो नमऽइषुमभ्द्यो धन्वायिब्भ्यश्च वोनमो नमऽ आतन्न्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्चवो नमो नमऽ आयच्छभ्द्योस्यभ्द्यश्चवोनमो ॥ २२ ॥

नमोव्विसृजभ्द्यो व्विद्ध्यभ्द्यश्चवोनमो नमः स्वपभ्द्योजाग्ग्रभ्द्यश्चवोनमो नमः शयानेब्भ्य ऽआसीनेब्भ्यश्चवोनमो नमस्तिष्ठुभ्द्योधावभ्द्यश्च वो नमो ॥ २३ ॥

नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्चवोनमो नमोश्वेब्भ्योश्व पतिभ्यश्च वो नमो नमऽ आव्याधिनीब्भ्योव्विविध्यन्तीब्भयश्चवोनमो नमऽउगणाब्भ्यः स्तृᳬह तीब्भ्य श्चवोनमो ॥ २४ ॥

नमो गणेब्भ्योगणपतिब्भ्यश्चवोनमो नमोव्व्रातेब्भ्योव्व्रातपति-ब्भ्यश्चवोनमोनमो गृत्त्सेब्भ्योगृत्त्सपतिब्भ्य श्चवोनमो नमोव्वि रूपेब्भ्योव्विश्वरूपेबभ्यश्चवोनमो ॥ २५ ॥

नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्चवोनमो नमोरथिब्भ्यो ऽअरथेब्भ्यश्च वो नमो नमः क्षतृब्भ्यः सङ्ग्रही तृब्भ्यश्चवोनमो नमोमहब्भ्योऽअर्ब्भकेब्भ्यश्चवो नमः॥ २६॥

नमस्तक्षब्भ्योरथकारेब्भ्यश्चवोनमो नमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च वोनमो नमोनिषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्चवोनमो नमः श्वनिब्भ्योमृग-युब्भ्यश्चवोनमो॥ २७॥

नमः श्वभ्यः श्वपतिब्भ्यश्चवोनमो नमोभवायचरुद्रायच नमः शर्व्वायचपशुपतयेच नमोनीलग्ग्रीवायचशितिकण्ठायच॥ २८॥

नमः कपर्द्दिनेच व्युप्तकेशायच नमः सहस्राक्षायच शतधन्वनेच नमो गिरिशयायच शिपिविष्टायच नमोमीढुष्टमाय चे षुमतेच॥ २९॥

नमोह्रस्वायचव्वामनायच नमोबृहतेचव्वर्षीयसे च नमोव्वृद्धाय-चसवृधेच नमोग्ग्रायचप्प्रथमायच॥ ३०॥

नमऽआशवेचाजिरायच नमः शीग्घ्या यच शीब्भ्यायच नमऽऊर्म्म्यायचा वस्वन्न्याय चनमोनादेयायचद्द्वीप्प्यायच॥ ३१॥

नमोज्ज्येष्ठायचकनिष्ठायच नमः पूर्व्वजायचापरजायच नमोमध्द्य-मायचापगल्ल्भाच नमोजघन्न्यायच बुध्न्यायच॥ ३२॥

नमः सोब्भ्यायच प्प्रतिस्र्य्याच नमोयाम्म्यायचक्षेम्म्याय च नमः श्लोक्यायचावसान्न्यायच नमऽ उर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायच॥ ३३॥

नमोव्वन्यायचकक्ष्यायच नमः श्श्रवायचप्प्रतिश्श्रवायच न मऽआशुषेणायचाशुरथायच नमः शूरायचावभेदिनेच॥ ३४॥

नमोबिल्म्मिनेच कवचिनेच नमोव्वर्म्मिणेचव्वरूथिनेच नमः श्श्रुतायचश्श्रुतसेनायच नमो दुन्दुब्भ्यायचाहनन्न्यायच॥ ३५॥

नमोधृष्ष्णवे चप्प्रमृशायच नमोनिषङ्गिणेचेषुधिमतेच नमस्तीक्ष्णेष-वेचायुधिनेच नमः स्वायुधायचसुधन्वने च॥ ३६॥

नमः स्त्रुत्यायचपत्थ्यायच न मः काट्यायचनीप्याय च नमः कुल्ल्यायचसरस्यायच नमोनादेया यचव्वैशन्तायच॥ ३७॥

नमः कूप्प्यायचावट्ट्या यच नमोव्वीध्र्याघ्चातप्प्यायच नमोमेग्घ्यायचव्विद्युत्यायच नमोव्वर्ष्याय चावर्ष्यायच ॥ ३८ ॥

नमोव्वात्यायचरेष्म्मयायच नमोव्वास्तव्यायचव्वास्तुपायच नमः सोमायचरुद्रायच नमस्ताम्म्रायचारुणायच ॥ ३९ ॥

नमः शङ्ग्वेचपशुपतयेच नमऽउग्ग्रायचभीमायच नमोग्ग्रेव धायचदूरेवधायच नमोहन्त्रेचहनीयसेच नमोव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यो नम स्ताराय ॥ ४० ॥

नमः शम्भवायचमयो भवायच नमः शङ्करायचमयस्स्ककरायच नमः शिवायचशिवतरायच ॥ ४१ ॥

नमः पार्य्याय चावार्य्यायच नमः प्प्रतरणायचोत्तरणायच नमस्तीर्त्थ्यायचकूल्ल्यायच नमः शष्प्यायच फेन्न्यायच ॥ ४२ ॥

नमः सिकत्त्यायचप्प्रवाह्यायच नमः किं शिलायच क्षयणायच नमः कपर्दिनेचपुलस्तयेच नमइरिण्यायचप्प्रपत्थ्यायच ॥ ४३ ॥

नमोव्व्रज्ज्यायचगोष्ठायच नमस्तल्प्प्यायचगेह्यायच नमोहृदय्यायच निवेष्प्याच नमः काट्यायचगह्वरेष्ठायच ॥ ४४ ॥

नमः शुष्क्याय चहरित्याय नमः पां स व्यायचरजस्यायच नमोलोप्प्यायचोलप्यायच नमऽऊर्व्यायचसूर्व्यायच ॥ ४५ ॥

नमः पर्णायचपर्णशदायच नमऽ उद्गुरमाणायचाभिग्घ्नतेच नमऽआखिदतेचप्प्रखिदतेच नमऽइष्षकृभ्द्योधनुष्कृभ्द्यश्चवोनमो नमोवः किरिकेब्भ्योदेवानां हृदयेब्भ्योनमोव्विचिन्न्वत्केब्भ्यो नमोविक्षिणत्केब्भ्यो नमऽआनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥

द्रापेऽअन्धसस्प्पते दरिद्रनीलोहित ॥ आसाम्प्रजाना मेषाम्पशूना- म्माभेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ॥ ४७ ॥

इमारूद्रायतवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ॥ यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदे व्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥

याते रुद्रशिवातनूः शिवाव्विश्वाहाभेषजी॥ शिवारुतस्यभेषजी तयानोमृडजीवसे॥ ४९॥

परिनोरुद्रस्यहेतिर्व्वृणक्तु पस्त्विषस्यदुर्म्मतिरघायोः॥ अवस्त्थिरामघ-वब्भ्यस्तुनुष्व मीढ्वस्तोकायतनयायमृड॥ ५०॥

मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव॥ परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिंवसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि॥ ५१॥

व्विकिरिद्द्रव्विलोहित नमस्तेअस्तुभगवः॥ यास्ते सहस्रꣳ हेतयोन्न्यमस्म्मन्निवपन्तुताः॥ ५२॥

सहस्राणिसहस्रशो बाह्वोस्तवहेतयः॥ तासा मीशानोभगवः पराचीनामुखाकृधि॥ ५३॥

असङ्ख्याता सहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्याम्॥ तेषाꣳसहस्रयो जने वधन्वानितन्मसि॥ ५४॥

अस्मिन्नमहत्त्यर्णवेन्तरि क्षेभवाऽअधि॥ तेषाꣳ सस्रयोजनेवधन्वा-नितन्मसि॥ ५५॥

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवꣳरुद्राऽऽउपश्श्रिताः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेवध न्नवानितन्मसि॥ ५६॥

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाःशर्वाऽअधः क्षमाचराः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ५७॥

येव्वृक्षेषु शष्पिञ्जरानीलग्ग्री वाव्विलोहिताः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानितन्नमसि॥ ५८॥

येभूतानामधिपतयोव्विशिखासः कपर्द्दिनः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानितन्मसि॥ ५९॥

येपाथाम्पथिरक्षयऽऐल बृदाऽआयुर्य्युधः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानितन्मसि॥ ६०॥

येतीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानितन्मसि॥ ६१॥

येन्नेषु व्विविध्यन्ति पात्रेषुपिबतोजनान्॥ तेषाᳬ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानितन्मसि॥ ६२॥

यऽएतावन्तश्चभूयाᳬ सश्चदिशोरुद्रा व्वितस्थिरे॥ तेषाᳬ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानितन्मसि॥ ६३॥

नमोस्तुरुद्रेब्भ्यो येदिवियेषांव्वर्षमिषवः॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणा दशप्प्र तीचीर्द्दशोदीचीदशोदर्ध्वाः। तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुते नोमृडयन्तुतेय न्द्विष्म्मोयश्चनोद्वेष्ष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः॥ ६४॥

नमोस्तु रुद्रेब्भ्यो येन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषवः॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दश दक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्द शोदीचीदशोदर्ध्वाः॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोव न्तुतेनोमृडयन्तु तेयन्द्विष्म्मोयश्च नोद्वेष्टित मेषाञ्जम्भेदध्मः॥ ६५॥

नमोस्तुरुद्देब्भ्यो येपृथिव्यांये षामन्नमिषवः॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दश दक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशो दीचीदशोदर्ध्वाः॥ ते ब्भ्योनमोऽ अस्तुतेनो-वन्तुतेनोमृडयन्तुते यन्द्विष्म्मोयश्चनेद्वेष्ष्टित मेषाञ्जम्भेदध्मः॥ ६६॥ इति पञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

षष्ठोऽध्यायः

ॐव्वयᳬसोमव्व्रते तवमनस्तनूष्षुबिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ १॥

एषते रुद्रभागः सहस्वस्त्राम्बिकया तञ्जुषस्वस्वाहैषते रुद्रभागऽआ-खुस्तेपशुः॥ २॥

अवरूद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम्॥ यथानोव्वस्यसस्करद्यथानः श्श्रेयसस्क्कर द्यथानो व्यवसाययात्॥ ३॥

भेषजमसिभेषजङ्गवे ष्वायपुरु षायभेषजम्॥ सुखम्मेषायमेष्ष्यै॥ ४॥

त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्व्वारुक मिवबन्धनान्न मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्॥ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनादि तोमुक्षीयमामुतः॥ ५॥

एतत्ते रुद्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिᳬ सन्नः शिवोतीहि॥ ६॥

त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽ अस्तुत्र्यायुषम्॥ ७॥

शिवोनामासिस्वधितिस्ते पितानमस्तेऽ अस्तुमामाहिꣳ सीः॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्याय प्प्रजन नायरायस्पोषाय सुप्र जास्त्वायसुवीर्य्याय॥ ८॥ इति षष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

सप्तमोऽध्यायः

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्चधुनिश्स्च॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वाच व्विक्षिपः स्वाहा॥ १॥

अग्निꣳहृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्ग्रेण पशुपतिङ्कृत्स्न हृदयेनभवंय्यक्ना॥ शर्व्वम्मतस्न्ना ब्भ्यामी शानम्मन्न्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्ग्रन्देवंव्वनिष्ठुना व्वसिष्ठहनुः शिङ्गीनिको श्याब्भ्याम्॥ २॥

उग्ग्रंल्लोहितेनमित्त्रꣳ सौ व्व्रत्त्येन रुद्रन्दौर्व्व्रत्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेनसाध्ध्यान् प्प्रमुदा॥ भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पाश्र्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्यव्वनिष्ठु पशुपतेः पुरीतत्॥ ३॥

लोमब्भ्यः स्वाहा लोमब्भ्यः स्वाहात्त्वचेस्वाहात्त्वचेस्वाहा लोहितायस्वाहा लोहितायस्वाहा मेदोब्भ्यः स्वाहामेदोब्भ्यः स्वाहा। माꣳसेब्भ्यः स्वाहामाꣳसेब्भ्यःस्वाहा स्नावब्भ्यः स्वाहास्नावब्भ्यः स्वाहाऽस्थब्भ्यः स्वाहाऽस्थब्भ्यः स्वाहा मज्जब्भ्यः स्वाहामज्ज ब्भ्यः स्वाहा रेतसेस्वाहा पायवेस्वाहा॥ ४॥

आयासायस्वाहा प्प्रायासायस्वाहा संय्यासायस्वाहा व्वियासायस्वाहो द्यासायस्वाहा॥ शुचेस्वाहा शोचतेस्वाहा शोचमानायस्वाहा शोकायस्वाहा॥ ५॥

तपसेस्वाहा तप्प्यतेस्वाहा तप्प्य मानायस्वाहा तप्पाय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा। निष्कृत्यैस्वाहा प्प्रायश्चित्त्यैस्वाहा भेषजायस्वाहा॥ ६॥

यमायस्वाहान्त कायस्वाहा मृत्येवेस्वाहा॥ ब्रह्मणेस्वाहा ब्ब्रह्महत्या यै स्वाहा व्विश्वैब्भ्योदेवे ब्भ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीब्भ्याꣳ स्वाहा॥ ७॥ इति सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

अष्टमोऽध्यायः

ॐ व्वाजश्श्मे प्प्रसवश्श्मे प्प्रयतिश्श्मेप्प्रसितिश्श्मेधी तिश्श्मे क्क्रतुश्श्मे स्वरश्श्मे श्लोकश्श्मे श्श्रवश्श्मे श्श्रुतिश्श्मे ज्ज्योति श्श्मे श्वश्श्मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १॥

प्राणश्श्मेपानश्च्चमे व्यानश्श्मे सुश्श्मे चित्तञ्चमऽआधीतञ्चमे व्वाक्चमे मनश्श्मे चक्षुश्चमे श्श्रोत्रञ्चमे दक्षश्श्मे बलञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ २॥

ओजश्श्मे सहश्श्मऽ आत्त्माचमे तनूश्श्मे शर्म्मचमे व्वर्म्मचमेङ्गानिचमे स्थीनिचमे परूꣳषिचमे शरीराणिचमऽआयुश्श्मे जराचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ ३॥

ज्ज्यैष्ठयञ्च मऽआधिपत्त्यञ्चमे मन्न्युश्चमे भामश्चमे मश्चमेम्भश्चमे जेमाचमे महिमाचमे व्वरिमा च मे प्प्रथिमाचमे व्वर्षिमाचमे द्राधिमाचमे व्वृद्धञ्चमे व्वृद्धिश्श्मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ ४॥ (न० १)

सत्त्यञ्चमे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनञ्चमे व्विश्वञ्चमे महश्च मे क्रीडा मे मोदश्चमे जातञ्चमे जनिष्यमाणञ्चमे सूक्तञ्चमे सुकृ तञ्चमे यज्ञेन-कल्प्पन्ताम्॥ ५॥

ऋतञ्चमे मृतञ्चमे यक्ष्मञ्चमे नामय च्चमे जीवातुश्श्मे दीर्घायुत्वञ्चमे नमित्रञ्चमे भयञ्चमेसुखञ्चमे शयनञ्चमे सूषाश्श्मे सुदिनञ्चमे यज्ञेन-कल्प्पन्ताम्॥ ६॥

यन्ताचमे धर्ताचमे क्षेमश्श्मे धृतिश्श्मे व्विश्वञ्चमे महश्श्मे संविच्चमे ज्ञात्रञ्चमे सूश्श्मे प्रसूश्श मेसीरञ्चमेलयश्श्मेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ ७॥

शञ्चमेमयश्श्मेप्प्रियञ्चमे नुकामश्श्मे कामश्श्मे सौनसश्श्मे भगश्श्मे द्रविणञ्चमे भद्रञ्चमे श्रेयश्श्मे व्वसीय श्श्मेयशश्श्मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ ८॥ (न० २)॥

ऊर्क्चमे सूनृताचमे पयश्श्मे रसश्श्मे घृतञ्चमे मधुचमे सग्गिधश्श्मे सपीतिश्श्मे कृषिश्श्मे व्वृष्टिश्श्मे जैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ ९॥

रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टञ्चमे पुष्टिश्चमे व्विभुचमे प्रभुचमे पूर्णञ्चमे पूर्णतरञ्चमे कुयवञ्चमे क्षितञ्चमे न्नञ्चमे क्षुच्चमे यज्ञे नकल्प्पन्ताम्॥ १०॥

व्वित्तञ्चमे व्वेद्यञ्चमे भूतञ्चमे भविष्यच्चमे सुगञ्चमे सुपत्थ्यञ्चमऽ-ऋद्धञ्चमऽ ऋद्धिश्चमे क्लृप्तञ्चमे क्लृप्तिश्चमे मतिश्चमे सुमतिश्चमेयज्ञेन-कल्प्पन्ताम्॥ ११॥

व्व्रीहयश्चमे यवाश्चमे माषाश्चमे तिलाश्चमे मुद्गाश्चमे खल्ल्वाश्चमे प्रियङ्गवश्चमे णवश्चमे श्यामाकाश्चमे नीवाराश्चमेगोधूमाश्चमे मसूराश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १२॥ (न० ३)॥

अश्म्माचमे मृत्तिकाचमे गिरयश्चमे पर्व्वताश्चमे सिकताश्चमे व्वनस्प्पतयश्चमे हिरण्यञ्चमे यश्चमे श्यामञ्चमे लोहञ्चमे सीसञ्चमे त्रपु चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १३॥

अग्गिनश्चम आपश्चमे व्वीरूध श्चमऽओषधयश्चमे कृष्टपच्च्याश्चमे कृष्टपच्च्याश्चमे ग्राम्मयाश्चमे पश वऽआरण्ण्याश्चमे व्वित्तञ्चमे व्वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्चमे यज्ञेनकल्प्न्धन्ताम्॥ १४॥

व्वसुचमे व्वसतिश्चमे कर्म्मचमे शक्तिश्चमे र्त्थश्चमऽएम श्चमऽइत्याचमे गतिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १५॥ (न० ४)॥

अग्निश्च मऽइन्द्रश्चमे सोमश्चमऽइन्द्रश्चमे सविताचमऽइन्द्रश्चमे सरस्वतीचमऽइन्द्रश्चमे पूषाचमऽइन्द्रश्चमे बृहस्प्पतिश्चमऽइन्द्रश्चमे यज्ञेन-कल्प्पन्ताम्॥ १६॥

मित्रश्चमऽइन्द्रश्चमे व्वरुणश्चमऽइन्द्रश्चमे धाताचमऽइन्द्रश्चमे त्त्वष्टा-चमऽइन्द्रश्चमे मरुतश्चमऽइन्द्रश्चमे व्विश्वेचमे देवाऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्प्प-न्ताम्॥ १७॥

पृथिवीचमऽइन्द्रश्चमे न्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमे द्यौश्चमऽइन्द्रश्चमे समाश्चमऽ-इन्द्रश्चमे नक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्चमे दिशश्चमऽइन्द्र श्चमे यज्ञेन-कल्प्पन्ताम्॥ १८॥ (न० ५)॥

अॐ शुश्चमे रश्मिमश्चमे दाभ्यश्चमेधिपतिश्चमउपाॐ शुश्चमे न्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमे मैत्रावरणश्चमऽआश्विनश्चमे प्प्रतिप्रस्थानश्चमे शुक्रश्चमे मन्थीचमे यज्ञेनकल्पन्ताम्॥ १९॥

आग्रयणश्च मे व्वैस्वदेवश्चमे ध्रुवश्चमे व्वैश्वानरश्चमऽऐन्द्राग्नश्चमे महावैश्वदेवश्चमे मरुत्वतीयाश्च्चमे निष्क्केवल्यश्च्चमे सा वित्रश्चमे सारस्वतश्चमे पात्क्नीवतश्चमे हारियो जनश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम्॥ २०॥

स्रुचश्च्चमे चमसाश्च्चमे व्वायव्यानिचमे द्रोणकलशश्च्चमे ग्ग्रावाणाश्च्चमे धिषवणेचमे पूतभृच्चमऽआधवनीयश्च्चमे व्वेदिश्च्चमे बर्हिश्चमे वभृथश्च्चमे स्वगाकारश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्॥ २१॥ (न० ६)॥

अग्निश्च्चमे घर्म्मश्च्चमे र्क्कश्चमे सूर्य्यश्च्चमे प्प्राणश्च्चमे श्श्वमेधश्चमे पृथिवीचमे दितिश्चमे दिति श्च्चमे द्यौश्च्चमे ङ्गुलय: शक्कर योदिशश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्॥ २२॥

व्व्रतञ्चमऽऋतवश्चमे तपश्चमे संवत्सरश्चमे होरात्रेऽऊर्व्वष्ठीवेबृह द्रथन्तरेचमे यज्ञेनकल्पन्ताम्॥ २३॥ (न० ७)॥

एकाच मेतिस्त्रश्चमेतिस्त्रश्चमे पञ्चचमेपञ्चचमे सप्तचमेसप्तचमे नवचमेनवचमऽ एकादशचमऽकादशचमे त्रयोदशचमेत्रयोदशचमे पञ्चदशचमेपञ्चदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमेनवदशचम ऽएकविॐ शतिश्चमऽएकविॐ शतिश्चमेत्रयोविॐ शतिश्चमे त्रयोविॐ शतिश्च पञ्चविॐशतिश्चमे पञ्चविॐशतिश्चमे सप्तविॐशतिश्च ये सप्तविॐशतिश्च ये नवविॐशतिश्चमे नवपिॐशतिश्च मऽएकत्रिॐ शच्चमऽएकत्रिॐ शच्चमे त्रयस्त्रिॐ शच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्॥ २४॥ (न० ८)॥

चतस्त्रश्चमेष्टौ च मेष्टौ चमेद्वादशचमे द्वादशचमे षोडशचमे षोडशचमे विॐ शतिश्चमे विॐशतिश्चमे चतुर्व्विॐ शतिश्चमे चतुर्व्विॐ शतिश्चमे ष्टाविॐशतिश्चमे ष्टाविॐशतिश्चमे द्वात्रिॐ शच्चमे द्वात्रिॐशच्चमे षट्त्रिॐशच्चमे षट्त्रिॐशच्चमेचत्वारिॐ शच्चमे चत्वारिॐ शच्चमे

चतुश्चत्वारिꣳ शच्चमे ष्टाचत्वारिꣳशच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ २५॥ (नं० ९)॥

त्र्यविश्चमेत्र्यवीचमे दित्यवाटचमे दित्यौहीचमे पञ्चाविश्चमे पञ्चावीचमे त्रिवत्सश्चमे त्रिवत्साचमे तुर्य्यवाट्चमे तुर्य्यौहीचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ २६॥

पष्ठवाट्चमे पष्ठौहीचमऽउक्षाचमे व्वशाचमऽऋषभ श्चमे व्वेहच्चमे नड्वाँश्चमे धेनुश्चमे यज्ञेनकल्प्न्ताम्॥ २७॥ (नं० १०)॥

व्वाजायस्वाहा प्प्रसवायस्वाहा पिजायस्वाहा क्क्रतवेस्वाहा व्वसवेस्वाहा हर्प्पतये स्वाहा ऽह्नेमुग्धायस्वाहा मुग्धायव्वैनꣳशिनायस्वाहा व्विनꣳशिनऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्याय भौवनायस्वाहा भुवनस्यपतयेस्वाहा धिपतयेस्वाहा प्प्रजापतयेस्वाहा॥ इयन्तेराणिमित्राय यन्तासियमनऽ ऊर्ज्जेत्वा व्वृष्ट्यैत्वा प्प्रजाना न्त्वा धिपत्याय॥ २८॥

आयुर्य्यज्ञेनकल्प्पता म्प्राणोयज्ञेनकल्प्पताञ्च क्षुर्य्यज्ञेनकल्प्पताꣳ श्श्रोत्रंयज्ञेनकल्प्पतां व्वाग्ग्यज्ञेनकल्प्पता म्मनोयज्ञेनकल्प्पतामात्मा-यज्ञेनकल्प्पता म्ब्रह्मा यज्ञेनकल्प्पता ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्प्पता स्वर्य्यज्ञेनकल्प्पताम्पृष्ठंयज्ञेन कल्प्पतां यज्ञोयज्ञेनकल्प्पताम्॥ स्तोमश्च-यजुश्चऽऋक्चसामचबृह द्रथन्तरञ्च॥ स्वर्देवाऽअगन्मामृता ऽअभूमप्प्रजापतेः प्प्रजाऽअभूमव्वेट्स्वाहा॥ २९॥ (नं० ११)॥ इति अष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

रुद्रपद्धतौशान्त्यध्यायः

ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्ये मनोयजुः प्प्रपद्ये साम प्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रंप्रपद्ये॥ व्वागोजः सहौजोमयिप्प्राणापानौ॥ १॥

यन्मेच्छिद्रञ्चक्षुषोत्त्हदयस्य मनसो वातितृण्णम्बृहस्प्पतिर्म्मेतद्दधातु॥ शन्नोभवतुभुवनस्ययस्प्पतिः॥ २॥

भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भभर्गोदेवस्यधीमहि॥ धियोयोनः प्प्रचोदयात्॥ ३॥

कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा॥ कयाशचिष्ठयाव्वृता॥ ४॥

कस्त्वा सत्योमदानाम्मꣳ हिष्ठोमत्सदन्धसः ॥ दृढा चिदारुजेव्वसु ॥ ५ ॥ अभीषुणः सखी नामविताजरितृणाम् ॥ शतम्भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥

कयात्वन्नऽऊत्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन् ॥ कयास्तोतृब्भ्यऽआभर ॥ ७ ॥

इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति ॥ शन्नोऽअस्तु द्विपदेशञ्चतुष्प्पदे ॥ ८ ॥

शन्नोमित्रः शंव्वरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रो बृहस्प्पतिः शन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रमः ॥ ९ ॥

शन्नोव्वातः पवता ꣳ शन्नस्तपतुसूर्य्यः ।। शर्न्नःकनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु ॥ १० ॥

अहानिशम्भवन्तुनः शꣳ रात्रीः प्प्रतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरणारातहव्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौ शमिन्द्रासोमासुवतायशंय्योः ॥ ११ ॥

शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्यो रभिस्स्रवन्तुनः ॥ १२ ॥

स्योनापृथिवि नोभवान्नृ क्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म्मसप्रथा ॥ १३ ॥

आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे ॥ १४ ॥

योवः शिवतमो रसस्तस्यभाजयतेहनः। उशतीरिवमातरः ॥ १५ ॥

तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयायजिन्न्वथ। आपोजनयथाचनः ॥ १६ ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ १७ ॥

दृतेदृꣳ हमामित्रस्यमा चक्षुषा सर्व्वाणिभूतानि समीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहञ्चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानिसमीक्षे ॥ मित्रस्यचक्षुषासमीक्षामहे ॥ १८ ॥

दृतेदृꣳ हमा ॥ ज्योक्तेसन्दृशिजीव्यास ञ्ज्योक्तेसन्दृशि-जीव्यासम् ॥ १९ ॥

नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्तवर्च्चिषे ॥ अन्न्यांस्तेऽ अस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावको अस्म्मब्भ्यꣳ शिवो भव ॥ २० ॥

नमस्ते अस्तुव्विद्युते नमस्तेस्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तुयतः स्वः समीहसे ॥ २१ ॥

यतोयतः समीहसेततोनोऽ अभयङ्कुरु। शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥ २२ ॥

सुमित्रियानऽ आपऽओषधयः सन्तुदुर्म्मित्रि यास्तस्म्मै सन्तुयोस्म्मान्व्द्वेष्टियञ्चव्वयन्द्विष्म्मः ॥ २३ ॥

तच्चक्षुर्द्देव हितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतᳪ शृणुयामशरदः शतम्प्रब्ब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्च्शरदः शतात् ॥ २४ ॥ ॐ शान्ति २ ॥ इति रुद्रपद्धतौशान्त्यध्यायः ॥

स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः

हरि ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु ॥ १ ॥

ॐ पयः पृथिव्वयाम्पयऽ ओषधीषु पयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्य्यम् ॥ २ ॥

ॐ व्विष्णोरराट मसिव्विष्णोः श्नप्प्त्रेस्त्थोव्वि ष्णोः स्यूरसिव्विष्णोद्ध्रुवोऽसि ॥ व्वैष्णवमसिव्विष्णवेत्त्वा ॥ ३ ॥

ॐ अग्निर्द्देवता व्वातोदेवता सूर्य्योदेवता चन्द्रमादेवता व्वसवोदेवता रुद्रादेवता ऽऽदित्यादेवता मरुतोदेवता व्विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवता व्वरुणो देवता ॥ ४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ ५ ॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ ६ ॥

अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्योनमस्ते ऽ अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ ७॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ ८॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम्॥ ९॥

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पितानमस्ते ऽअस्तुमामाहिꣳ सीः॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय-सुवीर्य्याय॥ १०॥

ॐ व्विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव॥ यद्भद्रन्तन्नऽ आसुव॥ ११॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशन्तिरेधि॥ १२॥

ॐ सर्व्वेषां वा एष व्वेदानाꣳ रसो यत्साम सर्व्वेषामेवैनमेतद्वेदानाꣳ रसेनाभिषिञ्चति॥ १३॥

इतिस्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अनेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करः महारुद्रः प्रीयतां न मम। ॐ सदाशिवार्पणमस्तु।

❧ ❧ ❧

श्रीशिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥ १॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥ २॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥ ३॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥ ४॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥ ५॥

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥ १॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि बिल्वंपत्रं शिवार्पणम्॥ २॥

अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्चपूजयेच्छिव शंकरम्।
कोटिकन्या महादानं विल्वपत्रं शिवार्पणम्॥ ३॥
शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्।
सोमयत्रमहापुण्यमेकबिल्वं शिवार्पणम्॥ ४॥
लक्ष्म्या स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येक बिल्वं शिवार्पणम्॥ ५॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारएकबिल्वं शिवार्पणम्॥ ६॥
मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय एकबिल्वं शिवार्पणम्॥ ७॥
बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्॥ ८॥

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥ १॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥ २॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥ ३॥
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥ ४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥ ५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ ६॥

॥ इति श्री मच्छङ्कराचार्य विरिचितं शिवपञ्चाक्षर स्तोत्रं सम्पूर्ण॥

शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डुमड्डुमड्डुमन्निनादवड्डुमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥ १॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥ २॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥ ३॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥ ४॥
सहस्त्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥ ५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥ ६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥ ७॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥ ८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥ ९॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥ १०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।

धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥ १०॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥ ११॥
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥ १२॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥ १३॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥ १४॥

॥ इति श्री रावणकृत शिवताण्डव स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥ १ ॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहं॥ २ ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगम्॥ ३ ॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥ ४॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं॥ ५ ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानंद संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥ ६ ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥ ७ ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥ ८ ॥
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥ ९ ॥

॥ इति श्री गोस्वामि तुलसीदासकृत श्री रुद्राष्टक सम्पूर्णम् ॥

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्म-मुरारि-सुरार्चित-लिङ्गं निर्मल-भासित-शोभित-लिङ्गम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ १॥
देवमुनि-प्रवरार्चित-लिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्प-विनाशन-लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ २॥
सर्वसुगन्धि-सुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धन-कारणलिङ्गम्।
सिद्ध-सुरा-ऽसुर-वन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ३॥
कनक-महामणि-भूषितलिङ्गं फणिपति-वेष्टित-शोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञ-विनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ४॥
कुङ्कुम-चन्दन-लेपितलिङ्गं पङ्कजहार-सुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चित-पाप-विनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ५॥
देवगणार्चित-सेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटि-प्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ६॥
अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भव-कारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्र-विनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ७॥
सुरगुरु-सुरवर-पूजितलिङ्गं सुरवनपुष्प-सदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ८॥
लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ ९॥

श्रीविश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं
गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम् ।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ १ ॥

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम् ।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ २ ॥

भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्।
पाशाङ्कुशाभयवरप्रदशूलपाणिं।
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ ३ ॥

शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं
भालेक्षणानलविशोषितपञ्चबाणम् ।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ ४ ॥

पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां
नागान्तकं दनुजपुङ्गवपन्नगानाम्।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां।
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ ५ ॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीय-
मानन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।

नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं।
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ ६॥

रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं।
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ ७॥

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ।
आहादय हृत्कमलमध्यगतं परेशं।
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥ ८॥

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्॥ ९॥

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ १०॥

॥ इति श्रीमहर्षिव्यासप्रणीतं श्रीविश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम्॥

देवीप्रकरणम्

ध्यानम्

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥
सर्व रूपं मयी देवी सर्वं देवी मयं जगत्।
अतोऽहं विश्व रूपांत्वा नमामि परमेश्वरी॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समानहि।
एवं ज्ञात्वा महादेवी यथा योग्यं तथा कुरु॥

॥ प्राणप्रतिष्ठा ॥

जलमादाय। अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ऋषयः सामानि छन्दांसि जगत्सृष्टिकारिणी प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्य प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ब्रह्माविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुः सामछंदोभ्यो नमः

मुखे। जगत्सृष्टिकारिणीप्राणशक्तिर्देवतायै नमः हृदये। आंबीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्त्ये नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे।

॥ अथ षडंगन्यासः ॥

अं कं खं गं घं ङं आं—पृथिव्यब्तेजोवाय्वाकाशात्मने अंगुष्ठाभ्याम् नमः।

इं चं छं जं झं ञं ईं—शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने तर्जनीभ्याम् नमः।

उं टं ठं डं ढं णं ऊं—त्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

एं तं थं दं धं नं ऐं—वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ओं पं फं बं भं मं औं—वचनादानगतिविसर्गानंदात्मने कनिष्ठिकाभ्यांनमः।

अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः—मनोबुद्ध्यहंकारचित्तविज्ञानात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवं हृदयादि न्यासः। ततो आं नमः नाभ्यादिपादपर्यन्तम्। ह्रीं नमः हृदायादि नाभ्यन्तम्। क्रौं नमः भ्रूमध्यादिहृदान्तम् विन्यस्य। हृदये सप्तधातून् विन्यसेत्।

यं त्वगात्मने नमः। लं मांसात्मने नमः। वं मेदात्मने नमः। सं अस्थ्यात्मने नमः। यं मज्जात्मने नमः। शंशुक्रात्मने नमः। हों ओजसात्मने नमः। हं प्राणात्मने नमः। क्षं जीवात्मने नमः। इति हृदये विन्यस्य। अं नमः। आं नमः। इं नमः। ईं नमः। इत्यादि क्षकारान्तं व्यापकं कुर्यात्। ततः स्वहृदि मंडुकाय नमः। कालाग्निरुद्राय नमः।

ध्यानम्

रक्तां भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः
पांशं कोदंडमिक्षूद्भवमथगुणमप्यंकुशं पंचबाणान्।
ब्रिभ्राणा सृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढया
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥ १॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य सुमुखवृत्त चतुरस्त्र गोक्षुर योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ततो ज्ञानमुद्रया हस्तं दत्त्वा प्राणस्थापनं कुर्यात्।

आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं इह स्थिति प्राणाः।-पुनः आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं जीव स्थिति इहस्थिताः।-पुनः आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राण-पाणिपादपायूपस्थानीहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु नमः ह्रीं क्षं सं हं ह्रीं ह्रीं इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रं त्रिवारं पठेत्।

गर्भाधानादिसंस्कारसिद्ध्यर्थं षोडशवारं प्रणवं जपेत्। अनेन मम देहस्य गर्भाधानादिसंस्काराः संपद्यन्ताम्। अयं देहः सर्वकर्मारंभयोग्यो जात इति भावनम्। ज्योतिर्मयं स्वशरीरं भावयेत्। ततः प्राणायामं कुर्यात्।

अकारादिषोडशस्वरानुच्चार्य वामनासिकया वायुं पूरयेत्। ककारादि पंचविंशतिवर्णानुच्चार्य कुम्भकेन वायुं स्थिरीकृत्य। यकारादि क्षकारान्तवर्णानुच्चार्य वायुं रेचयेत्। एवं प्राणायामं कुर्याद्।

यथा पर्वतिधातूनां दोषं दहति पावकः।
एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते॥ १॥

॥ इति प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग॥

॥ मातृकान्यासः ॥

जलमादाय। अस्य श्री अंतर्मातृकामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः अन्तर्मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वरा शक्त्यः अन्तर्मातृका न्यासे विनियोगः।

ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे। अन्तमातृकासरस्वतीदेवतायै नमः हृदये। हलो बीजाय नमः गुह्ये। स्वराः शक्तये नमः पादयो। ह्रीं अं कं खं गं घं ङं आं-अंगुष्ठाभ्याम् नमः। इं चं छं जं झं जं ईं-तर्जनीभ्यां नमः। उं टं ठं डं ढं णं ऊं - मध्यमाभ्यां नमः। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठकाभ्यां नमः। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यास्यः।

ध्यानम्

पंचाशल्लिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हृत्पद्मवक्षः स्थलाम्।
भास्वन्मौलिनिबद्ध-चंद्रशकलामापीनतुंगस्तनीम्।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै
ब्रिभ्राणा विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥ १॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य। सुमुखवृत्तचतुरस्त्रगोक्षुरयोनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। ततो दक्षिणकनिष्ठिकादिवामांगुष्ठान्तं अंगुलिषु षोडशस्वरान् विन्यसेत्।

अं आं इं ईं उं ऊं ऋ ॠ लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ततो वामतर्जनीमारभ्यदक्षिण तर्जनीपर्यन्तमेकैकस्यां पर्वस्याग्रेषु चतुरश्चतुरो वर्णान् विन्यसेत्।

कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं (अगुष्ठयोः) हं लं (अंगुल्यग्रेषु) क्षं विन्यसेत्। इति करस्थमातृकान्यासः। पुनः पूर्वोक्त-मातृकान्यासः।

षोडशपत्रके कंठे अं आं इं ईं उं ऊं ऋ ॠ लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः (द्वादशपत्रके हृदि) कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं (दशपत्रके नाभौ) डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं (षट्पत्रके गुह्ये) बं भं मं यं रं लं (चतुष्पत्रके गुदे) वं शं षं सं (द्विपत्रके भ्रुवोर्मध्ये) हं क्षं॥ ततो मूर्धाधिपादपर्यन्तं व्यापकं कुर्यात्। अं आं इत्यादि क्षान्तम्।

॥ अथ बहिर्मातृकान्यासः ॥

अस्य श्री बहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्माऋषिः गायत्री छन्दः मातृकासरस्वतीदेवता हलोबीजानि स्वराः शक्तयः बहिर्मातृकान्यासे विनियोगः।

ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। गायत्री छंदसे नमः मुखे। श्री बहिर्मातृकासरस्वत्यै नमः हृदये। हलोबीजाय नमः गुह्ये। स्वराः शक्तये नमः पादयोः। अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं-

तर्जनीभ्यां नमः। उं टं ठं डं ढं णं ऊं – मध्यमाभ्यां नमः। एं तं थं दं धं नं ऐं – अनामिकाभ्याम नमः। ओं पं फं बं भं मं औं – कनिष्ठिकाभ्यां नमः। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकर पृष्ठाभ्याम् नमः। एवं हृदयादि।

ध्यानम्

आधारे लिंगनाभौ प्रकटितहृदयेद्वादशार्द्धे ललाटे
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासांते बालमध्ये फडकठसहिते कंठदेशे स्वराणाम्
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि।

अं नमः ललाटेः आं नमः मुखे। इं नमः दक्षिणनेत्रे। ईं नमः वामनेत्रे। उं नमः दक्षिणकर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ॠं नमः दक्षिणनासापुटे। ॠं नमः वामनासापुटे। लृं नमः दक्षिणगंडे। लृ नमः वामगंडे। एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं नमः अधरोष्ठे। ओं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ। औं नमः अधोदन्तपक्तौ। अं नमः जिह्वाग्रे। अः नमः शिरसि। कं खं गं घं ङ नमः दक्षिणहस्ते संध्यग्रेषु। चं छं जं झं ञं नमः वामहस्ते सन्ध्यग्रेषु। टं ठं डं ढं णं नमः दक्षिणपादे सन्ध्यग्रेषु। तं थं दं धं नं नमः वामपादे सन्ध्यग्रेषु। पं नमः दक्षिणकुक्षौ। फं नमः वामकुक्षौ। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः उदरे। यं त्वगात्मने नमः हृदि। रं असृगात्मने दक्षिणांसे। लं मांसात्मने ककुदि। वं मेदात्मने वामांसे। षं मज्जात्मने हृदयादि। पादयुगलाय नमः। शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि हस्तयुगलाय नमः। षं रसात्मने हृदयादि पादयुगलाय नमः सं शुक्रात्मने जठराय नमः। हं प्राणात्मने मुखाय नमः। क्षं जीवात्मने नमः सर्वशरीरेषु। ततो आकारादि क्षान्तं मस्तकादिपादान्तं व्यापकं कुर्यात्।

अनेन यथाशक्त्या कृतेन भूशुद्धि भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठान्त-मातृकान्यासाख्येन कर्मणा श्री प्रधानदेवताः प्रीयन्ताम् न ममः॥

॥ एकादशन्यास ॥

अस्य श्री नवार्णमंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टप् छंदांसि श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः नवाशांकभरीभीमाः

शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामयोर्बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्वानि श्री महाकाली महालक्ष्मी महारस्वती प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ब्रह्मविष्णु रुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछंदोभ्यो नमः मुखे। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि। नंदाशाकंभरीभीमाशक्तिभ्यो नमो दक्षिणस्तेन। रक्तदंतिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमो वामस्तने। अग्निवायुसूर्यातत्त्वेभ्यो नमो नाभौ। इति ऋष्यादि न्यासः मूलेन करौ संशोध्य।

तत्रादौ मातृकान्यासः। सर्वत्रादौ प्रणवोच्चारः। अं नमो ललाटे। आं नमो मुखवृत्ते। इं नमो दक्षिणनेत्रे। ईं नमो वामनेत्रे। उं नमो दक्षिणकर्णे। ऊं नमो वामकर्णे। ऋं नमो दक्षिणनसि। ॠं नमो वामनसि। लृं नमो दक्षिणगंडे। लॄं नमो वामगंडे। एं नमो ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं नमोऽधरोष्ठे। ओं नम ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं नमोऽधोपंक्तौ। अं नमः शिरसि। अः नमो मुखे। कं नमो दक्षबाहुमूले। खं नमो दक्षकूर्परे। गं नमो दक्षमणिबंधे। घं नमो दक्षांगुलिमूलो। ङं नमो दक्षंगुल्यग्रे। चं नमोवामबाहुमूले। छं वामकर्पूरे। जं नमो वाममणिबंधे। झं नमो वामांगुलिमूले। ञं नमो वामांगुल्यग्रे। टं नमो दक्षपादमूले। ठं नमो दक्षजानूनि। डं नमो दक्षगुल्फे। ढं नमो दक्षपादांगुलिमूले। णं नमो दक्षपादांगुल्फे। तं नमो वामपादमूले। थं नमो वाम जानूनि। दं नमो वामगुल्फे। धं नमो वामपादां गुलि गूले। नं नमो वाम पादांगुल्यग्रे। पं नमो दक्षपार्श्वे। फं नमो वामपार्श्वे। वं नमो पृष्ठे। भं नमो नाभौ। मं नमो जठरे। यं नमो हृदि। रं नमो दक्षांसे। लं नमः ककुदि। वं नमो वामांसे। शं नमो हृदादि दक्षहस्तांते। षं नमो वामहस्तांते। सं नमो हृदादिदक्षपादांते। हं नमो हृदादिवामपादांते लं नमो जठरे। क्षं नमो मुखे। **इति मातृकान्यासोदेव-सारुप्यप्रदः प्रथमः॥ १॥**

ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः। ऐं ह्रीं कलीं नमोऽनामिकयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमो मध्यमयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः। ऐं ह्रीं क्लीं नमोंऽगुष्ठयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमः करमध्ये। ऐं ह्रीं क्लीं नमः करपृष्ठे। ऐं ह्रीं क्लीं नमो मणिबंधयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमः कर्पूरयोः। ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदयाय नमः। ऐं ह्रीं क्लीं नमः

शिखायै वषट्। ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचाय हुं। ऐं ह्रीं क्लीं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं क्लीं नमः अस्त्राय फट्। **इति सारस्वतो जाड्य विनाशको द्वितीयः ॥ २ ॥**

ह्रीं ब्राह्मी पूर्वस्यां मां पातु। ह्रीं माहेश्वरी आग्नेयां मां पातु।
ह्रीं कौमारी दक्षिणायां मां पातु। ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्यां मां पातु।
ह्रीं वाराही पश्चिमायां मां पातु। ह्रीं इन्द्राणी वायव्यांमां पातु।
ह्रीं चामुंडे उत्तरस्यांमां पातु। ह्रीं महालक्ष्मीः ऐशान्यांमां पातु।
ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं मां पातु। ह्रीं सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु।
ह्रीं कामेश्वरी पाताले मां पातु।

इति मातृगणन्यासस्त्रैलोक्यविजयप्रदस्तृतीयः ॥ ३ ॥

कमलांकुशमंडिता नन्दजा पूर्वांगं मे पातु। खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणांगं मे पातु। पुष्पपल्लवसंयुता शाकंभरी पश्चिमार्गं मे पातु। धनुर्बाणधरा दुर्गा वामांगं मे पातु। शिरः पात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि मां पातु। चित्रकांतिभृदभ्रामरी पादादिमस्तकांत मे पातु। **इति जरामृत्युहरोनंदजा-दिन्यासश्चतुर्थः ॥ ४ ॥**

पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा मां पातु। नाभेर्विशुद्धि पर्यन्तं जनार्दनो मां पातु। विशुद्धेर्ब्रह्मारंध्रांतं रुद्रो मां पातु। हंसो मे पदद्वयं पातु। वैनतेयः करद्वयं मे पातु। वृषभश्चक्षुषी मे पातु। गजाननः सर्वांगं मे पातु। आनंदमयो हरिः परापरौ देहभागा मे पातु। **इति सर्वकामजो ब्रह्मादिन्यासः पंचमः ॥ ५ ॥**

अष्टादशभुजा लक्ष्मीर्मध्यभागं मे पातु। अष्टभुजा महासरस्वती ऊर्ध्वभागं मे पातु। दशभुजा महाकाली अधोभागं मे पातु। सिंहो हस्तद्वयं मे पातु। परहंसोऽक्षियुगं मे पातु। महिषारूढो यमः पदद्वयं मे पातु। महेशश्चंडिकायुक्तः सर्वांगं मे पातु। **इति महालक्ष्म्यादिन्यासः सद्गतिप्रदः षष्ठः ॥ ६ ॥**

ऐं नमो ब्रह्मरंध्रे। ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे। क्लीं नमो वामनेत्रे। चां नमो दक्षिणकर्णे। मुं नमो वामकर्णे। डां नमो दक्षिणनासापुटे। यैं नमो

वामनासापुटे। विं नमो मुखे। च्चें नमो गुह्ये। **इति मूलाक्षरन्यासो रोगक्षयकरः सप्तकः॥ ७॥**

च्चें नमो गुह्ये। विं नमो मुखे। यैं नमो वामानासापुटे। डां नमो दक्षनासापुटे। मुं नमो वामकर्णे। चां नमो दक्षकर्णे। क्लीं नमो वामनेत्रे। ह्रीं नमो दक्षनेत्रे। ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे। **इति विलोमाक्षरन्यासः सर्वदुःखनाशकोऽष्टमः॥ ८॥**

मूलमुच्चार्य मस्तकाच्चरणांतं चरणान्मस्तकांतं अष्टवारं व्यापकं कुर्यात्। स यथा प्रथमं पुरतो मूलेन मस्तकाच्चरणाविधिः। ततश्चरणान्मस्तकावधि-मूलोच्चारणे व्यापकम्। एवं दक्षिणतः पश्चाद्वामभागे वेति प्रतिदिग्भागेऽनुलोमविलोमतया द्विर्द्विरिति। अष्टवारं व्यापकं भवति। **इति देवताप्राप्तिकरो मूलव्यापको नवमः॥ ९॥**

मूलमुच्चार्य हृदयाय नमः। एवं प्रत्यंगं सर्वमूच्चार्य षडगेषु न्यसेत्॥ **इति मूलषडंगन्यासस्त्रैलोक्यवशकरो दशमः॥ १०॥**

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ १॥
सौम्या सोम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥ २॥
यच्च किंचित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा॥ ३॥
यया त्वया जगत् स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशंनीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥ ४॥
विष्णुः शरीग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कं स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्॥ ५॥

आद्यं वाग्बीजं कृष्णतरं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसामि। इति सर्वांगे न्यसेत्।

शूलेन पाहि नो देवी पाहि खड्गेन चांबिके।
घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च॥ १॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चंडिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ २॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरंति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ ३॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्षः सर्वतः॥ ४॥

द्वितीयं मायाबीजं सूर्यसदृशं ध्यात्वा सर्वांगेविन्यसेत्।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥ १॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनी नमोऽस्तुते॥ २॥
ज्वालाकरालमृत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तुते॥ ३॥
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घंटा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव॥ ४॥
असुरासृग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चंडिके त्वां नता वयम्॥ ५॥

तृतीयं कामबीजं स्फटिकाभं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसामि।

इति सूक्तादि बीजत्रयन्यासः। सर्वानिष्टहरः सर्वाभीष्टप्रदः सर्वारक्षाकरश्चैकादशमो न्यासः॥

॥ देवीकलामातृकान्यासः ॥

जलमादाय। अस्य श्री देवीकलामातृकान्यासस्य प्रजापति-ऋषिः गायत्रीछन्दः श्री मातृकाशारदादेवता हलोबीजानि स्वराः शक्तयः सप्तशतिपाठजपादौ होमादौ च मातृकान्यासे विनियोगः।

प्रजापतिऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछंदसे नमः मुखे। शारदादेवतायै नमः हृदि। हलबीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरशक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगे। अं आं हृदयाय नमः। इं ईं शिरसे स्वाहा। उ ऊं शिखायै वषट्। एं ऐं कवचाय हुम्। ओं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं अः अस्त्राय फट्। एवं करांगन्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

शंखचक्राब्जपरशुकपालाक्षमालिकाः ।
पुस्तकातनुकुंभौ च त्रिशूलं दधती करैः॥ १॥
सितपीतसितश्वेतरक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः ।
पंचास्यसंयुता चंद्रसकान्तिं शारदां भजे॥ २॥

ह्रीं अं निवृत्यै नमः ललाटे। आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते। इं विधायै नमः दक्षनेत्रे। ईं शांत्यै नमः वामनेत्रे। उं धरायै नमः दक्षकर्णे। ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे। ऋ रेचकायै नमः दक्षनासापुटे। ॠ मोचिकायै नमः वामनासापुटे। लृं परायै नमः दक्षकपोले। लं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले। एं सूक्ष्मभृतायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्ठे। ओं आप्यायिन्यै नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं व्यापिन्यै नमः अधोदन्तपक्तौ। अं व्योमरूपायै नमः जिह्वायाम्। अः अनन्तायै नमः कंठे। कं सृष्ट्यै नमः दक्षबाहुमूले। खं ऋद्धये नमः दक्षकूर्परे। गं स्मृत्यै नमः दक्षमणिबंधे। धं मेधायै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमूले। छं द्युत्यै नमः वामकूर्परे। जं स्थिरायै नमः वाममणिबंधे। झं स्थित्यै नमः वामहस्तांगुलिमूले। ञं सिद्धये नमः वामहस्तांगुल्यग्रे। टं जरायै नमः। दक्षपादमूले। ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि। डं क्षान्त्यै नमः दक्षगुल्फे। ढं ईश्वर्यै नमः दशपादांगुलिमूले णं रत्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। तं कामिकायै नमः वामपादमूले। थं वरदायै नमः

वामजानुनि। दं आहलदिन्यै नमः वामगुल्फे। धं प्रीत्यै नमः वामपादांगुलि मूले। नं दीर्घायै नमः वामपादांगुल्यग्रे। पं तीक्ष्णायै नमः दक्षपार्श्वे। फं रोध्रै नमः वामपार्श्वे। बं भयायै नमः पृष्ठे। भं निद्रायै नमः नाभौ। मं तंद्रिकायै नमः जठरे। यं क्षुधायै नमः हृदि। रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे। लं क्रियायै नमः ककुदि। वं उत्कायै नमः वामांसे। शं मृत्युकायै नमः हृदयादि दक्षहस्तांत। पं पीतायै नमः वामहस्तान्तम्। सं श्वेतायै नमः हृदयादि दक्षपादान्तम्। हं अरुणायै नमः हृदयादि वामपादांतम्। क्षं असितायै नमः मूर्धादि पादान्तम्। झं अनन्तायै नमः पादादि मूर्धान्तम्॥ इति देवीकलामातृकान्यासः॥

श्री देवीपीठनाममंत्रदेवताः

स्थापना हेतु आवा० स्था० पू०- हवन हेतु स्वाहा का प्रयोग करें

१. ॐ पीठाय नमः
२. पं पूर्णपीठाय नमः
३. कं कामपीठाय नमः
४. उं उड्यानपीठाय नमः
५. मां मातृपीठाय नमः
६. जं जालंधरपीठाय नमः
७. कं कोल्हापुरोपपीठाय नमः
८. पूं० पूर्णगिरिपीठाय नमः
९. सौं सौहारोपपीठाय नमः
१०. कं कोल्हागिरिपीठाय नमः
११. कं कामरूपीठाय नमः
१२. गुं गुरवे नमः
१३. पं परम गुरवे नमः
१४. पं परमेष्ठि गुरवे नमः
१५. गुं गुरुपंक्तये नमः
१६. मां मातृपितृभ्यां नमः
१७. उपमन्युनारदसनक व्यासादिभ्यो नमः
१८. ह्रीं गणपतये नमः
१९. ह्रीं दुर्गाये नमः
२०. ह्रीं सरस्वत्यै नमः
२१. ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः
२२. ह्रीं मंडुकाय नमः
२३. ह्रीं आधारशक्त्यै नमः
२४. ह्रीं मूलप्रकृत्यै नमः
२५. ह्रीं कालाग्निरुद्राय नमः
२६. ह्रीं आदिकूमार्य नमः

२७. ह्रीं अनन्ताय नमः
२८. ह्रीं आदिवराहाय नमः
२९. ह्रीं पृथिव्यै नमः
३०. ह्रीं अमृतार्णवाय नमः
३१. ह्रीं रत्नदीपाय नमः
३२. ह्रीं हेमगिरये नमः
३३. ह्रीं नन्दनोद्यानाय नमः
३४. ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः
३५. ह्रीं मणिभूतलाय नमः
३६. ह्रीं दिव्यमंडपाय नमः
३७. ह्रीं स्वर्णवेदिकायै नमः
३८. ह्रीं रत्नसिंहासनाय नमः
३९. ह्रीं धर्माय नमः
४०. ह्रीं ज्ञानाय नमः
४१. ह्रीं वैराग्याय नमः
४२. ह्रीं ऐश्वर्याय नमः
४३. ह्रीं अनैश्वर्याय नमः
४४. ह्रीं सत्त्वाय प्रबोधात्मने नमः
४६. ह्रीं रजसे प्रकृत्यात्मने नमः
४६. ह्रीं तमसे मोहात्मने नमः
४७. ह्रीं सोममंडलाय नमः
४८. ह्रीं सूर्यमंडलाय नमः
४९. ह्रीं वह्निमंडलाय नमः
५०. ह्रीं मायातत्त्वाय नमः
५१. ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमः
५२. ह्रीं शिवतत्त्वाय नमः
५३. ह्रीं ब्रह्मणे नमः
५४. ह्रीं महेश्वराय नमः
५५. ह्रीं आत्मने नमः
५६. ह्रीं परमात्मने नमः
५७. ह्रीं जीवात्मने नमः
५८. ह्रीं ज्ञानात्मने नमः
५९. ह्रीं आनंदकन्दाय नमः
६०. ह्रीं नीलाय नमः
६१. ह्रीं पद्माय नमः
६२. ह्रीं महापद्माय नमः
६३. ह्रीं रत्नेभ्यो नमः
६४. ह्रीं केसरेभ्यो नमः
६५. ह्रीं कर्णिकायै नमः
६६. ह्रीं नंदायै नमः
६७. ह्रीं भगवत्यै नमः
६८. ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः
६९. ह्रीं शाकंभर्यै नमः
७०. ह्रीं दुर्गायै नमः
७१. ह्रीं भीमायै नमः
७२. ह्रीं कालिकायै नमः
७३. ह्रीं भ्रामर्यै नमः
७४. ह्रीं शिवदूत्यै नमः

प्रतिष्ठा सर्वदेवानाम् ......॥

राजोपचार

॥ अंग पूजनम्॥

ह्रीं दुर्गाये नमः -पादौ पूजयामि।	गिरिसुतायै नमः-स्कंधौ पूजयामि
मंगलायै नमः - गुल्फौ पूजयामि।	इन्द्राण्यै नमः - भुजौ पूजयामि
भगवत्यै नमः - जंघे पूजयामि।	गौर्यै नमः -हस्तौ पूजयामि
कौमार्यै नमः - जानुनी पूजयामि।	मोहवत्यै नमः -मुखं पूजयामि
वागेश्वर्यै नमः - उरू पूजयामि।	शिवायै मः -कर्णौ पूजयामि
वरदायै नमः - कटीं पूजयामि।	अन्नपूर्णायै नमः -नेत्रे पूजयामि
कृपार्थिन्यै नमः -उदरं पूजयामि।	कमलायै नमः - ललाटं पूजयामि
पद्माकरवासिन्यै नमः- स्तनौ पूजयामि।	महालक्ष्म्यै नमः-सर्वांगं पूजयामि
महिषमर्दिन्यै नमः - कंठं पूजयामि।	

देव्या दक्षिणेसिंहं पूजयामि। वामे महिषं पूजयामि।

॥ आवरण पूजनम्॥

तत्रादौ वामेन तत्त्वमुद्रया तर्पणम्। दक्षिणेन ज्ञानमुद्रया पूजनम्।

॥ प्रथमावरणपूजनम्॥

संचिन्मयपरे देवी परामृतचरुप्रिये।
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवशर्चनाय ते॥ १॥

इति संप्रार्थ्य यथा वामकरधृत-आर्द्रखंडादि (आदु) दक्षिणेनाक्षत-पुष्पादिना पूजयामीति संपूज्य।

वामेन विशेषार्घजलैः तर्पयाम्येवं सर्वत्र। ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे सांगायै सपरिवारायै सावर्णायै सायुधायै सशक्तिकायै श्री महालक्ष्मी महाकाली महासरस्वतीभ्यो नमः। श्रीमहालक्ष्मी महाकाली महासरस्वतीं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ एवं त्रिवारं पूजयेत्॥

गुरुचतुष्टयं पूजनम्

गुरवे नमः - गुरुशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

परमगुरवे नमः - परमशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

परात्परगुरवे नमः - परात्परगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

परमेष्ठिगुरवे नमः - परमेष्ठिगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

षडंगं पूजनम्

ऐं हृदयाय नमः -हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

ह्रीं शिरसे नमः -शिरः शक्तिश्रीपादुकां पू० तर्प०

क्लीं शिखायै नमः -शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

चामुंडायै कवचाय नमः -कवचशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

विच्चे नेत्रत्राय नमः - नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

मूलेन अस्त्राय नमः - अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

प्रथमावरण देवताभ्यो नमः

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। सामान्यार्घ - जलमादाय - एताः प्रथमावरणदेवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पांजलिमादाय।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १ ॥

॥ द्वितीयावरणपूजनम्॥

सवित्र्या सह विधात्रे नमः -विधातृशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

श्रिया सह विष्णवे नमः -विष्णुशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

उमया सह शिवाय नमः -शिवशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

क्षुं नमः सिंहाय नमः - सिंहशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

हुं नमः महिषाय नमः -महिषशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

॥ तृतीयावरणपूजनम् ॥

ऐं नन्दजायै नमः - नन्दजाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः - रक्तदन्तिकाश्रीपादुकां पूज० तर्प०
क्लीं दुर्गायै नमः -दुर्गाशक्तिपादुकां पूज० तर्प०
हुं भीमायै नमः -भीमाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
ह्रीं भ्रामर्यै नमः - भ्रामरीशक्तिपादुकां पूज० तर्प०

॥ चतुर्थावरणपूजनम् ॥

ऐं ब्राह्मयै नमः -ब्राह्मशक्तिपादुकां पूज० तर्प०
ह्रीं माहेश्वर्यै नमः -माहेश्वरीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
क्लीं कौमार्यै नमः -कौमारीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
ह्रीं वैष्णव्यै नमः - वैष्णवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
लृं वाराह्यै नमः -वाराहीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
क्ष्यौं नारसिंह्यै नमः -नारसिंहीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
लं ऐन्द्रै नमः -ऐंद्रीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
स्व्यें चामुंडायै नमः -चामुण्डाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
ह्रीं लक्ष्म्यै नमः -लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

॥ पंचमावरणपूजनम् ॥

विं विष्णुमायायै नमः - विष्णुमायाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
चें चेतनायै नमः -चेतनाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
बुं बुद्ध्ये नमः -बुद्धिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
निं निद्रायै नमः -निद्राशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
क्षुं क्षुधायै नमः -क्षुधाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
छां शक्त्यै नमः -शक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
शं शक्त्यै नमः -शक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

तृं तृष्णायै नमः	–तृष्णाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
क्षां क्षान्त्यै नमः	–क्षांतिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
जां जात्यै नमः	–जातिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
लं लक्ष्म्यै नमः	–लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
धृं धृत्यै नमः	–धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
वृं वृत्यै नमः	–वृतिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
श्रुं श्रुत्यै नमः	–श्रुतिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
स्मृं स्मृत्यै नमः	–स्मृतिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
दं दयायै नमः	–दयाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
तुं तुष्टये नमः	–तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
पुं पुष्टयै नमः	–पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
मां मातृभ्यो नमः	–मातृशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
भ्रां भ्रान्त्यै नमः	–भ्रान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

॥ षष्ठावरणपूजनम् ॥

गं गणपतये नमः	–गणपतिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
क्षं क्षेत्रपालाय नमः	–क्षेत्रपालशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
बं बटुकाय नमः	–बटुकाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
यां योगिन्यै नमः	–योगिनीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

॥ सप्तमावरणपूजनम् ॥

लं इन्द्राय नमः	–इन्द्रशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
रं अग्नये नमः	–अग्निशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
यं यमाय नमः	–यमशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
क्षं निर्ऋतये नमः	–निर्ऋतिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
वं वरुणाय नमः	–वरुणशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
वां वायवे नमः	–वायुशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

सं सोमाय नमः -सोमशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
हं ईशानाय नमः -ईशानशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
ब्रह्मणे नमः -ब्रह्मशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
ह्रीं अनन्ताय नमः -अनंतशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

॥ अष्टमावरणपूजनम् ॥

वं वज्राय नमः -वज्रशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
शं शक्त्यै नमः -शक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
दं दण्डाय नमः -दंडशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
खं खड्गाय नमः -खड्गशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
पं पाशाय नमः -पाशशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
अं अंकुशाय नमः -अंकुशशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
गं गदायै नमः -गदाशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
त्रि त्रिशूलाय नमः -त्रिशूलशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
पं पद्माय नमः -पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
चं चक्राय नमः -चक्रशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

॥ नवमावरणपूजनम् ॥

वज्रहस्तायै गजारुढायै कादंबरीदेव्यै नमः -कादम्बरीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः -उल्कादेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
दंडहस्तायै महिषारुढायै करालिदेव्यै नमः -करालीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्तक्षिदेव्यै नमः -रक्ताक्षिदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षिदेव्यै नमः -श्वेताक्षिदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षिदेव्यै नमः-हरिताक्षिदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
गदाहस्तायै सिंहारुढायै यक्षिणीदेव्यै नमः -यक्षिणीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः -कालीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः -सुरज्येष्ठादेवीशक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०
चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः -सर्पराज्ञीदेवी शक्तिश्रीपादुकां पूज० तर्प०

पाठविधिः

पाठक पवित्र हो करके आसन पर बैठे; साथ में जल, पूजनसामग्री और दुर्गासप्तशती की पुस्तक रखे। पुस्तक को अपने सामने काष्ठ आदि के शुद्ध आसन पर विराजमान कर दे। ललाट में भस्म, चन्दन अथवा रोली लगा ले, शिखा बाँध ले; पूर्वाभिमुख होकर तत्त्व-शुद्धिके लिये चार बार आचमन करे।

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा॥
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा॥

तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करे; फिर '**पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ०**' मन्त्रसे कुशकी पवित्री धारण करके हाथमें लाल फूल, अक्षत और जल लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने, श्रीपुराण-पुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे अमुकायने महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुक-राशिस्थिते सूर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभकरणे एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्रश्रुति-स्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृत-सर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुःपुष्टिधन-धान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्तिसर्वाभीष्टफलावाप्ति-धर्मार्थकाम-मोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-

महासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं शापोद्धारपुरस्सरं कवचार्गलाकील-कपाठतन्त्रोक्तरात्रिसूक्तपाठदेव्यथर्वशीर्षपाठन्यासविधिसहितनवार्णजप-सप्तशती-न्यासध्यानसहितचरित्रसम्बन्धि-विनियोगन्यासध्यानपूर्वकं च 'मार्कण्डेय उवाच॥ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः। इत्याद्यारभ्य' 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं दुर्गासप्तशतीपाठं तदन्ते न्यासविधिसहितनवार्णमन्त्रजपं तन्त्रोक्तदेवीसूक्तपाठं रहस्यत्रयपठनं च करिष्ये।

इस प्रकार प्रतिज्ञा (संकल्प) करके देवी का ध्यान करते हुए पञ्चोपचार से पुस्तक की पूजा करे, इसके बाद शापोद्धार करना चाहिये। इसके अनेक प्रकार हैं। **'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरू कुरू स्वाहा'**—इस मन्त्र का आदि और अन्तमें सात बार जप करे। यह शापोद्धार मन्त्र कहलाता है। इसके अनन्तर उत्कीलन मन्त्र का जप किया जाता है। इसका जप आदि और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार होता है। यह मन्त्र इस प्रकार है—**'ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।'** मारीचकल्पके अनुसार सप्तशतीशापविमोचन का मन्त्र यह है—**'ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।'** इस मन्त्रका आरम्भ में ही एक सौ आठ बार जप करना चाहिये, पाठ के अन्त में नहीं। अथवा रूद्रामल महातन्त्र के अन्तर्गत दुर्गाकल्प में कहे हुए चण्डिकाशापविमोचन मन्त्रों का आरम्भ में ही पाठ करना चाहिये। वे मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन-मन्त्रस्य वसिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्य-कारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १॥ ॐ श्रीं बुद्धि-

स्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ २॥ ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्म-वसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ३॥ ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ४॥ ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ५॥ ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ६॥ ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ७॥ ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ८॥ ॐ जां जाति-स्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ९॥ ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १०॥ ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्म-वसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ११॥ ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १२॥ ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्म-वसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १३॥ ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १४॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १५॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १६॥ ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १७॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः॥ १८॥

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर।
चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः॥ १९॥

एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः॥ २०॥

अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥ १॥
ब्रह्मोवाच अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥ २॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ ३॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥ ४॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥ ५॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥ ६॥
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥ ७॥

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥ ८॥
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥ ९॥
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥ १०॥
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता॥ ११॥
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥ १२॥
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥ १३॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥ १४॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधनीत्थं देवानां च हिताय वै॥ १५॥
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥ १६॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥ १७॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥ १८॥

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥ १९॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥ २०॥
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥ २१॥
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥ २२॥
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी॥ २३॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती॥ २४॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके॥ २५॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥ २६॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥ २७॥
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी॥ २८॥
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी॥ २९॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी॥ ३०॥

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी॥ ३१॥
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी॥ ३२॥
नखान् दंष्ट्राकराली च कैशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा॥ ३३॥
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥ ३४॥
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु॥ ३५॥
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी॥ ३६॥
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना॥ ३७॥
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा॥ ३८॥
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी॥ ३९॥
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीभार्यां रक्षतु भैरवी॥ ४०॥
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥ ४१॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी॥ ४२॥

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥ ४३॥
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥ ४४॥
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्॥ ४५॥
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥ ४६॥
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥ ४७॥
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्॥ ४८॥
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः॥ ४९॥
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥ ५०॥
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः॥ ५१॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्॥ ५२॥
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा॥ ५३॥

यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी॥ ५४॥
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः॥ ५५॥
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते॥ ॐ॥ ५६॥

॥ इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम्॥

अर्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः॥

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥ १॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥ २॥
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ३॥
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ४॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ५॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ६॥
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ७॥
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ८॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ९॥
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १०॥
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ११॥
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १२॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १३॥
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १४॥
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १५॥
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १६॥
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १७॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १८॥
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १९॥
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २०॥
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २१॥
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २२॥
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २३॥
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥ २४॥
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्॥ ॐ॥ २५॥

॥ इति अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अथ कीलकम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।
श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे॥ १॥
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम्।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः॥ २॥
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति॥ ३॥
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्॥ ४॥
समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्॥ ५॥
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्॥ ६॥
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः॥ ७॥
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्॥ ८॥
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः॥ ९॥

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥ १०॥
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः॥ ११॥
सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्॥ १२॥
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्॥ १३॥
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः॥ ॐ॥ १४॥

॥ इति कीलकम् सम्पूर्णम् ॥

अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥ १॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता॥ २॥
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा॥ ३॥
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा॥ ४॥

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये॥ ५॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी॥ ६॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा॥ ७॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥ ८॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ ९॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥ १०॥
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा॥ ११॥
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥ १२॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्॥ १३॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ॥ १४॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥ १५॥

॥ इति रात्रिसूक्तम्॥

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥ १॥

साब्रवीत्—अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृति-पुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च॥ २॥

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥ ३॥

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्॥ ४॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥ ५॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि॥ ६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति॥ ७॥

ते देवा अब्रुवन्—नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ ८॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः॥ ९॥

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥ १०॥
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥ ११॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥ १२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥ १३॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्॥ १४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति॥ १५॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥ १६॥

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥ १७॥
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥ १८॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥ १९॥
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥ २०॥
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे॥ २१॥
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्॥ २२॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति॥ २३॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता॥ २४॥
तां दुर्गां दुर्गमां देवी दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्॥ २५॥

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति—शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमंष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः॥ २६॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥

॥ नवार्णविधिः ॥

विनियोगः—श्री गणपतिर्जयति 'ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।'

ऋषिदिन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णि-गनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्ती-देवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ। हाथों को शुद्ध करें—'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'।

करन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये।

दिङ्न्यासः

दिशा प्रणाम—ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ १॥

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ २॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ ३॥

'**ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः**' इस मन्त्रसे माला की पूजा करे—

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

'**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**' इस मन्त्र का १ माला जप करें—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

सप्तशतीन्यासः

विनियोगः—प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि,

नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्युजःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रमणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ मध्यमाभ्यां नमः॥
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा०—हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि०—शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च०—शिखायै वषट्।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि०—कवचाय हुम्।
ॐ खड्गशूलगदादीनि०—नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे०—अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

अथ श्रीदुर्गासप्तशती

प्रथमोऽध्यायः

विनियोगः—ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकाली-प्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥
ॐ नमश्चण्डिकायै।

'ॐ' ऐं मार्कण्डेय उवाच॥ १॥

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम॥ २॥
महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयोरवेः॥ ३॥
स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले॥ ४॥
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा॥ ५॥
तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः॥ ६॥

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः॥ ७॥
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः॥ ८॥
ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्॥ ९॥
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम्॥ १०॥
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे॥ ११॥
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्॥ १२॥
मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः॥ १३॥
मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः॥ १४॥
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्॥ १५॥
संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः॥ १६॥
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः॥ १७॥
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्॥ १८॥

प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्॥ १९॥

वैश्य उवाच॥ २०॥

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले॥ २१॥
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्॥ २२॥
वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्॥ २३॥
प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं न तु साम्प्रतम्॥ २४॥
कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः॥ २५॥

राजोवाच॥ २६॥

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः॥ २७॥
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्॥ २८॥

वैश्य उवाच॥ २९॥

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः॥ ३०॥
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः॥ ३१॥
पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते॥ ३२॥
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते॥ ३३॥
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्॥ ३४॥

मार्कण्डेय उवाच॥ ३५॥

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ॥ ३६॥
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम्॥ ३७॥
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ॥ ३८॥

राजोवाच॥ ३९॥

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्॥ ४०॥
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि॥ ४१॥
जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः॥ ४२॥
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ॥ ४३॥
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि॥ ४४॥
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता॥ ४५॥

ऋषिरुवाच॥ ४६॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे॥ ४७॥
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे॥ ४८॥
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम्॥ ४९॥
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्॥ ५०॥

मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु:॥ ५१॥
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति॥ ५२॥
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेता न् किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः॥ ५३॥
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः॥ ५४॥
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा॥ ५५॥
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्॥ ५६॥
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी॥ ५७॥
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी॥ ५८॥

राजोवाच॥ ५९॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्॥ ६०॥
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा॥ ६१॥
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर॥ ६२॥

ऋषिरुवाच॥ ६३॥

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्॥ ६४॥
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा॥ ६५॥

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते॥ ६६॥
आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ॥ ६७॥
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः॥ ६८॥
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः॥ ६९॥
विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्॥ ७०॥
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥ ७१॥

ब्रह्मोवाच॥ ७२॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारःस्वरात्मिका॥ ७३॥
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः॥ ७४॥
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्॥ ७५॥
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने॥ ७६॥
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः॥ ७७॥
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी॥ ७८॥

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा॥ ७९॥
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा॥ ८०॥
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी॥ ८१॥
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके॥ ८२॥
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्॥ ८३॥
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च॥ ८४॥
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता॥ ८५॥
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधु कैटभो।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु॥ ८६॥
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥ ८७॥

ऋषिरुवाच॥ ८८॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा॥ ८९॥
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः॥ ९०॥
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः॥ ९१॥

एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ ९२ ॥
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥ ९३ ॥
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ९४ ॥
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ ९५ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ ९६ ॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥ ९७ ॥
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥ ९८ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥ १०० ॥
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ १०१ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १०२ ॥

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ १०३ ॥
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ ऐं ॐ ॥ १०४ ॥

इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः—ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

'ॐ ह्रीं' ऋषिरुवाच॥ १॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे॥ २॥
तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः॥ ३॥
ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ॥ ४॥
यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्॥ ५॥
सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति॥ ६॥
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना॥ ७॥

एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम्॥ ८॥
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ॥ ९॥
ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च॥ १०॥
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत॥ ११॥
अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्॥ १२॥
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा॥ १३॥
यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा॥ १४॥
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः॥ १५॥
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका॥ १६॥
तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा॥ १७॥
भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा॥ १८॥

ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः॥ १९॥
शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः॥ २०॥
शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी॥ २१॥
वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्॥ २२॥
कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्॥ २३॥
समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्॥ २४॥
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च॥ २५॥
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्॥ २६॥
अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्॥ २७॥
अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्॥ २८॥
अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च॥ २९॥

ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्॥ ३०॥
नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा॥ ३१॥
सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः॥ ३२॥
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे॥ ३३॥
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्॥ ३४॥
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः॥ ३५॥
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः॥ ३६॥
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा॥ ३७॥
पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्॥ ३८॥
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्॥ ३९॥
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः॥ ४०॥

युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः॥ ४१॥
अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः॥ ४२॥
अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः॥ ४३॥
वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
विडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः॥ ४४॥
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः॥ ४५॥
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा॥ ४६॥
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा॥ ४७॥
युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षुपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे॥ ४८॥
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका॥ ४९॥
लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः॥ ५०॥
मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी॥ ५१॥
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका॥ ५२॥

त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्त्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः॥ ५३॥
नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे॥ ५४॥
मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः॥ ५५॥
खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्॥ ५६॥
असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे॥ ५७॥
विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः॥ ५८॥
केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे॥ ५९॥
श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे॥ ६०॥
शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः॥ ६१॥
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः॥ ६२॥
कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः॥ ६३॥
कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः॥ ६४॥

पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः॥ ६५॥
शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्॥ ६६॥
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्॥ ६७॥
स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति॥ ६८॥
देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि॥ ॐ॥ ६९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

तृतीयोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्॥ २॥

स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः॥ ३॥
तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्॥ ४॥
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः॥ ५॥
सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः॥ ६॥
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्॥ ७॥
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः॥ ८॥
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात्॥ ९॥
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः॥ १०॥
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः॥ ११॥
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्॥ १२॥
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्॥ १३॥
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा॥ १४॥

युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः॥ १५॥
ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्॥ १६॥
उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः॥ १७॥
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्॥ १८॥
उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी॥ १९॥
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्॥ २०॥
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्॥ २१॥
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्॥ २२॥
वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले॥ २३॥
निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका॥ २४॥
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च॥ २५॥
वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः॥ २६॥

धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः॥ २७॥
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्॥ २८॥
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे॥ २९॥
ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत॥ ३०॥
तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः॥ ३१॥
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत॥ ३२॥
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्॥ ३३॥
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना॥ ३४॥
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्॥ ३५॥
सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम्॥ ३६॥

देव्युवाच॥ ३७॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥ ३८॥

ऋषिरुवाच॥ ३९ ॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्॥ ४०॥
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः॥ ४१॥
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः॥ ४२॥
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः॥ ४३॥
तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः॥ ॐ॥ ४४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

चतुर्थोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेविता सिद्धिकामैः॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।

तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ३ ॥
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ ४ ॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥
हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥
यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयान्ति सकलेषु मखेषु देवि।

स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च॥ ८॥
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवी॥ ९॥
शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री॥ १०॥
मेधासि देवी विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा॥ ११॥
ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण॥ १२॥
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन॥ १३॥
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।

विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य॥ १४॥
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥ १५॥
धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन॥ १६॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥ १७॥
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि॥ १८॥
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी॥ १९॥
खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।

यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥ २०॥
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्॥ २१॥
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि॥ २२॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते॥ २३॥
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ २४॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ २५॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ २६॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ २७॥

ऋषिरुवाच॥ २८॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः॥ २९॥

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्॥ ३०॥

देव्युवाच॥ ३१॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्॥ ३२॥

देवा ऊचुः॥ ३३॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते॥ ३४॥
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि॥ ३५॥
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने॥ ३६॥
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके॥ ३७॥

ऋषिरुवाच॥ ३८॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप॥ ३९॥
इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी॥ ४०॥
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्याना तथा शुम्भनिशुम्भयोः॥ ४१॥
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते॥ ह्रीं ॐ॥ ४२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

पञ्चमोऽध्यायः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥

'ॐ क्लीं' ऋषिरुवाच॥ १॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्॥ २॥
तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च॥ ३॥
तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः॥ ४॥
हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्॥ ५॥
तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।
भवता नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः॥ ६॥
इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः॥ ७॥

देवा ऊचुः॥ ८॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ ९॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ १०॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ ११॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ १२॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ १३॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै॥१४॥ नमस्तस्यै॥१५॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ १६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै॥ १७॥ नमस्तस्यै॥ १८॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ १९॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ २०॥ नमस्तस्यै॥ २१॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ २२॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ २३॥ नमस्तस्यै॥ २४॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ २५॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ २६॥ नमस्तस्यै॥ २७॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ २८॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ २९॥ नमस्तस्यै॥ ३०॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ३१॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ३२॥ नमस्तस्यै॥ ३३॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ३४॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ३५ ॥ नमस्तस्यै॥ ३६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३७ ॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ३८ ॥ नमस्तस्यै॥ ३९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४० ॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ४१ ॥ नमस्तस्यै॥ ४२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४३ ॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै॥ ४५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४६ ॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ४७ ॥ नमस्तस्यै॥ ४८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४९ ॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ५० ॥ नमस्तस्यै॥ ५१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५२ ॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ५३ ॥ नमस्तस्यै॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५५ ॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ५६ ॥ नमस्तस्यै॥ ५७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५८ ॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६४ ॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७ ॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७० ॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ७१॥ नमस्तस्यै॥ ७२॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ७३॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥ ७४॥ नमस्तस्यै॥ ७५॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ७६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥ ७७॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै॥ ७८॥ नमस्तस्यै॥ ७९॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥ ८०॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥ ८१॥
या साम्प्रतं चौद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥ ८२॥

ऋषिरुवाच॥ ८३॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन॥ ८४॥
साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा॥ ८५॥
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः॥ ८६॥

शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते॥ ८७॥
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया॥ ८८॥
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः॥ ८९॥
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्॥ ९०॥
नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर॥ ९१॥
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति॥ ९२॥
यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे॥ ९३॥
ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः॥ ९४॥
विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्॥ ९५॥
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्॥ ९६॥
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः॥ ९७॥
मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे॥ ९८॥

निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी॥ ९९॥
एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते॥ १००॥

ऋषिरुवाच॥ १०१॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्॥ १०२॥
इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु॥ १०३॥
स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा॥ १०४॥

दूत उवाच॥ १०५॥

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥ १०६॥
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्॥ १०७॥
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्॥ १०८॥
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम्॥ १०९॥
क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्॥ ११०॥
यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने॥ १११॥

स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्॥ ११२॥
मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥ ११३॥
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज॥ ११४॥

ऋषिरुवाच॥ ११५॥

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्॥ ११६॥

देव्युवाच॥ ११७॥

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः॥ ११८॥
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा॥ ११९॥
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥ १२०॥
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु॥ १२१॥

दूत उवाच॥ १२२॥

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः॥ १२३॥
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका॥ १२४॥

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्॥ १२५॥
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि॥ १२६॥

देव्युवाच॥ १२७॥

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा॥ १२८॥
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत्॥ ॐ॥ १२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः॥ ५॥

षष्ठोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां।
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्॥ २॥
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम्॥ ३॥

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्॥ ४॥
तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा॥ ५॥

ऋषिरुवाच॥ ६॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ॥ ७॥
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः॥ ८॥
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्॥ ९॥

देव्युवाच॥ १०॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्॥ ११॥

ऋषिरुवाच॥ १२॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः॥ १३॥
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः॥ १४॥
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः॥ १५॥
कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान्॥ १६॥

केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्॥ १७॥
विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः॥ १८॥
क्षणेन् तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना॥ १९॥
श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः॥ २०॥
चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ॥ २१॥
हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु॥ २२॥
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्॥ २३॥
तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम्॥ ॐ॥ २४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोध्यायः॥ ६॥

सप्तमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमाला नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः॥ २॥
ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने॥ ३॥
ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः॥ ४॥
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा॥ ५॥
भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी॥ ६॥
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरिधाना शुष्कमांसातिभैरवा॥ ७॥
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा॥ ८॥
सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्॥ ९॥

पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्॥ १०॥
तथैव यौधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्॥ ११॥
एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत्॥ १२॥
तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि॥ १३॥
बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा॥ १४॥
असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा॥ १५॥
क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्॥ १६॥
शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः॥ १७॥
तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्॥ १८॥
ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला॥ १९॥
उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्॥ २०॥
अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा॥ २१॥

हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्॥ २२॥
शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्॥ २३॥
मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि॥ २४॥

ऋषिरुवाच॥ २५॥

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः॥ २६॥
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि॥ ॐ॥ २७॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्म्ये
चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

अष्टमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं
धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखै-
रहमित्येव विभावये भवानीम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः॥ २॥

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह॥ ३॥
अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः॥ ४॥
कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया॥ ५॥
कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम॥ ६॥
इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः॥ ७॥
आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम्॥ ८॥
ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत्॥ ९॥
धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिनानना॥ १०॥
तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः॥ ११॥
एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः॥ १२॥
ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः॥ १३॥

यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ॥ १४॥
हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते॥ १५॥
माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्त चन्द्ररेखाविभूषणा॥ १६॥
कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी॥ १७॥
तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ॥ १८॥
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम्॥ १९॥
नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः॥ २०॥
वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता।
प्राप्ता सहस्त्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा॥ २१॥
ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्॥ २२॥
ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी॥ २३॥
सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भभ्योः॥ २४॥
ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः॥ २५॥

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ॥ २६॥
बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः॥ २७॥
यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता॥ २८॥
तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता॥ २९॥
ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः॥ ३०॥
सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः॥ ३१॥
तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा॥ ३२॥
कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति॥ ३३॥
माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना॥ ३४॥
ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैयदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः॥ ३५॥
तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः॥ ३६॥
नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा॥ ३७॥

चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा॥ ३८॥
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः॥ ३९॥
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः॥ ४०॥
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः॥ ४१॥
युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्॥ ४२॥
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः॥ ४३॥
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः॥ ४४॥
ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम्॥ ४५॥
पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः॥ ४६॥
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्॥ ४७॥
वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः॥ ४८॥
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्॥ ४९॥

स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः॥५०॥
तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः॥५१॥
तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्॥५२॥
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु॥५३॥
मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना॥५४॥
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति॥५५॥
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्॥५६॥
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्॥५७॥
न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्॥५८॥
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः॥५९॥
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः॥६०॥

जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः॥ ६१॥
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप॥ ६२॥
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः॥ ॐ॥ ६३॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

नवमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि॥

'ॐ' राजोवाच॥ १॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम्॥ २॥
भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः॥ ३॥

ऋषिरुवाच॥ ४॥

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे॥ ५॥
हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया॥ ६॥

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः॥ ७॥
आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिका कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः॥ ८॥
ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः॥ ९॥
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ॥ १०॥
निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्॥ ११॥
ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्॥ १२॥
छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्॥ १३॥
कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्॥ १४॥
आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता॥ १५॥
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले॥ १६॥
तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्॥ १७॥
स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः॥ १८॥

तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्॥ १९॥
पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्त दैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना॥ २०॥
ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश॥ २१॥
ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः॥ २२॥
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ॥ २३॥
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः॥ २४॥
शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया॥ २५॥
सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते॥ २६॥
शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्त्रशः॥ २७॥
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह॥ २८॥
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा॥ २९॥
पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्॥ ३०॥

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान्॥ ३१॥
ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः॥ ३२॥
तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे॥ ३३॥
शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका॥ ३४॥
भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्॥ ३५॥
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि॥ ३६॥
ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्॥ ३७॥
कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः॥ ३८॥
माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि॥ ३९॥
खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे॥ ४०॥
केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः॥ ॐ॥ ४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

दशमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः॥ २॥
बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्धयसे यातिमानिनी॥ ३॥

देव्युवाच॥ ४॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः॥ ५॥
ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका॥ ६॥

देव्युवाच॥ ७॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव॥ ८॥

ऋषिरुवाच॥ ९॥

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्॥ १०॥

शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम्॥ ११॥
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः॥ १२॥
मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः॥ १३॥
ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः॥ १४॥
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्॥ १५॥
ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः॥ १६॥
तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्॥ १७॥
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः॥ १८॥
चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्॥ १९॥
स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्॥ २०॥
तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः॥ २१॥
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका॥ २२॥

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम्॥ २३॥
ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले॥ २४॥
स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया॥ २५॥
तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि॥ २६॥
स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्॥ २७॥
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः॥ २८॥
उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते॥ २९॥
ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः॥ ३०॥
अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः॥ ३१॥
जज्वलुश्चाग्नयःशान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः॥ ॐ॥ ३२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

एकादशोऽध्यायः

ध्यानम्

'ॐ' बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्
विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः॥ २॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥ ३॥

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये॥ ४॥

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्।
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥ ५॥

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः।
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।

त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः॥६॥
सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥७॥
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥८॥
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते॥९॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥१०॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥११॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥१२॥
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥१३॥
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते॥१४॥
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते॥१५॥
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते॥१६॥
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते॥१७॥

नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते॥ १८॥
किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ १९॥
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते॥ २०॥
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते॥ २१॥
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते॥ २२॥
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते॥ २३॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ २४॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥ २५॥
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥ २६॥
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव॥ २७॥
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥ २८॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥ २९॥
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥ ३०॥
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्॥ ३१॥
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥ ३२॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥ ३३॥
देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥ ३४॥
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥ ३५॥

देव्युवाच ॥ ३६ ॥

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्॥ ३७॥

देवा ऊचुः ॥ ३८ ॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥ ३९॥

देव्युवाच ॥ ४० ॥

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ॥ ४१॥
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी॥ ४२॥
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्॥ ४३॥
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः॥ ४४॥
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्॥ ४५॥
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा॥ ४६॥
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः॥ ४७॥
ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः॥ ४८॥

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्॥ ४९॥
दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले॥ ५०॥
रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः॥ ५१॥
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति॥ ५२॥
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्॥ ५३॥
भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥ ५४॥
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥ ॐ॥ ५५॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

'ॐ' देव्युवाच॥ १॥

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्॥ २॥
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः॥ ३॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्॥ ४॥
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्॥ ५॥
शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति॥ ६॥
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत्॥ ७॥
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम॥ ८॥
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्॥ ९॥
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च॥ १०॥
जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम्॥ ११॥
शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः॥ १२॥
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥ १३॥

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्॥ १४॥
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्॥ १५॥
शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम॥ १६॥
उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते॥ १७॥
बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्॥ १८॥
दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्॥ १९॥
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः॥ २०॥
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या॥ २१॥
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति॥ २२॥
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्॥ २३॥
तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः॥ २४॥
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः॥ २५॥

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः॥ २६॥
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे॥ २७॥
पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा॥ २८॥
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा॥ २९॥
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम॥ ३०॥

ऋषिरुवाच॥ ३१॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा॥ ३२॥
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा॥ ३३॥
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि॥ ३४॥
जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः॥ ३५॥
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्॥ ३६॥
तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति॥ ३७॥
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया॥ ३८॥

सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी॥ ३९॥
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते॥ ४०॥
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम्॥ ॐ॥ ४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

त्रयोदशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥ १॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्॥ २॥
विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः॥ ३॥
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्॥ ४॥
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा॥ ५॥

मार्कण्डेय उवाच॥ ६॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः॥ ७॥

प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च॥ ८॥
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः॥ ९॥
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्॥ १०॥
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहरौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ॥ ११॥
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः॥ १२॥
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका॥ १३॥

देव्युवाच॥ १४॥

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत्॥ १५॥

मार्कण्डेय उवाच॥ १६॥

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्॥ १७॥
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्॥ १८॥

देव्युवाच॥ १९॥

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्॥ २०॥
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति॥ २१॥
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः॥ २२॥

सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति॥ २३॥
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः॥ २४॥
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति॥ २५॥

मार्कण्डेय उवाच॥ २६॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्॥ २७॥
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः॥ २८॥
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥ २९॥
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥ क्लीं ॐ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

उपसंहारः

विनियोगः—श्रीगणपतिर्जयति। ॐ अस्य श्रीनिवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुपृछन्दोभ्योनमः, मुखे। महाकाली महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताभ्योनमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। कीलकाय नमः, नाभौ। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'—इति मूलेन करौ संशोध्य—

करन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये। 'एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्'

दिङ्न्यासः

दिशा प्रणाम—ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।

नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ १॥
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ २॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ ३॥

'ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः' माला की पूजा करें।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिण करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

नवार्ण मन्त्र का जप करें।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

करन्यासः

अङ्ग स्पर्श—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः। ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ शिरसे स्वाहा॥
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ शिखायै वषट्।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ कवचाय हुम्।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

❧ ❧ ❧

तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ १॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ २॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ ३॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ ४॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ ५॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ७॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ८॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ९॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १०॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ ११॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १२॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १३॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १४॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १७॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ १९॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २०॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २२॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २३॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २४॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २५॥

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥ २७॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ २८॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥ २९॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥ ३०॥

प्राधानिकं रहस्यम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता यथोक्त-फलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि॥ १॥

आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे॥ २॥

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप॥ ३॥
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता॥ ४॥
मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि॥ ५॥
तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा॥ ६॥
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि॥ ७॥
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा॥ ८॥
खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम्॥ ९॥
सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः॥ १०॥
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते॥ ११॥
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया॥ १२॥

इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्॥ १३॥
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ॥ १४॥
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ॥ १५॥
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी॥ १६॥
अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवा जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः॥ १७॥
इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ॥ १८॥
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्॥ १९॥
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते॥ २०॥
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्॥ २१॥
स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा॥ २२॥
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते॥ २३॥
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा॥ २४॥

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः॥ २५॥
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्॥ २६॥
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्॥ २७॥
अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्॥ २८॥
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः॥ २९॥
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्॥ ३०॥
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्॥ ॐ॥ ३१॥

॥ इति प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम्॥

वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते॥ १॥
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः॥ २॥
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया॥ ३॥

स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः॥ ४॥
खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत् ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ॥ ५॥
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्॥ ६॥
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी॥ ७॥
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा॥ ८॥
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी॥ ९॥
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्त्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात्॥ १०॥
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः॥ ११॥
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्॥ १२॥
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्॥ १३॥
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी॥ १४॥
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप॥ १५॥

एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी॥ १६॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय॥ १७॥
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्॥ १८॥
विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्॥ १९॥
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्॥ २०॥
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा॥ २१॥
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी॥ २२॥
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्॥ २३॥
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी॥ २४॥
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी॥ २५॥
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्॥ २६॥
अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः॥ २७॥

रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
(बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता॥
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।)
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना॥ २८॥
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्॥ २९॥
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम्॥ ३०॥
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः॥ ३१॥
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह॥ ३२॥
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः॥ ३३॥
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा॥ ३४॥
जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः॥ ३५॥
प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्॥ ३६॥
एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्॥ ३७॥
यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी॥ ३८॥

तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि॥ ३९॥

॥ इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्॥

मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्॥ १॥
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा॥ २॥
कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना॥ ३॥
या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्॥ ४॥
रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा॥ ५॥
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्॥ ६॥
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ॥ ७॥
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी।
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ॥ ८॥

खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा।
आध्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च॥ ९॥
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्॥ १०॥
(भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।)
अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना॥ ११॥
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥ १२॥
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया॥ १३॥
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्॥ १४॥
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता॥ १५॥
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती॥ १६॥
शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्॥ १७॥
भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा॥ १८॥
चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता॥ १९॥

तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता॥ २०॥
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।
इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप॥ २१॥
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया॥ २२॥
व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्॥ २३॥
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥ २४॥
देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्॥ २५॥
(एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि।
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

॥ इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम्॥

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥ १॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥ २॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवी परिपूर्णं तदस्तु मे॥ ३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥ ४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥ ५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥ ६॥
कामेश्वरी जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥ ७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवी त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥ ८॥

॥ श्रीदुर्गार्पणमस्तु॥

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥ १॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥ २॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥ ३॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥ ४॥
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥ ५॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥ ६॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्॥ ७॥
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः॥ ८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव॥ ९॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति॥ १०॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥ ११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥ १२॥

॥ इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥ १॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥ २॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥ ३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥ ४॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

॥ इति मन्त्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनी।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥ १॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि॥ २॥
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥ ३॥
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥ ४॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥ ५॥
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥ ६॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥ ७॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥ ८ ॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे
कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १ ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १४॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ १६॥

विन्ध्येश्वरी-स्तोत्रम्

निशुम्भ-शुम्भ-मर्दिनीं, प्रचण्ड-मुण्ड-खण्डिनीम्।
वने रणे प्रकाशिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ १॥
त्रिशूल-मुण्ड-धारिणीं, धरा-विघात-हारिणीम्।
गृहे-गृहे निवासिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ २॥
दरिद्र-दुःख-हारिणीं, सती-विभूति-धारिणीम्।
वियोग-शोक-हारिणीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ ३॥
लसत्सुलोल-लोचनीं, जने सदा प्रमोदनीम्।
कपाल-शूल-धारिणीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ ४॥
कराब्ज-दानदा-धरां, शिवा-शिवा-प्रदायिनीम्।
वरां वराननां शुभां, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ ५॥
कपीन्द्र-जामिनीप्रदां, त्रिधा-स्वरूप-धारिणीम्।
जले-थले-निवासिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ ६॥
विशिष्ट-शिष्ट-कारिणीम्, विशाल-रूप-धारिणीम्।
महोदरे विलासिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ ७॥
पुरन्दरादि-सेवितां, पुरादिवंश-खण्डिताम्।
विशुद्ध-बुद्धिकारिणीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥ ८॥

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ १॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी।
काश्मीरागरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ २॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ३॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी।
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ४॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ५॥

उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ६॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ७॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामं स्वादु पयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ८॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयहरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरीश्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ १०॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥ ११॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥ १२॥

श्रीकनकधारास्तोत्रम्

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥ १॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष-
मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध-
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ४ ॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदाभगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५ ॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ६ ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावा-
न्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसञ्च मकरालयकन्यकायाः ॥ ७ ॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा-
मस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ८॥
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं
कृपीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ९॥
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु
संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै॥ १०॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥ ११॥
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥ १२॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्द्वनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥ १३॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनाङ्गमानसै
स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥ १४॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥ १५॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्॥ १६॥

कमले कमलाक्षवल्लभे
त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥ १७॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः॥ १८॥

महिषासुरमर्दिनि-स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनी विश्व-विनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णु-विलासिनी जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठ-कुटुम्बिनि भूरि-कुटुम्बिनि भूतिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुख-मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ २॥

अयि जगदम्ब! मदम्ब कदम्बवन-प्रियवासिनि हासरते
शिखरि-शिरोमणि-तुङ्गहिमालय -शृंगनिजालय-मध्यगते।
मधुमधुरे मधु-कैटभ-भञ्जिनि कैटभ-भञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ३॥

अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्डित-शुण्ड गजाधिपते
रिपुगज-गण्ड - विदारण-चण्डपराक्रम-शुण्डमृगाधिपते-
निजभुजदण्ड- निपातितखण्ड- विपाटितमुण्ड-भटाधिपते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ४॥

अयि रणदुर्मद - शत्रुवधोदित-दुर्धर-निर्जर-शक्तिभृते
चतुर- विचार -धुरीण-महाशिवदूतकृत-प्रमथाधिपते।
दुरित- दुरीह -दुराशय- दुर्मति - दानवदूत- कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ५॥

अयि शरणागत - वैरिवधूवर -वीरवराभय-दायकरे
त्रिभुवनमस्तक- शूलविरोधि-शिरोधि-कृतामल-शूलकरे।

दुमि-दुमितामर -दुन्दुभिनाद-महार्मुखरीकृत-तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ६॥

अयि निजहुंकृति -मात्रनिराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते
समरविशोषितशोणित बीजसमुद्भवशोणितबीजलते।
शिव-शिव-शुम्भ-निशुम्भ महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ७॥

धनुरनुषङ्ग - रणक्षणसङ्ग - परिस्फुरदङ्ग-नटत्कटके
कनक-पिशङ्ग -पृषत्कनिषङ्ग -रसद्भटशृङ्ग-हताबटुके।
कृतचतुरङ्गबल - क्षितिरङ्ग -रटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ८॥

जय जय जप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
भण-भण- भिञ्झिमि -भिंकृत-नूपुर-शिञ्जित-मोहित-भूतपते।
नटित-नटार्ध-नटी-नटनायक नटितनाट्य सुगानरते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ९॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनःसुमनः सुमनोहर-कान्तियुते
श्रित-रजनी रजनी रजनी रजनी -रजनीकर-वक्त्रवृते।
सुनयन- विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रम-रभ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १०॥

सहित -महाहव-मल्ल-मतल्लिक-मल्लित-रल्लक-मल्लरते
विरचितवल्लिकपल्लिक-मिल्लिक भिल्लिकभिल्लिकवर्गवृते।
सितकृतफुल्ल -समुल्लसितारुण- तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ ११॥

अविरल- गण्डगलन् - मदमेदुर -मत्त-मतङ्गज-राजपते
त्रिभुवन-भूषण -भूत-कलानिधिरूप-पयोनिधि-राजसुते।

अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन मन्थर-राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १२॥
कमलदलामल-कोमलकान्ति -कलाकलितामल-भाललते
सकल-विलास-कलानिलय -क्रमकेलिचलत् -कलहंसकुले।
अलिकुलसंकुल कुवलयमण्डल मौलिमिलद्ब कुलालि कुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १३॥
करमुरलीरव- वीजित -कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
मिलितपुलिन्द -मनोहरगुञ्जित-रञ्जित शैलनिकुञ्जगते।
निजगुण-भूतमहाशबरीगण -सद्गुणसम्भृत -केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १४॥
कटितटपीत- दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
जितकनकाचल -मैलिपदोर्जित -निर्भरकुञ्जर -कुम्भकुचे।
प्रणतसुराऽसुर -मौलिमणि -स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १५॥
विजित -सहस्त्रकरैक -सहस्त्रकरैक -सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक -संगरतारक -सङ्गरतारक -सूनुसुते।
सुरथसमाधि -समानसमाधि-समाधिसमाधि-सुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १६॥
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमित्यनु शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १७॥

कनकलसत्-कलसिन्धुजलैरनुसिंचिनुते गुणरङ्गभुवम्
भवति स किं न शचीकुचकुम्भ-तटीपरिरम्भ-सुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १८॥
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं सकलं ननुकूलयते
किमु पुरुहूत- पुरीन्दुमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामदने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १९॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयाऽसि यथासि तथाऽनुमतासि रते।
यदुचितमत्र भवत्युररीकुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ २०॥

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ १॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ २॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ ३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ ४॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ ५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहंशरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ ६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ ७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥ ८॥

प्रकीर्णस्तोत्राणि

श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये॥ १॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥ २॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥ ३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥ ४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्॥ ५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्॥ ६॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥ ७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥ ८॥

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम्

विनियोग—ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप् छन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। आदित्य-हृदयभूत-ब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यास—ॐ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अङ्गन्यास—ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्।

॥ अथ गायत्री मन्त्रं जपेत्॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥ १॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा॥ २॥

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे॥ ३॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥ ४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥ ५ ॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥ ६ ॥
सर्वदेवतात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः॥ ७॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥ ८॥
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥ ९॥
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः॥ १०॥
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्॥ ११॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥ १२॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः॥ १३॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥ १४॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥ १५॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥ १६॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥ १७॥
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥ १८॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥ १९॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥ २०॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥ २१॥
नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥ २२॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥ २३॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषे परमप्रभुः॥ २४॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥ २५॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥ २६॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्॥ २७॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा।
धरयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥ २८॥
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥ २९॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्॥ ३०॥
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥ ३१॥

चाक्षुषोपनिषद्

ॐ अथातश्चाक्षुषीं पठितसिद्धविद्यां चक्षूरोगहरां व्याख्यास्यामः। यच्चक्षुरोगाः सर्वतो नश्यन्ति। चाक्षुषी दीप्तिर्भविष्यतीति।

तस्याश्चाक्षुषी विद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः। गायत्री छन्दः। सूर्यो देवता। चक्षू रोग निवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुस्तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षू रोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाऽहं अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वोजन्मोपार्जितानि चक्षूः प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकराय। ॐ नमोऽमृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे। ॐ खेचराय नमः। ॐ महते नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ

असतो मा सद्गमय, तमसोमाज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिर प्रतिरूपः।

ॐ विश्वरूप घृणिनं जातवेदसं
हिरणमयं पुरुषं ज्योतिरूपं तपन्तम्।
विश्वस्य योनिं प्रतपन्तमुग्रं
पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः॥

ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिन्यहोवाहिनी स्वाहा। ॐ वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः। अपध्वान्तमूर्णूहि पूर्द्धिचक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्॥ पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। महाविष्णवे नमः॥

य इमां चक्षुमतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति।

॥ श्री कृष्ण यजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा॥

चन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्

विनियोग—अस्य श्रीचन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, चन्द्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥ चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते। यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः॥ १॥ सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः। लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः॥ २॥ शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः। आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः॥ ३॥ जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसंभवः। नक्षत्र-नायकः शंभुशिरश्चूडामणिर्विभुः॥ ४॥ तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः

पठेत्। प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति॥५॥ तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत्सर्वं समीहितम्। ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा॥६॥ इति श्रीचन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

अङ्गारकस्तोत्रम्

विनियोग—अ श्रीअङ्गारकस्तोत्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः, भौमप्रतीत्यर्थं जपे विनियोगः। अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः। कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः॥१॥ ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः। विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः॥२॥ सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः। लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधकः॥३॥ रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः। नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः॥४॥ ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति। धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम्॥५॥ वंशोद्द्योतकरं पुत्रं लभते नात्र संशयः। योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः॥६॥ सर्वा नश्यति पीडा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्॥७॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे अङ्गारकस्तोत्रं संपूर्णम्॥

बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

विनियोग—अस्य श्रीबुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः। प्रियङ्गुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥१॥ ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः। विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः॥२॥

चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः। ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः॥ ३॥ लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः। पञ्चविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्॥ ४॥ स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति। तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्॥ ५॥ इति श्रीपद्मपुराणे बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

बृहस्पतिस्तोत्रम्

विनियोग—अस्य श्रीबृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बृहस्पतिर्देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थं पाठे विनियोगः॥ गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः। वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा॥ १॥ सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः। दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुड्मलद्युतिः॥ २॥ लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः। तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवैद्यपितामहः॥ ३॥ भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्। अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः॥ ४॥ जीवेद्वर्षशतं मर्त्यो पापं नश्यति नश्यति। यः पूजयेद्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः॥ ५॥ पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्। ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद्गुरोः॥ ६॥ इति स्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रं संपूर्णम्॥

शुक्रस्तवराजः

विनियोग—अस्य श्रीशुक्रस्तवराजस्य प्रजापतिर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थं पठे विनियोगः॥ नमस्ते भार्गवश्रेष्ठ दैत्यदानवपूजित। वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च वृष्टिकर्त्रे नमो नमः॥ १॥ देवयानिपितस्तुभ्यं वेदवेदांगपारग। परेण तपसा शुद्धः शंकरो

लोकसुंदरः॥ २॥ प्राप्तो विद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः। नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे॥ ३॥ तारामंडलमध्यस्थ स्वभासाभासितांबर। यस्योदये जगत्सर्वं मंगलार्हं भवेदिह॥ ४॥ अस्तं याते ह्यरिष्टं स्यात्तस्मै मंगलरूपिणे। त्रिपुरवासिनो दैत्यान् शिवबाणप्रपीडितान्॥ ५॥ विद्ययाऽजीवयच्छुक्रो नमस्ते भृगुनंदन। ययातिगुरवे तुभ्यं नमस्ते कविनंदन॥ ६॥ बलिराज्यप्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः। भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वगीर्वाणवंदित॥ ७॥ जीवपुत्राय यो विद्यां प्रादात्तस्मै नमो नमः। नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि॥ ८॥ नमः कारणरूपाय नमस्ते कारणात्मने। स्तवराजमिमं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः॥ ९॥ यः पठेच्छृणुयाद्वापि लभते वांछितं फलम्। पुत्रकामो लभेत्पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियम्॥ १०॥ राज्यकामो लभेद्राज्यं स्त्रीकामः स्त्रियमुत्तमाम्। भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहितैः॥ ११॥ अन्यवारे तु होरायां पूजयेद्भृगुनन्दनम्। रोगार्तो मुच्यते रोगाद्भयार्तो मुच्यते भयात्॥ १२॥ यद्यत्प्रार्थयते जन्तुस्तत्तत्प्राप्नोति सर्वदा। प्रातःकाले प्रकर्तव्या भृगुपूजा प्रयत्नतः। सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाच्छिवसन्निधिम्॥ १३॥ इति श्रीब्रह्मयामले शुक्रस्तवराजः संपूर्णः॥

❧ ❧ ❧

शनैश्चरस्तोत्रम्

विनियोग—अस्य श्री शनैश्चरस्तोत्रस्य। दशरथे ऋषिः। शनैश्चरो देवतां। त्रिष्टुप छंदः। शनैश्चरप्रीत्यर्थे जप विनियोगः। दशरथ उवाच॥ कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरिः। नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ १॥ सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च। पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै०॥ २॥ नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृङ्गाः। पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै०॥ ३॥ पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन

तस्मै० ॥ ४॥ तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा। प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे न तस्मै० ॥ ५॥ प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम्। यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै० ॥ ६॥ अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्। गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै० ॥ ७॥ स्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकीः। एकस्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्मै० ॥ ८॥ शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च। पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते॥ ९॥ कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्लादेन संस्तुतः॥ १०॥ एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति॥ ११॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे श्रीशनैश्चरस्तोत्रं संपूर्णम्॥

राहुस्तोत्रम्

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः। अर्धकायः सदाक्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः॥ १॥ रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः। ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः॥ २॥ कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः। विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः॥ ३॥ ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः। पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः॥ ४॥ यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्। आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा॥ ५॥ ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्। सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः॥ ६॥ इति श्रीस्कंदपुराणे राहुस्तोत्रं संपूर्णम्॥

केतुर्पञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

केतुः कालः कलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः। लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः॥१॥ रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्धधृक्। पलाशधूमसंकाशश्चित्रयज्ञोपवीतधृक्॥२॥ तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः। पञ्चविंशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत्॥३॥ तस्य नश्यति बाधा च सर्वकेतुप्रसादतः। धनधान्यपशूनां च भवेद्वृद्धिर्न संशयः॥४॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे केतोः पञ्चविंशतिनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः॥ ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे रविः॥१॥ रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे विधुः॥२॥ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः॥३॥ उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः॥४॥ देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः। अनेकशिष्यसंपूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः॥५॥ दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः॥६॥ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥७॥ महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी॥८॥ अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः। उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः॥९॥ इति ब्रह्माण्डपुराणोक्तं नवग्रहपीडाहरस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीकालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ १॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ २॥

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ३॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ४॥

धर्मसेतुपालकं स्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाश शोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ५॥

रत्नपादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्।

मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ६॥

अट्टहास भिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपात नष्टपाप जालमुग्रशासनम्।

अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ७॥

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।

नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ८॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्।

शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनम्
प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम्॥ ९॥

॥ श्रीमच्छङ्कराचार्यविरिचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

नवग्रह-मण्डल-पूजन

ग्रहों की स्थापना के लिये ईशानकोण में नौ कोष्ठक बनाये। बीच वाले कोष्ठक में सूर्य, अग्निकोणमें चन्द्र, दक्षिणमें मङ्गल, ईशानकोण में बुध, उत्तरमें बृहस्पति, पूर्वमें शुक्र, पश्चिममें शनि, नैर्ऋत्यकोणमें राहु और वायव्यकोण में केतु की स्थापना करे।

१. सूर्यम् (मध्य में गोलाकार, लाल)—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि।

२. चन्द्रम् (अग्निकोण में, अर्धचन्द्र, श्वेत)—ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि।

३. मंगलम् (दक्षिणमें, त्रिकोण, लाल)—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजससमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि।

४. बुधम् (ईशानकोणमें, हरा, धनुष)—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि, स्थापयामि।

५. बृहस्पतिम् (उत्तरमें पीला, अष्टदल)—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

देवानां च मुनीनां च गुरु काञ्चनसंनिभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि।

६. शुक्रम् (पूर्वमें श्वेत चतुष्कोण)—ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि।

७. शनिम् (पश्चिममें, काला मनुष्य)—ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि।

८. राहुम् (नैर्ऋत्यकोणमें, काला मकर)—ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि।

९. केतुम् (वायव्यकोणमें, कृष्ण खड्ग)—ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि।

गायत्री-कवच

विनियोग—ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजम्, भुवः शक्तिः, स्वः कीलकम्, गायत्रीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ध्यान्—

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम्।
सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्॥
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम्।
वराभयाङ्कुशकशाहेमपात्राक्षमालिकाम्॥
शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं वराम्।
सितपङ्कजसंस्थां च हंसारूढां सुखस्मिताम्॥
ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवचं जपेत्।

गायत्रीकवचका पाठ करे

ॐ ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र! महाप्राज्ञ! गायत्रीकवचं शृणु।
यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत् क्षणात्॥
सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी।
ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी॥
कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके।
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ॥
द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्ती।
सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चन्द्रहासिनी॥
चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी।
स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी॥
उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया।
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी॥
पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु।
ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु॥
जङ्घयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका।
सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गुलीषु च॥
सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा।
इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम्।
पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम्॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः॥

सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्।
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थश्चतुर्विधान्॥

॥ श्रीविश्वामित्रसंहितोक्तं गायत्रीकवचं सम्पूर्णम्॥

ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम्

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्माविरोधकः॥ १॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥ २॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥ ३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥ ४॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ ५॥
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पापि भवति क्वचित्॥ ६॥
अङ्गारक महाभाग भगवन् भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय॥ ७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये ह्यमृत्यवः।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥ ८॥
अतिवक्र दुराराध्य भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्य रुष्टो परसि तत्क्षणात्॥ ९॥

विरिञ्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः॥ १०॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः॥ ११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा॥ १२॥

हवनम्

कुंडस्थदेवतापूजन प्रयोग

आचम्य प्राणानायम्य। संकल्पः अद्येत्यादि ..... शुभपुण्यतिथौ मया प्रारब्धस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं अस्मिन् कुंडे कुडस्थदेवतानां आवाहनं पूजनं तथा च पंचभूसंस्कारपूर्वकं अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये। कुशैः कुंडसंमार्जनम् कुशोदकेन प्रोक्षणम्—ॐ आपो हि० कुंडं स्पृष्ट्वा आवाहयेत्-आवाहयामि तत् कुंडं विश्वकर्मविनिर्मितम्। शरीरं यच्च ते दिव्यं अग्न्यधिष्ठानं अद्भुतम्॥ ॐ भूभुर्वः स्वः कुंडाय नमः कुंडं आवाहयामि स्थाप०। ततः प्रार्थयेत्॥ ये च कुंडे स्थिता देवाः कुंडांगे याश्च देवता। ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु नः॥ कुंडमध्ये देवान् आवाहयेत् (अक्षतान् आदाय)

विश्वकर्मा आवाहनम्

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथाऽसत्। उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्कर्मण एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे॥ कुण्डमध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम् आ० स्था०॥ भो विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ततः प्रार्थयेत्॥ ब्रह्म वक्त्रं

भुजौ क्षत्रमूरू वैश्यः प्रकीर्तितः। पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः। अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः॥ नाशय त्वखिलांस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते॥

मेखलायोनिकण्ठनाभिवास्तुदेवतानाम् आवाहनम्

उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालंकृतायां विष्णु प्रार्थनम्—ॐ इदं विष्णु० विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन। विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुंडे संनिहितो भव॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आ० स्था०। भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ।

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालंकृतायां **ब्रह्म प्रार्थनम्—ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमत-सुरूचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठा सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥** हंसपृष्ठसमारूढ आदिदेव जगत्पते। रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः० ब्रह्मन् आ० स्था० भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ॥

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालंकृतायां **रुद्र प्रार्थनम्-ॐ नमस्ते रुद्र०** गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर। आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षार्थं रक्षसां गणात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रम् आ० स्था० भो रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ॥

योन्यावाहनम्

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मा त्वा हिꣳसीन्मा मा हिꣳसीः॥ आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके॥ मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव॥ जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः योनिमावा० स्थाप०॥ भो जगदुत्पत्तिके मनोभवयुते योनि इहागच्छ इह तिष्ठ॥ प्रार्थयेत्॥ सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः॥ चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः॥ पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि॥ योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका॥ मनोभवयुता देवी रतिसौख्यप्रदायिनी। मोहयित्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते॥ योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी॥ कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः॥

कण्ठदेवतावाहनम्

ॐ नीलग्रीवाः शितिकाण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः। तेषाꣳसहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ कुंडस्य कंठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः। अस्मिन् आवाहये रुद्रं शितिकंठं कपालिनम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कंठेरुद्राय०॥ **प्रार्थयेत्**—कंठमंगलरूपेण सर्वकुंडे प्रतिष्ठितः। परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा॥

नाभ्यावाहनम्

ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभ्याग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥ पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती। आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयामि ताम्। ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यै नमः नाभिम् आ० स्था०॥ भो नाभे इहागच्छ इहतिष्ठ॥ प्रार्थयेत्—नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता। अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव॥

कुण्डमद्ये नैर्ऋत्यकोणे **वास्तुपुरुषमावाहयेत्**

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः। यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्। देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषम् आवा० स्थाप०॥ भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इहतिष्ठ॥ प्रार्थयेत्। यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमङ्गलम्। व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम्॥ पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम्॥ वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे॥ एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाह्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत्। हस्तेऽक्षतानादय। **ॐ मनोजूतिर्जु०।** ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ता; सर्वे कुण्डस्थदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवेयुः॥ ततो गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तु पुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्योनमः सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०॥ इति सम्पूज्य। एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं कुण्डाद्बहिः संस्थाप्य **बलिदानं कुर्यात्।** हस्ते जलं गृहीत्वा। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः यथाशक्ति अमुं दध्योदनबलिं सम०॥ पुनर्जलं गृहीत्वा॥ अनेन यथाशक्ति विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तानां कुण्डस्थदेवाना पूजनेन बलिदानेन च विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः प्रीयंतां न मम।

भूमिकूर्मानन्तपूजनम्

ॐ भूरसि० ॐ भूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः० **ॐ वस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै देवा अधि ब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः॥** ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्माय नमः **ॐ स्योना पृथिवि०** ॐ भूर्भुवः स्वः अनंताय० ॐ भूर्भुवः स्वः भूमिकूर्मानन्तदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे०

पञ्चभूसंस्कारपूर्वकाग्निप्रतिष्ठापनप्रयोगः

आचार्यः कश्चिद्विप्रो वा यजमानानुज्ञया हस्ते जलं गृहीत्वा। अस्मिन्कुण्डे (यजमानानुज्ञया) पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये। इति संकल्प्य-दक्षिणहस्ते दर्भपुञ्जं गृहित्वोत्थाय दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं त्रिवारं परिसमूहनं कुर्यात्। तद्यथा। दर्भैः **परिसमूह्य परिसमूह्य परिसमूह्य।** एवं परिसमूहनं विधाय कुण्डाद्बहिः पूर्वस्यामीशान्यां वा दर्भत्यागं कुर्यात्। ततो दक्षिणहस्तेन गोमयमादाय पूर्ववत् दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं गोमयेनोपलिपेत्॥ तद्यथा। गोमयेन **उपलिप्य उपलिप्य उपलिप्य।** एवं त्रिवारम् उपलेपनं कृत्वा हस्तं प्रक्षाल्य दक्षिणहस्तेन स्रुवामादाय पूर्ववद्दक्षिणत आरम्भोदकसंस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं स्रुवमूलेन त्रिरुल्लेखनं कुर्यात्॥ तद्दथा स्रुवमूलेन उल्लिख्य उल्लिख्य उल्लिख्य एवं त्रिवारमुल्लेखनं कृत्वाऽनामिकाङ्गुष्ठेन पूर्ववत् कुण्डतः पांसूनामुद्धरणं विदध्यात्। तद्यथा। अनामिकाङ्गुष्ठन **उद्धृत्य उद्धृत्य उद्धृत्य।** एवं त्रिवारं पांसूनामुद्धरणं कृत्वा तान् प्राच्यांक्षिप्त्वा पूर्ववत् न्युब्जपाणिना जलेन त्रिवारम् अभ्युक्षणं कुर्यात्॥ तद्यथा। उदकेन अभ्युक्ष्य अभ्युक्ष्य अभ्युक्ष्य। ततोऽग्निं स्थापयेत्। बहुपशोर्वैश्यस्य गृहात् श्रोत्रियागारात्

सूर्यकान्तसम्भूतात् स्वकीयगृहाद्वा सुवासिन्या स्त्रिया आनीतं निर्धूमम् अन्यताम्रादिपात्रेणाच्छादितम् अग्निं कुण्डस्य आग्नेय्यां दिशि निधाय आच्छादितं पात्रम् उद्घाट्य **"हुं फट्"** इति क्रव्यादांशम् अग्निं नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य अग्निं कुण्डस्य उपरि त्रिवारं भ्रामयित्वा। ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह॥ ततोऽग्न्यानीतपात्रे साक्षतोदकं निषिच्य तत्र शिष्टाचारात्किञ्चिद्यथाशक्ति हिरण्यं रौप्यद्रव्यं वा निक्षिप्य तत् द्रव्यं यजमानपत्न्यै दद्यात्। ततोऽग्नौ आवाहनादिमुद्राः प्रदर्शयेत्। भो अग्ने त्वम् आवाहितो भव। भो अग्ने त्वं संस्थापितो भव। भो अग्ने त्वं सन्निहितो भव। भो अग्ने त्वं संन्निरुद्धो भव। भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव॥ भो अग्ने त्वम् अवगुण्ठितो भव। भो अग्ने त्वम् अमृतीकृतो भव। भो अग्ने त्वम् परमीकृतो भव॥ इति ताः ताः मुद्राः प्रदर्श्य। अग्निम् इन्धनप्रक्षेपेण प्रज्वलितं कृत्वा करसम्पुटौ विधाय अग्निध्यानं कुर्यात्।

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या२ आ विवेश॥

रुद्रतेजः समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्। षण्णेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम्॥ १॥ याम्यमार्गे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्। स्रुवं स्रुचञ्च शक्तिञ्च ह्यक्षमालाञ्च दक्षिणे॥ २॥ तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रञ्च वामके बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम्॥ ३॥ याम्यायने चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखम्। द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम्॥ ४॥ आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैवं हुताशनम्। गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः॥ ५॥ त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता। रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्॥ ६॥ स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम्। शतमङ्गलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम्॥ ७॥ त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते। आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव॥ भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः ललाटजिह्व मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव॥ इति ध्यात्वा हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वाऽवाहयेत्। तद्यथा। ॐ मनोजूतिर्जु०॥ ९॥ ॐ शतमङ्गलनामाग्ने

सुप्रतिष्ठितो वरदो भव॥ ततो गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय पूजनं कुर्यात्। ॐ भूर्भुवः स्वः शतमङ्गलनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०। इति कुण्डस्य नैर्ऋत्यकोणे मध्ये वा अग्निं सम्पूज्य प्रार्थयेत्॥ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥ इति अग्निप्रतिष्ठापनम्॥

कुशकण्डिका

अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम्। उत्तरतः प्रणीतासनम्। वायव्यां द्वितीयमासनम्। दक्षिणे तत्र ब्रह्मोपवेशनम्। यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव भवामि इति प्रतिवचनम्। ब्रह्मानुज्ञातः उत्तरे **प्रणीताप्रणनम्।** ब्रह्मन् अपः प्रणेश्यामि। ॐ प्रणय। इति ब्रह्मानुज्ञात, वामकरेण प्रणीतां संगृह्य दक्षिणकरेण जलं प्रपूर्य भूमौ वायव्यासने निधाय आलभ्य उत्तरतोऽग्ने स्थापयेत्। बहिर्प्रदक्षिणग्ने

परिस्तरणम्

तच्च त्रिभिः त्रिभिः दर्भैः एकमुष्ट्या वा-तच्च प्राक् उदगग्रेः। दक्षिणतः प्रागग्रैः। प्रत्यक् उदग् उग्रैः उत्तरतः प्राग् अग्रैः।

अर्थवत् पात्रासादनम्

पवित्रच्छेदना दर्भाः त्रयः। पवित्र द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त पंच वा। समिधस्तिस्त्र। स्रुक्। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि। दक्षिणा वरो वा।

पवित्रकरणम्

द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वयोर्मूलेन द्वो कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य अनामिकांगुष्ठेन द्वयोरग्रे छेदयेत्। द्वे ग्राह्ये। त्रीणि अन्यच्च उत्तरतः क्षिपेत्। **प्रोक्षणीपात्रे** प्रणीतोदकमासिच्य पात्रान्तरेण चतुर्वारं जलं प्रपूर्य वामकरे पवित्राग्र दक्षिणेपवित्रयोमूलं धृत्वा मध्यत पवित्राभ्यांत्रिरुत्पवनम् प्रोक्षणीपात्रजलस्य। प्रोक्षणीनां सव्यहस्ते करणम्।

दक्षिणहस्तं उत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकांगुल्योः मध्यपर्वाभ्यां अपां त्रिरुद्दिंगनम्। प्रणीतोदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरु स्थाल्या प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। स्रुचः प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तंडुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। प्रणीताग्न्योर्मध्ये असञ्चरदेशे प्रोक्षणीनां निधानम्। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां तण्डुलप्रक्षेपः। तस्य त्रिः प्रक्षालनम्। चरुपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य दक्षिणतः ब्रह्मणा आज्याधिश्रयणं मध्ये चरोरधिश्रयणं आचर्येण युगपत्। ज्वलितोल्मुकेन उभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुवस्य **प्रतपनम्।** सम्मार्गकुशैः सम्मार्जनम्। अग्रैः अग्रम्। मूलैः मूलम्। प्रणीतोदकेन अभ्युक्षणम्। पुनः प्रतपनम्। देशे निधानम्। आज्योद्वासनम्। चरोरुद्वासनम्। ततो वामकरे पवित्राग्रे दक्षिणे पवित्रयोर्मूले धृत्वा मध्यतः पवित्राभ्याम् आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्य निरसनम्। प्रोक्षण्याः प्रत्युत्पवनम्। **उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय** तिष्ठन् समिधोभ्याधाय। प्रोक्षण्युदकशेषेण सपवित्रहस्तेन अग्नेः ईशानकोणादारभ्य ईशानकोणपर्यंतं प्रदक्षिणवत् पर्युक्षणम्। हस्तस्य इतरथावृत्तिः। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणजान्वाच्य जुहोति। तत्र आघारौ आज्यभागौ च ब्रह्मणा अन्वारब्धः स्रुवेण जुहुयात्।

नोट : स्थापना हेतु आ० स्था० पू० एवं हवन हेतु स्वाहा का प्रयोग करें।

उच्चार्य – (आधारद्याज्यहुतायः)

ॐ प्रजापतये नमः	इदम् प्रजापतये न मम्।
ॐ इन्द्राय नमः	इदम् इन्द्राय न मम्।
ॐ अग्नये नमः	इदम् अग्नये न मम्।
ॐ सोमाय नमः	इदम् सोमाय न मम्।
ॐ भू स्वाहा	इदमग्नये न मम्।

ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम्।

ॐ स्वः स्वाहा इद सूर्याय न मम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं अग्नये न मम्।

यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारणं भवेत्।
तद्वद्दैवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिणा॥

गणेशः—ॐ गणनान्त्वा० गणपतये स्वाहा।

गौर्यादि मातृणां हवनपूजनम्

गौरी—ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।

पद्माम्—ॐ हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च। आ रोहतं वरुण मित्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामादितिं दतिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि॥

शची—ॐ कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा॥

मेधा—ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥

सावित्री—ॐ उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे॥

विजया—ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँऽ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥

जया—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥

देवसेना—ॐ देवानां भद्रा०

स्वाध—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः । स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरो ऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥

स्वाहा—ॐ स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहारोन्तरिक्षात्स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ᳪ स्वाहा वातादारभे स्वाहा॥

मातरः—ॐ अदितिर्द्यौः०

लोकमातरः—ॐ पृषदश्वा ०

धृति—ॐ धृष्टिरस्य पाऽग्ने अग्निमामादं जहि निष्क्रव्यादᳪ सेधा देवयजं वह। ध्रुवमसि पृथिवीं दृ ᳪ ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय॥

पुष्टि—त्वष्टा तुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना। द्विपदा छन्द इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः॥

तुष्टि—ॐ बृहस्पतये अति यदर्यो अर्हाद द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

आत्मनः कुलदेवा—ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ धृतिः पुष्टिः तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्योता वृद्धौ पूज्याश्चषोडशः॥

॥ सप्तवसोर्द्धारादेवता हवन पूजनम्॥

श्रीः लक्ष्मीः धृतिः मेधास्वाहाप्रज्ञासरस्वती॥
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताः घृतमातरः॥

वसोर्धारा करणम् ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

श्रीः—ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनाᳪरूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

लक्ष्मीः—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च०

धृति—ॐ इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृति: स्वाहा। उपसृजन्धरुण मात्रे धरुणो मातरन्धयन्। रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा॥

मेधा—ॐ याम्मेधान्देवगणा: पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनङ्कुरु स्वाहा॥

पुष्टि—ॐ देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन्। श्रोत्रं न कर्णयोर्यशो जोष्ट्रीम्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥

श्रद्धा—ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

सरस्वती—पावकान: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसु:॥

॥ ग्रहाणाम् आवाहनम् होम:॥

	नाम	समिध	फलम्
१.	ॐ सूर्याय नम:	अर्क:	द्राक्ष
२.	ॐ सोमाय नम:	पलाश:	इक्षु
३.	ॐ भौमाय नम:	खदिर:	पूगीफल
४.	ॐ बुधाय नम:	अपामार्ग:	नारिंग
५.	ॐ बृहस्पतये नम:	पिप्पल:	जंबीर
६.	ॐ शुक्राय नम:	उदुम्बर:	बीजपूर
७.	ॐ शनैश्चराय नम:	शमी	उतत्ती
८.	ॐ राहवे नम:	दूर्वा	नारिकेल
९.	ॐ केतवे नम:	कुश:	दाडिम

॥ अधिदेवतानां आवाहनम् होम:॥

१.	ॐ त्र्यंबकं	सूर्यदक्षिणपार्श्वे	ॐ ईश्वराय नम:
२.	ॐ श्रीश्चते०	सोमदक्षिणपार्श्वे	ॐ उमायै नम:

३. ॐ यदक्रन्द०	भौमदक्षिणपार्श्वे	ॐ स्कन्दाय नमः
४. ॐ विष्णोरराट०	बुधदक्षिणपार्श्वे	ॐ विष्णवे नमः
५. ॐ आ ब्रह्मन्०	बृहस्पतिदक्षिणपार्श्वे	ॐ ब्रह्मणे नमः
६. ॐ सजोषाइन्द्र०	शुक्रदक्षिणपार्श्वे	ॐ इन्द्राय नमः
७. ॐ यमाय त्वा०	शनैश्चरदक्षिणपार्श्वे	ॐ यमाय नमः
८. ॐ कार्षिरसि०	राहुदक्षिणपार्श्वे	ॐ कालाय नमः
९. ॐ चित्रावसो०	केतुदक्षिणपार्श्वे	ॐ चित्रगुप्ताय नमः

॥ प्रत्यधिदेवतानां आवाहनम् होमः ॥

१. ॐ अग्निदूतं०	सूर्यवामपार्श्वे	ॐ अग्नये नमः
२. ॐ आपोहिष्ठा०	सोमवामपार्श्वे	ॐ अद्भ्यो नमः
३. ॐ स्योनापृथिवि०	भौमवामपार्श्वे	ॐ पृथिव्यै नमः
४. ॐ इदं विष्णु०	बुधमवामपार्श्वे	ॐ विष्णवे नमः
५. ॐ त्रातारमिन्द्र०	बृहस्पतिवामपार्श्वे	ॐ इन्द्राय नमः
६. ॐ अदित्यै रास्ना०	शुक्रवामपार्श्वे	ॐ इन्द्राण्यै नमः
७. ॐ प्रजापते०	शनैश्चरवामपार्श्वे	ॐ प्रजापतये नमः
८. ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो०	राहुवामपार्श्वे	ॐ सर्पेभ्यो नमः
९. ॐ ब्रह्मजज्ञानं०	केतुवामपार्श्वे	ॐ ब्रह्मणे नमः

॥ पंचलोकपालानां वास्तुक्षेत्राधिपयोः च आवाहनम् होमः ॥

१. ॐ गणानान्त्वा	राहोउत्तरतः	ॐ गणपतये नमः
२. ॐ अम्बेऽअम्बिके०	शनेरुत्तरतः	ॐ दुर्गायै नमः
३. ॐ वायोयेते०	रवेरुत्तरतः	ॐ वायवे नमः
४. ॐ घृतं घृत०	राहोः दक्षिणे	ॐ आकाशाय नमः
५. ॐ यावांकशा०	केतोः दक्षिणे	ॐ अश्विभ्यां नमः

६.	ॐ नहि स्पश०	गुरो: उत्तरे	ॐ क्षेत्रपालाय नम:
७.	ॐ वास्तोष्पते०	क्षेत्राधिपउत्तरे	ॐ वास्तोष्पतये नम:

॥ दशदिक्पाला: ॥

१.	ॐ त्रातारमिन्द्र०	पूर्वे	ॐ इन्द्राय नम:
२.	ॐ त्वन्नो अग्ने०	आग्नेय्यां	ॐ अग्नेय नम:
३.	ॐ यमाय त्वा०	दक्षिणे	ॐ यमाय नम:
४.	ॐ असुन्वन्त०	नैर्ऋत्यां	ॐ निर्ऋतये नम:
५.	ॐ तत्वायामि०	पश्चिमे	ॐ वरुणाय नम:
६.	ॐ आनोनियुद्भि०	वायव्यां	ॐ वायवे नम:
७.	ॐ वयठ्ठसोम०	उत्तरे	ॐ सोमाय नम:
८.	ॐ तमीशानं०	ऐशान्यां	ॐ ईशानाय नम:
९.	ॐ अस्मेरुद्रा०	ईशानेन्द्रयोर्मध्ये	ॐ ब्रह्मणे नम:
१०.	ॐ स्योनापृथिवि०	निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये	ॐ अनंताय नम:

सूर्य: शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलम् मंगल:
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्र: सुखं शं शनि:।
राहु: बाहुबलं करोतु विपुलं केतु: कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु सततं सर्वे प्रसन्ना ग्रहा:॥

॥ गृह शिख्यादि वास्तुमंडलदेवता (६४ पद) आवाहनम् होम: ॥

ध्यानम्

ॐ वास्तोष्पतिं महादेव सर्वसिद्धि विधायकम्।
शांतिकर्तारमीशानं तं वास्तु प्रणमाम्यहम्॥ १॥

नमस्ते वास्तुपुरुष भूशय्या भिरतं प्रभो।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा॥ २॥

१. ॐ शिखिने नमः
२. ॐ पर्जन्याय नमः
३. ॐ जयंताय नमः
४. ॐ इंन्द्राय नमः
५. ॐ सूर्याय नमः
६. ॐ सत्याय नमः
७. ॐ भृशाय नमः
८. ॐ अन्तरिक्षाय नमः
९. ॐ वायवे नमः
१०. ॐ पूष्णे नमः
११. ॐ वितथाय नमः
१२. ॐ गृहक्षताय नमः
१३. ॐ यमाय नमः
१४. ॐ गंधर्वाय नमः
१५. ॐ भृंगराजाय नमः
१६. ॐ मृगाय नमः
१७. ॐ पितृभ्यो नमः
१८. ॐ दौवारिकाय नमः
१९. ॐ सुग्रीवाय नमः
२०. ॐ पुष्पदंताय नमः
२१. ॐ वरुणाय नमः
२२. ॐ असुराय नमः
२३. ॐ शेषाय नमः
२४. ॐ पापाय नमः
२५. ॐ रोगाय नमः
२६. ॐ नागाय नमः
२७. ॐ मुख्याय नमः
२८. ॐ भल्लाटाय नमः
२९. ॐ सोमाय नमः
३०. ॐ उरगाय नमः
३१. ॐ अदितये नमः
३२. ॐ दितये नमः
३३. ॐ अद्भ्यो नमः
३४. ॐ आपवत्साय नमः
३५. ॐ अर्यम्णे नमः
३६. ॐ सावित्राय नमः
३७. ॐ सवित्रे नमः
३८. ॐ विवस्वते नमः
३९. ॐ विबुधाधिपाय नमः
४०. ॐ जयन्ताय नमः
४१. ॐ मित्राय नमः
४२. ॐ राजयक्ष्मणे नमः
४३. ॐ रुद्राय नमः
४४. ॐ पृथ्वीधराय नमः
४५. ॐ ब्रह्मणे नमः
४६. ॐ चरक्यै नमः
४७. ॐ विदार्यै नमः
४८. ॐ पूतनायै नमः
४९. ॐ पापराक्षस्यै नमः
५०. ॐ स्कंदाय नमः
५१. ॐ अर्यम्णे नमः
५२. ॐ जृंभकाय नमः
५३. ॐ पिलिपिच्छाय नमः
५४. ॐ इंद्राय नमः
५५. ॐ अग्नये नमः
५६. ॐ यमाय नमः
५७. ॐ निर्ऋतये नमः
५८. ॐ वरुणाय नमः
५९. ॐ वायवे नमः
६०. ॐ कुबेराय नमः
६१. ॐ शंकराय नमः
६२. ॐ ईशानाय नमः
६३. ॐ ब्रह्मणे नमः
६४. ॐ अनंताय नमः

॥ मंडप वास्तुमण्डलदेवतानां (ब्रह्मादि ८१ पद) आवाहनम् होमः ॥

ध्यानम्

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मैत्रवरुण निर्मिता।
प्रतिष्ठान्ते करोम्यत्र मंडले दैवतैः सह॥ १॥

यथा मेरुगिरे श्रृंगं देवानामालय: सदा।
तथा ब्रह्मादि देवानां मम गृहे स्थिरो भव॥ २॥

१. ॐ ब्रह्मणे नम:	२. ॐ अर्यम्णे नम:	३. ॐ विवस्वते नम:
४. ॐ मित्राय नम:	५. ॐ पृथ्वीधराय नम:	६. ॐ सावित्राय नम:
७. ॐ सवित्रे नम:	८. ॐ विबुधाधिपाय नम:	९. ॐ जयाय नम:
१०. ॐ राजयक्ष्मणे नम:	११. ॐ रुद्राय नम:	१२. ॐ अद्भ्यो नम:
१३. ॐ आपवत्साय नम:	१४. ॐ शिखिने नम:	१५. ॐ पर्जन्याय नम:
१६. ॐ जयन्ताय नम:	१७. ॐ कुलिशाय नम:	१८. ॐ सूर्याय नम:
१९. ॐ सत्याय नम:	२०. ॐ भृशाय नम:	२१. ॐ आकाशाय नम:
२२. ॐ वायवे नम:	२३. ॐ पूष्णे नम:	२४. ॐ वितथाय नम:
२५. ॐ गृहक्षताय नम:	२६. ॐ यमाय नम:	२७. ॐ गन्धर्वाय नम:
२८. ॐ भृङ्गराजाय नम:	२९. ॐ मृगाय नम:	३०. ॐ पितृभ्यो नम:
३१. ॐ दौवारिकायनम:	३२. ॐ सुग्रीवाय नम:	३३. ॐ पुष्पदन्ताय नम:
३४. ॐ वरुणाय नम::	३५. ॐ असुराय नम	३६. ॐ शोषाय नम:
३७. ॐ पापाय नम:	३८. ॐ रोगाय नम:	३९. ॐ अहये नम:
४०. ॐ मुख्याय नम:	४१. ॐ भल्लाटाय नम:	४२. ॐ सोमाय नम:
४३. ॐ सर्पाय नम:	४४. ॐ अदितये नम:	४५. ॐ दितये नम:
४६. ॐ चरक्यै नम:	४७. ॐ विदार्यै नम:	४८. ॐ पूतनायै नम:
४९. ॐ पापराक्षस्यै नम:	५०. ॐ स्कन्दाय नम:	५१. ॐ अर्यम्णे नम:
५२. ॐ जृम्भकाय नम:	५३. ॐ पिलिपिच्छाय नम:	५४. ॐ इन्द्राय नम:
५५. ॐ अग्नये नम:	५६. ॐ यमाय नम:	५७. ॐ निर्ऋतये नम:
५८. ॐ वरुणाय नम:	५९. ॐ वायवे नम:	६०. ॐ कुबेराय नम:
६१. ॐ ईशानाय नम:	६२. ॐ ब्रह्मणे नम:	६३. ॐ अनन्ताय नम:
६४. ॐ उग्रसेनाय नम:	६५. ॐ डामराय नम:	६६. ॐ हेतुकाय नम:
६७. ॐ महाकालाय नम:	६८. ॐ कालाप नम:	६९. ॐ पिलिपिच्छाय नम:
७०. ॐ खेचरायनम:	७१. ॐ त्रिपुरान्तकाय नम:	७२. ॐ अग्निवैतालाय नम:
७३. ॐ तलवासिने नम:	७४. ॐ ध्रुवाय नम:	७५. ॐ करालाय नम:
७६. ॐ एकपदाय नम:	७७. ॐ भीमरूपाय नम:	७८. ॐ असिवैतालाय नम:
७९. ॐ शंकराय नम:	८०. ॐ वास्तुपुरुषाय नम:	८१. ॐ अघोराय नम:

॥ चतुष्षष्टियोगिनीदेवता आवाहनम् होमः ॥ (देवी यागे)

१. ॐ विश्वदुर्गायै नमः
२. ॐ उद्योतिन्यै नमः
३. ॐ मालाधर्यै नमः
४. ॐ महामायायै नमः
५. ॐ मायावत्यै नमः
६. ॐ शुभायै नमः
७. ॐ यशस्विन्यै नमः
८. ॐ त्रिनेत्रायै नमः
९. ॐ लोलजिह्वायै नमः
१०. ॐ शंखिन्यै नमः
११. ॐ यमघंटायै नमः
१२. ॐ कालिकायै नमः
१३. ॐ चर्चिकायै नमः
१४. ॐ यक्षिण्यै नमः
१५. ॐ सरस्वत्यै नमः
१६. ॐ चंडिकायै नमः
१७. ॐ चित्रघंटायै नमः
१८. ॐ सुगन्धायै नमः
१९. ॐ कामाक्ष्यै नमः
२०. ॐ भद्रकाल्यै नमः
२१. ॐ परायै नमः
२२. ॐ क्रान्तराक्ष्यै नमः
२३. ॐ कोटराक्ष्यै नमः
२४. ॐ नीलांकायै नमः
२५. ॐ सर्वमंगलायै नमः
२६. ॐ ललितायै नमः
२७. ॐ त्वरितायै नमः
२८. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः
२९. ॐ खड्गपाण्यै नमः
३०. ॐ शूलिन्यै नमः
३१. ॐ दंडिन्यै नमः
३२. ॐ अम्बिकायै नमः
३३. ॐ शूलेश्वर्यै नमः
३४. ॐ बाणवत्यै नमः
३५. ॐ धनुर्धर्यै नमः
३६. ॐ महोल्लासायै नमः
३७. ॐ विशालाक्ष्यै नमः
३८. ॐ त्रिपुरायै नमः
३९. ॐ भगमालिन्यै नमः
४०. ॐ दीर्घकेश्यै नमः
४१. ॐ घोरघोणायै नमः
४२. ॐ वाराह्यै नमः
४३. ॐ महोदर्यै नमः
४४. ॐ कामेश्वर्यै नमः
४५. ॐ गुह्येश्वर्यै नमः
४६. ॐ भूतनाथायै नमः
४७. ॐ महारवायै नमः
४८. ॐ ज्योतिष्मत्यै नमः
४९. ॐ कृतिवासायै नमः
५०. ॐ मुंडिन्यै नमः
५१. ॐ शववाहिन्यै नमः
५२. ॐ शिवाङ्कायै नमः
५३. ॐ लिङ्गहस्तायै नमः
५४. ॐ भगवक्त्रायै नमः
५५. ॐ गगनायै नमः
५६. ॐ मेघवाहनायै नमः
५७. ॐ मेघघोषायै नमः
५८. ॐ नारसिंह्यै नमः
५९. ॐ कालिन्द्यै नमः
६०. ॐ श्रीधर्यै नमः
६१. ॐ तेजस्यै नमः
६२. ॐ श्यामायै नमः
६३. ॐ मातंग्यै नमः
६४. ॐ नरवाहनायै नमः
६५. ॐ इन्द्राण्यै नमः
६६. ॐ दुर्गायै नमः
६७. ॐ जयायै नमः
६८. ॐ विजयायै नमः
६९. ॐ अजितायै नमः
७०. ॐ विश्वमंगलायै नमः
७१. ॐ भद्ररूपिण्यै नमः
७२. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः
७३. ॐ श्रीराजराजेश्वर्यै नमः

॥ गजाननादि चतुःषष्टि योगिनी देवता आवाहनम् होमः ॥
(गणेश, रुद्र, विष्णवादि देवयागे)

महाकाली—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानय तिकश्चन। ससरत्त्यश्वकः सुभद्रिकाकांम्पी महालक्ष्मी - अँ श्रीश्चते लक्ष्मी ....

महासरस्वती—ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। रुञ्ज्ञं व्वष्टुधियावसुः ॥

१. ॐ महाकाल्यै नमः	२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः	३. ॐ महासरस्वत्यै नमः
४. ॐ गजाननायै नमः	५. ॐ सिंहमुख्यै नमः	६. ॐ गृधास्यायै नमः
७. ॐ काकतुण्डिकायै नमः	८. ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः	९. ॐ हयग्रीवायै नमः
१०. ॐ वाराह्यै नमः	११. ॐ शरभानायै नमः	१२. ॐ उलूकिकायै नमः
१३. ॐ शिवारावायै नमः	१४. ॐ मयूर्यै नमः	१५. ॐ बिकटाननायै नमः
१६. ॐ अष्टवक्रायै नमः	१७. ॐ कोटराक्ष्यै नमः	१८. ॐ कुब्जायै नमः
१९. ॐ विकटलोचनायै नमः	२०. ॐ शुष्कोदर्यै नमः	२१. ॐ ललज्जिह्वायै नमः
२२. ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः	२३. ॐ वानराननायै नमः	२४. ॐ रुक्षाक्ष्यै नमः
२५. ॐ केकराक्ष्यै नमः	२६. ॐ वृहत्तुण्डायै नमः	२७. ॐ सुराप्रियायै नमः
२८. ॐ कपालहस्तायैनमः	२९. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः	३०. ॐ शुक्यै नमः
३१. ॐ श्येन्यै नमः	३२. ॐ कपोतिकायै नमः	३३. ॐ पाशहस्तायै नमः
३४. ॐ दण्डहस्तायै नमः	३५. ॐ प्रचण्डायै नमः	३६. ॐ चण्डविक्रमायै नमः
३७. ॐ शिशुघ्न्यै नमः	३८. ॐ पापहन्त्र्यै नमः	३९. ॐ काल्यै नमः
४०. ॐ रुधिरपायिन्यै नमः	४१. ॐ वसाधयायै नमः	४२. ॐ गर्भभक्षायै नमः
४३. ॐ शवहस्तायै नमः	४४. ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः	४५. ॐ स्थूलकेश्यै नमः
४६. ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः	४७. ॐ सर्पास्यायै नमः	४८. ॐ प्रेतवाहनायै नमः
४९. ॐ दन्दशूककरायै नमः	५०. ॐ क्रौंच्यै नमः	५१. ॐ मृगशीर्षायै नमः
५२. ॐ वृषाननायै नमः	५३. ॐ व्यात्तास्यायै नमः	५४. ॐ धूमनिःश्वासायै नमः
५५. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः	५६. ॐ तापिन्यै नमः	५७. ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः
५८. ॐ कोटर्यै नमः	५९. ॐ स्थूलनासिकायै नमः	६०. ॐ विद्युत्प्रभायै नमः
६१. ॐ बलाकास्यायै नमः	६२. ॐ मार्जार्यै नमः	६३. ॐ कटपूतनायै नमः

६४. ॐ अट्टाट्टहासायै नमः ६५. ॐ कामाक्ष्यै नमः ६६. ॐ मृगाक्ष्यै नमः
६७. ॐ मृगलोचनायै नमः

॥ चतुष्षष्टिभैरवदेवता आवाहनम् होमः ॥ (देवी यागे)

१. ॐ श्रीमद्भैरवाय नमः २. ॐ शंभुभैरवाय नमः ३. ॐ नीलकंठभै नमः
४. ॐ विशालभै नमः ५. ॐ मार्तंडभै नमः ६. ॐ मनुप्रभभै नमः
७. ॐ स्वच्छन्दभै नमः ८. ॐ असिताङ्गभै नमः ९. ॐ खेचरभै नमः
१०. ॐ संहारभै नमः ११. ॐ विरूपभै नमः १२. ॐ विरूपाक्षभै नमः
१३. ॐ नानारूपधरभै नमः १४. ॐ वराहभै नमः १५. ॐ रुरुभैरवाय नमः
१६. ॐ कंदुवर्णभै नमः १७. ॐ सुगात्रभै नमः १८. ॐ उन्मत्तभै नमः
१९. ॐ मेघनादभै नमः २०. ॐ मनोवेगभै नमः २१. ॐ क्षेत्रपालभै नमः
२२. ॐ विपापहारभै नमः २३. ॐ निर्भयभै नमः २४. ॐ विजीतभै नमः
२५. ॐ प्रेतभैरवाय नमः २६. ॐ लोकपालभै नमः २७. ॐ गदाधरभै नमः
२८. ॐ वज्रहस्तभै नमः २९. ॐ महाकालभै नमः ३०. ॐ प्रचंडभै नमः
३१. ॐ अजेयभै नमः ३२. ॐ अन्तकभै नमः ३३. ॐ भ्रामकभै नमः
३४. ॐ संहारभै नमः ३५. ॐ कुलपालभै नमः ३६. ॐ चंडपालभै नमः
३७. ॐ प्रजापालभै नमः ३८. ॐ रक्तांगभै नमः ३९. ॐ वेगावीक्षणभै नमः
४०. ॐ अरुणभै नमः ४१. ॐ धरापालभै नमः ४२. ॐ कुंडलनेत्रभै नमः
४३. ॐ मंत्रनाथभै नमः ४४. ॐ रुद्रपितामहभै नमः ४५. ॐ विष्णुभैरवाय नमः
४६. ॐ बटुकनाथभै नमः ४७. ॐ भूतनाथभै नमः ४८. ॐ बैतालभै नमः
४९. ॐ त्रिनेत्रभै नमः ५०. ॐ त्रिपुरान्तकभै नमः ५१. ॐ वरदभै नमः
५२. ॐ पर्वतवासभै नमः ५३. ॐ शशिसकलभूषणभै नमः ५४. ॐ सर्वभूतहृदभै नमः
५५. ॐ घोरसायकभै नमः ५६. ॐ भयंकरभै नमः ५७. ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदभै नमः
५८. ॐ कालाग्निभै नमः ५९. ॐ महारुद्रभै नमः ६०. ॐ भयानकभै नमः
६१. ॐ दक्षिणमुखभै नमः ६२. ॐ भीषणभै नमः ६३. ॐ क्रोधभै नमः
६४. ॐ सुखसंपत्तिदायक भैरवाय नमः

॥ क्षेत्रपालदेवानां आवाहनम् होमः ॥

(गणेश, रुद्र, विष्णवादि यागे)

ध्यानम्

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्योयेकेच पृत्वी मनु।
ये अन्तरिक्षेयेदिवि तेभ्य सर्प्पेभ्यो नमः॥ १ ॥
यं यं यं यक्षरुपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं।
सं सं संहारमूर्तिं शिरमुकुट जटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्॥ २ ॥
दंदंदं दीप्तकायं विकृत नखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं।
पं पं पं पापनाशं पणतपशुपतिं क्षेत्रपालं नमामि॥ ३ ॥

१. ॐ क्षेत्रपालाय नमः
२. ॐ अजराय नमः
३. ॐ व्यापकाय नमः
४. ॐ इन्द्रचौराय नमः
५. ॐ इन्द्रमूर्तये नमः
६. ॐ उक्षाय नमः
७. ॐ कूष्माण्डाय नमः
८. ॐ वरुणाय नमः
९. ॐ बटुकाय नमः
१०. ॐ विमुक्ताय नमः
११. ॐ लिप्तकाय नमः
१२. ॐ लिलाकाय नमः
१३. ॐ एकदंष्ट्राय नमः
१४. ॐ ऐरावताय नमः
१५. ॐ ओषधिघ्नाय नमः
१६. ॐ बन्धनाय नमः
१७. ॐ दिव्यकाय नमः
१८. ॐ कम्बलाय नमः
१९. ॐ भीषणाय नमः
२०. ॐ गवयाय नमः
२१. ॐ घण्टाय नमः
२२. ॐ व्यालाय नमः
२३. ॐ अणवे नमः
२४. ॐ चन्द्रवारुणाय नमः
२५. ॐ घटाटोपाय नमः
२६. ॐ जटालाय नमः
२७. ॐ क्रतवे नमः
२८. ॐ घण्टेश्वराय नमः
२९. ॐ विटङ्काय नमः
३०. ॐ मणिमानाय नमः
३१. ॐ गणबन्धवे नमः
३२. ॐ डामराय नमः
३३. ॐ ढुण्ढिकर्णाय नमः
३४. ॐ स्थविराय नमः
३५. ॐ दन्तुराय नमः
३६. ॐ धनदाय नमः
३७. ॐ नागकर्णाय नमः
३८. ॐ महाबलाय नमः
३९. ॐ फेत्काराय नमः
४०. ॐ चीकराय नमः
४१. ॐ सिंहाय नमः
४२. ॐ मृगाय नमः
४३. ॐ यक्षाय नमः
४४. ॐ मेघवाहनाय नमः
४५. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः
४६. ॐ अनलाय नमः
४७. ॐ शुक्लतुण्डाय नमः
४८. ॐ सुधालापाय नमः
४९. ॐ बर्बरकाय नमः
५०. ॐ पवनाय नमः
५१. ॐ पावनाय नमः

॥ सर्वतोभद्रमण्डलदेवतानां आवाहनम् होमः ॥

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुण निर्मिता।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह॥

१. ॐ ब्रह्मणे नमः
२. ॐ सोमाय नमः
३. ॐ ईशानाय नमः
४. ॐ इन्द्राय नमः
५. ॐ अग्नये नमः
६. ॐ यमाय नमः
७. ॐ नैर्ऋतये नमः
८. ॐ वरुणाय नमः
९. ॐ वायवे नमः
१०. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः
११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः
१२. ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः
१३. ॐ अश्विभ्यां नमः
१४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो० देवे० नमः
१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः
१६. ॐ भूतनागेभ्यो नमः
१७. ॐ गन्धर्वाप्सेरोभ्यो नमः
१८. ॐ स्कन्दाय नमः
१९. ॐ नन्दीश्वराय नमः
२०. ॐ शूलमहाकालाभ्यां नमः
२१. ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः
२२. ॐ दुर्गायै नमः
२३. ॐ विष्णवे नमः
२४. ॐ स्वधायै नमः
२५. ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः
२६. ॐ गणपतये नमः
२७. ॐ अद्भ्यो नमः
२८. ॐ मरुद्भ्यो नमः
२९. ॐ पृथिव्यै नमः
३०. ॐ गङ्गादिनदीभ्यो नमः
३१. ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः
३२. ॐ मेरवे नमः
३३. ॐ गदायै नमः
३४. ॐ त्रिशूलाय नमः
३५. ॐ वज्राय नमः
३६. ॐ शक्तये नमः
३७. ॐ दण्डाय नमः
३८. ॐ खड्गाय नमः
३९. ॐ पाशाय नमः
४०. ॐ अंकुशाय नमः
४१. ॐ गौतमाय नमः
४२. ॐ भरद्वाजाय नमः
४३. ॐ विश्वामित्राय नमः
४४. ॐ कश्यपाय नमः
४५. ॐ जमदग्नये नमः
४६. ॐ वसिष्ठाय नमः
४७. ॐ अत्रये नमः
४८. ॐ अरुन्धत्यै नमः
४९. ॐ ऐन्द्रयै नमः
५०. ॐ कौमार्यै नमः
५१. ॐ ब्राह्मयै नमः
५२. ॐ वाराह्यै नमः
५३. ॐ चामुण्डायै नमः
५४. ॐ वैष्णव्यै नमः
५५. ॐ माहेश्वर्यै नमः
५६. ॐ वैनायक्यै नमः

॥ गौरीतिलकमण्डलस्थदेवानां आवाहनम् होमः ॥

१. ॐ महाविष्णवे नमः	२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः	३. ॐ महेश्वराय नमः
४. महामायायै नमः	५. ऋग्वेदाय नमः	६. यजुर्वेदाय नमः
७. सामवेदाय नमः	८. अथर्ववेदाय नमः	९. अद्भ्यो नमः
१०. जलोद्भवाय नमः	११. ब्रह्मणे नमः	१२. प्रजापतये नमः
१३. शिवाय नमः	१४. अनन्ताय नमः	१५. परमेष्ठिने नमः
१६. धात्रे नमः	१७. विधात्रे नमः	१८. अर्य्यमणे नमः
१९. मित्राय नमः	२०. वरुणाय नमः	२१. अंशुमते नमः
२२. भगाय नमः	२३. इन्द्राय नमः	२४. ॐ विवस्वते नमः
२५. पूष्णे नमः	२६. पर्जन्याय नमः	२७. त्वष्ट्रे नमः
२८. दक्षयज्ञाय नमः	२९. देववसवे नमः	३०. महासुताय नमः
३१. सुधर्मणे नमः	३२. शङ्खपदे नमः	३३. महावाहवेः नमः
३४. वपुष्मते नमः	३५. अनन्ताय नमः	३६. महेरणाय नमः
३७. विश्वावसवे नमः	३८. सुपर्वणे नमः	३९. विष्टराय नमः
४०. रुद्रदेवतायै नमः	४१. ध्रुवाय नमः	४२. धरायै नमः
४३. सोमाय नमः	४४. आपवत्साय नमः	४५. नलाय नमः
४६. अनिलाय नमः	४७. प्रत्यूषाय नमः	४८. प्रभासाय नमः
४९. आवर्त्ताय नमः	५०. सावर्त्ताय नमः	५१. द्रोणाय नमः
५२. पुष्कराय नमः	५३. ह्रीकार्यै नमः	५४. ह्रींयै नमः
५५. कात्यायन्यै नमः	५६. चामुण्डायै नमः	५७. महादिव्यायै नमः
५८. महाशब्दायै नमः	५९. सिद्धिदायै नमः	६०. ऐं नमः
६१. श्री श्रियै नमः	६२. ह्रीं ह्रियै नमः	६३. लक्ष्म्यै नमः
६४. श्रियै नमः	६५. सुघनाय नमः	६६. मेधायै नमः
६७. प्रज्ञायै नमः	६८. मत्यै नमः	६९. स्वाहायै नमः
७०. सरस्वत्यै नमः	७१. गौर्यै नमः	७२. पद्मायै नमः
७३. शच्यै नमः	७४. सुमेधायै नमः	७५. सावित्र्यै नमः
७६. विजयायै नमः	७७. देवसेनायै नमः	७८. स्वाहायै नमः
७९. स्वधायै नमः	८०. मात्रे नमः	८१. गायत्र्यै नमः

८२. लोकमात्रै नमः	८३. धृत्यै नमः	८४. पुष्ट्यै नमः
८५. तुष्ट्यै नमः	८६. आत्मकुलदेवतायै नमः	८७. गणेश्वर्यै नमः
८८. कुलमात्रै नमः	८९. शान्त्यै नमः	९०. जयन्त्यै नमः
९१. मङ्गलायै नमः	९२. काल्यै नमः	९३. भद्रकाल्यै नमः
९४. कपालिन्यै नमः	९५. दुर्गायै नमः	९६. क्षमायै नमः
९७. शिवायै नमः	९८. धात्र्यै नमः	९९. स्वाहास्वधाभ्यां नमः
१००. दीप्यमानायै नमः	१०१. दीप्यायै नमः	१०२. सूक्ष्मायै नमः
१०३. विभूत्यै नमः	१०४. विमलायै नमः	१०५. परायै नमः
१०६. अमोघायै नमः	१०७. विधूतायै नमः	१०८. सर्वतोमुख्यै नमः
१०९. आनन्दायै नमः	११०. नन्दिन्यै नमः	१११. शक्त्यै नमः
११२. महासूक्ष्मायै नमः	११३. करालिन्यै नमः	११४. भारत्यै नमः
११५. ज्योतिषे नमः	११६. ब्राह्म्यै नमः	११७. माहेश्वर्यै नमः
११८. कौमार्यै नमः	११९. वैष्णव्यै नमः	१२०. वाराह्यै नमः
१२१. इन्द्राण्यै नमः	१२२. चण्डिकायै नमः	१२३. बुद्ध्यै नमः
१२४. लज्जायै नमः	१२५. वपुष्मत्यै नमः	१२६. शान्त्यै नमः
१२७. कान्त्यै नमः	१२८. रत्यै नमः	१२९. प्रीत्यै नमः
१३०. कीर्त्यै नमः	१३१. प्रभायै नमः	१३२. काम्यायै नमः
१३३. कान्तायै नमः	१३४. ऋद्ध्यै नमः	१३५. दयायै नमः
१३६. शिवदूत्यै नमः	१३७. श्रद्धायै नमः	१३८. क्षमायै नमः
१३९ क्रियायै नमः	१४०. विद्यायै नमः	१४१. मोहिन्यै नमः
१४२. यशोवत्यै नमः	१४३. कृपावत्यै नमः	१४४. सलिलायै नमः
१४५. सुशीलायै नमः	१४६. ईश्वर्यै नमः	१४७. सिद्धेश्वर्यै नमः
१४८. द्वैपायनाय नमः	१४९. भारद्वाजाय नमः	१५०. मित्राय नमः
१५१. सनकाय नमः	१५२. गौतमाय नमः	१५३. सुमन्तवे नमः
१५४. त्वष्ट्रे नमः	१५५. सनन्दाय नमः	१५६. देवलाय नमः
१५७. व्यासाय नमः	१५८. ध्रुवाय नमः	१५९. सनातनाय नमः
१६०. वसिष्ठाय नमः	१६१. च्यवनाय नमः	१६२. पुष्कराय नमः
१६३. सनत्कुमाराय नमः	१६४. कण्वाय नमः	१६५. मैत्राय नमः

१६६. कवये नमः	१६७. विश्वामित्राय नमः	१६८. वामदेवाय नमः
१६९. सुमन्ताय नमः	१७०. जैमिनये नमः	१७१. क्रतवे नमः
१७२. पिप्पलादाय नमः	१७३. पराशराय नमः	१७४. गर्गाय नमः
१७५. वैशंपायनाय नमः	१७६. मार्कण्डेयाय नमः	१७७. मृकंडाय नमः
१७८. लोमशाय नमः	१७९. पुलहाय नमः	१८०. पुलस्त्याय नमः
१८१. वृहस्पतये नमः	१८२. जमदग्नये नमः	१८३. जामदग्न्याय नमः
१८४. दालल्भ्या नमः	१८५. गालवाय नमः	१८६. याज्ञवल्काय नमः
१८७. दुर्वाससे नमः	१८८. सौभरये नमः	१८९. जाबालये नमः
१९०. बाल्मीकये नमः	१९१. वह्वृचाय नमः	१९२. इन्द्रप्रमितये नमः
१९३. देवमित्राय नमः	१९४. जाजलये नमः	१९५. शकल्याय नमः
१९६. मुद्गलाय नमः	१९७. जातुकर्ण्याय नमः	१९८. बलाकाय नमः
१९९. कृपाचार्याय नमः	२००. सुकर्मणे नमः	२०१. कौशल्याय नमः
२०२. ब्रह्माग्नये नमः	२०३. गार्हपत्याग्नये नमः	२०४. ईश्वराग्नये नमः
२०५. दक्षिणाग्नये नमः	२०६. वैष्णवाग्नये नमः	२०७. आवहनीयाग्नये नमः
२०८. सप्तजिह्वाग्नये नमः	२०९. इध्यमजिह्वाग्नये नमः	२१०. प्रवर्ग्याग्नये नमः
२११. वडवाग्नये नमः	२१२. जठराग्नये नमः	२१३. लोकाग्नये नमः
२१४. सूर्याय नमः	२१५. वेदाङ्गाय नमः	२१६. भानवे नमः
२१७. इन्द्राय नमः	२१८. खगाय नमः	२१९. गभस्तिने नमः
२२०. यमाय नमः	२२१. अंशुमते नमः	२२२. हिरण्यरेतसे नमः
२२३. दिवाकराय नमः	२२४. मित्राय नमः	२२५. विष्णवे नमः
२२६. शम्भवे नमः	२२७. गिरिशाय नमः	२२८. अजैकपदे नमः
२२९. अहिर्बुध्न्याय नमः	२३०. पिनाकपाणये नमः	२३१. अपराजिताय नमः
२३२. भुवनाधीश्वराय नमः	२३३. कपालिने नमः	२३४. विशांपतये नमः
२३५. रुद्राय नमः	२३६. वीरभद्राय नमः	२३७. अश्विनीकुमाराभ्यां नमः
२३८. आवहाय नमः	२३९. प्रवहाय नमः	२४०. उद्वहाय नमः
२४१. संवहाय नमः	२४२. विवहाय नमः	२४३. परिवहाय नमः
२४४. धरायै नमः	२४५. अद्भ्यो नमः	२४६. अग्नये नमः
२४७. वायवे नमः	२४८. आकाशाय नमः	२४९. हिरण्यनाभाय नमः

२५०. पुष्पञ्जयाय नमः २५१. द्रोणाय नमः २५२. शृंगिणे नमः
२५३. वादरायणाय नमः २५४. अगस्त्याय नमः २५५. मनवे नमः
२५६. कश्यपाय नमः २५७. धौम्याय नमः २५८. भृगवे नमः
२५९. वीतिहोत्राय नमः २६०. मधुच्छंदसे नमः २६१. वीरसेनाय नमः
२६२. कृतवृष्णवे नमः २६३. अत्रये नमः २६४. मेधातिथये नमः
२६५. अरिष्टनेमये नमः २६६. अङ्गिराय नमः २६७. इन्द्रप्रमदाय नमः
२६८. इध्मबाहवे नमः २६९. पिप्पलादाय नमः २७०. नारदाय नमः
२७१. अरिष्टसेनाय नमः २७२. अरुणाय नमः २७३. कपिलाय नमः
२७४. कर्दमाय नमः २७५. मरीचये नमः २७६. क्रतवे नमः
२७७. प्रचेतसे नमः २७८. उत्तमाय नमः २७९. दधीचये नमः
२८०. श्राद्धदेवेभ्यो नमः २८१. गणदेवेभ्यो नमः २८२. विद्याधरेभ्यो नमः
२८३. अप्सरेभ्यो नमः २८४. यक्षेभ्योनमः २८५. रक्षेभ्यो नमः
२८६. गन्धर्वेभ्यो नमः २८७. पिशाचेभ्यो नमः २८८. गुह्यकेभ्यो नमः
२८९. सिद्धदेवेभ्यो नमः २९०. औषधीभ्यो नमः २९१. भूतग्रामाय नमः
२९२. चतुर्विधभूतग्रामाय नमः ।

॥ इति गौरीतिलकमण्डल स्थितदेवानां होमः ॥

॥ लिङ्गतोभद्र मण्डलस्थदेवानां आवाहनम् होमः ॥

१. ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः २. रु रु भैरवाय नमः ३. चण्ड भैरवाय नमः
४. क्रोध भैरवाय नमः ४. उन्मत्त भैरवाय नमः ५. कपाल भैरवाय नमः
६. भीषण भैरवाय नमः ७. संहार भैरवाय नमः ८. भवाय नमः
९. सर्वाय नमः १०. पशुपतये नमः ११. ईशानाय नमः
१२. रुद्राय नमः १३. उग्राय नमः १४. भीमाय नमः
१५. महते नमः १६. अनन्ताय नमः १७. वासुकये नमः
१८. तक्षकाय नमः १९. कुलिशाय नमः २०. कर्कोटकाय नमः
२१. शंखपालय नमः २२. कम्बलाय नमः २३. अश्वतराय नमः
२४. शूलाय नमः २५. चन्द्र मौलिने नमः २६. चन्द्रमसे नमः
२७. वृषभ ध्वजाय नमः २८. त्रिलोचनाय नमः २९. शक्ति धराय नमः
३०. महेश्वराय नमः ३१. शूलपाणये नमः

॥ वरुण मण्डल आवाहनम् होमः ॥

१. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा।

॥ जल मातृणां नामः ॥

१. ॐ मत्स्यै नमः
२. ॐ कूर्म्यै नमः
३. ॐ वाराह्यै नमः
४. ॐ दुर्दर्यै नमः
५. ॐ मकर्यै नमः
६. ॐ जलूक्यै नमः
७. ॐ तन्तुक्यै नमः

॥ जीव मातृणां नामः ॥

१. ॐ कुमार्यै नमः
२. ॐ घनदायै नमः
३. ॐ नन्दायै नमः
४. ॐ विमलायै नमः
५. ॐ मङ्गलायै नमः
६. ॐ अचलायै नमः
७. ॐ पद्मायै नमः

॥ स्थल मातृणां नामः ॥

१. ॐ ऊर्म्यै नमः
२. ॐ लक्ष्म्यै नमः
३. ॐ महामायायै नमः
४. ॐ पान देव्यै नमः
५. ॐ वारुण्यै नमः
६. ॐ निर्मलायै नमः
७. ॐ गोधायै नमः

रुद्रयागहवनमन्त्राः

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा।

ॐ अम्बेऽ अम्बिके० स्वाहा।

ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ सहस्त्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुतते नमः स्वाहा॥ १॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि स्वाहा॥ २॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते ब्बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरू मा हिᳬ सीः पुरुषंञ्जगत् स्वाहा॥ ३॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मᳬ सुमनाऽअसत् स्वाहा॥ ४॥

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्वयो भिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जभ्यन्तस्व्वाश्च्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव स्वाहा॥ ५॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनᳬ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाᳬहेडऽईमहे स्वाहा॥ ६॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽअ-दृश्श्रन्नुदहार्ष्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा॥ ७॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽ अस्य सत्त्वा नोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः स्वाहा॥ ८॥

ॐ प्रमुञ्च धन्नवनस्त्वमुभयोरात्क्र्योज्जर्याम्। याश्च्च ते हस्तऽइषवः पराता भगवो व्वप स्वाहा॥ ९॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत। अनेशन्नस्य याऽइषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा॥ १०॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्म हस्ते बभूव ते धनुः। तस्यास्मान्निव्वश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा॥ ११॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्व्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽअस्मन्निधेहि तम् स्वाहा॥ १२॥

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वᳬसहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा॥ १३॥

ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्वने स्वाहा॥ १४॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम्।

मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रूद्र रीरिषः स्वाहा॥ १५॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मानोऽ अश्श्वेषु रीरिषः। मानो व्वीरान् रूद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा॥ १६॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा॥ १७॥

ॐ नमो वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा॥ १८॥

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा॥ १९॥

ॐ नमो हरिकेषायोपवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमः स्वाहा॥ २०॥

ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा॥ २१॥

ॐ नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा॥ २२॥

ॐ नमो रूद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा॥ २३॥

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा॥ २४॥

ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा॥ २५॥

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा॥ २६॥

ॐ नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा॥ २७॥

ॐ नमऽ उच्चैर्ग्घोषायक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा॥ २८॥

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा॥ २९॥

ॐ नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽआव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा॥ ३०॥

ॐ नमो निषङ्गिणे कुकुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥

ॐ नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्क्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३४ ॥

ॐ नमः सृकायिब्भ्यो जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३५ ॥

ॐ नमोऽ सिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३६ ॥

ॐ नमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३७ ॥

ॐ नमऽ इषुमद्भ्यो धन्नवायिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३८ ॥

ॐ नमऽ आतन्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३९ ॥

ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४० ॥

ॐ नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४१ ॥

ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्ग्रद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४२ ॥

ॐ नमः शयानेब्भ्यऽ आसीनेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४३ ॥

ॐ नमः स्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४४ ॥

ॐ नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४५ ॥

ॐ नमोऽ श्श्वेब्भ्योऽश्श्वपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४६ ॥

ॐ नमोऽ आव्व्याधिनीब्भ्योव्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४७ ॥

ॐ नमऽ उगणाब्भ्यस्तृꣳ हतीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४८ ॥

ॐ नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४९ ॥

ॐ नमो व्व्रातेब्भ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ५० ॥

ॐ नमो गृत्त्सेब्भ्यो गृत्त्सपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ५१ ॥

ॐ नमो व्विरूपेव्भ्यो व्विश्वरूपेव्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ५२॥

ॐ नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ५३॥

ॐ नमो रथिब्भ्योऽ अरथेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ५४॥

ॐ नमः क्षत्तृब्भ्यः सङ्गृहीतृब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ५५॥

ॐ नमो महद्‌ब्भ्योऽ अर्ब्भकेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥ ५६॥

ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ५७॥

ॐ नमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यशच्च वो नमः स्वाहा॥ ५८॥

ॐ नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिट्ठेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ५९॥

ॐ नमः श्श्ववनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ६०॥

ॐ नमः श्श्वब्भ्यः श्श्वपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥ ६१॥

ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा॥ ६२॥

ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा॥ ६३॥

ॐ नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा॥ ६४॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा॥ ६५॥

ॐ नमः सहस्राक्क्षाय च शतधन्वने च स्वाहा॥ ६६॥

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्टाय च स्वाहा॥ ६७॥

ॐ नमो मीढुष्ट्टमाय चेषुमते च स्वाहा॥ ६८॥

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा॥ ६९॥

ॐ नमो वृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा॥ ७०॥

ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा॥ ७१॥

ॐ नमो ऽग्ग्र्याय च प्प्रथमाय च स्वाहा॥ ७२॥

ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा॥ ७३॥

ॐ नमः शीग्घ्र्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा॥ ७४॥

ॐ नमऽ उर्म्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा॥ ७५॥

ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्प्याय च स्वाहा॥ ७६॥

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा॥ ७७॥

ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा॥ ७८॥

ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा॥ ७९॥

ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा॥ ८०॥

ॐ नमः सोब्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा॥ ८१॥

ॐ नमो य्याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा॥ ८२॥

ॐ नमः श्श्लोक्क्याय चावसान्याय च स्वाहा॥ ८३॥

ॐ नमऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा॥ ८४॥

ॐ नमोव्वन्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा॥ ८५॥

ॐ नमः श्श्रवाय च प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा॥ ८६॥

ॐ नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा॥ ८७॥

ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा॥ ८८॥

ॐ नमो बिल्म्मिने च कवचिने च स्वाहा॥ ८९॥

ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा॥ ९०॥

ॐ नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा॥ ९१॥

ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा॥ ९२॥

ॐ नमो धृष्ण्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा॥ ९३॥

ॐ नमो निषङ्ग्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा॥ ९४॥

ॐ नमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा॥ ९५॥

ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च स्वाहा॥ ९६॥

ॐ नमः स्स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा॥ ९७॥

ॐ नमः काट्याय च नीप्याय च स्वाहा॥ ९८॥

ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा॥ ९९॥

ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा॥ १००॥

ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा॥ १०१॥

ॐ नमो व्वीद्ध्याय चातप्प्याय च स्वाहा॥ १०२॥

ॐ नमो मेग्घ्याय च विद्युत्याय च स्वाहा॥ १०३॥

ॐ नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा॥ १०४॥

ॐ नमो व्वात्याय च रेष्म्मयाय च स्वाहा॥ १०५॥

ॐ नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा॥ १०६॥

ॐ नमः सोमाय च रूद्राय च स्वाहा॥ १०७॥

ॐ नमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा॥ १०८॥

ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा॥ १०९॥

ॐ नमऽउग्राय च भीमाय च स्वाहा॥ ११०॥

ॐ नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा॥ १११॥

ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा॥ ११२॥

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशोब्भ्यः स्वाहा॥ ११३॥

ॐ नमस्ताराय स्वाहा॥ ११४॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा॥ ११५॥

ॐ नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च स्वाहा॥ ११६॥

ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा॥ ११७॥

ॐ नमः पार्षाय चावार्य्याय च स्वाहा॥ ११८॥

ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा॥ ११९॥

ॐ नमस्तीर्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा॥ १२०॥

ॐ नमः शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा॥ १२१॥

ॐ नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा॥ १२२॥

ॐ नमः किंशिलाय च क्षयणाय च स्वाहा॥ १२३॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा॥ १२४॥

ॐ नमऽ इरिण्याय च प्रपथ्याय च स्वाहा॥ १२५॥

ॐ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा॥ १२६॥

ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा॥ १२७॥

ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा॥ १२८॥

ॐ नमः काट्याय च गह्वेष्ठाय च स्वाहा॥ १२९॥

ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च स्वाहा॥ १३०॥

ॐ नमः पाᳬसव्याय च रजस्याय च स्वाहा॥ १३१॥

ॐ नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा॥ १३२॥

ॐ नमऽ ऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा॥ १३३॥

ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्णशदाय च स्वाहा॥ १३४॥

ॐ नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा॥ १३५॥

ॐ नमऽ आखिदते च प्रखिदते च स्वाहा॥ १३६॥

ॐ नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥ १३७॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानागुं हृदयेभ्यः स्वाहा॥ १३८॥

ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यो देवानागुं हृदयेभ्यः स्वाहा॥ १३९॥

ॐ नमो विक्षिणत्केभ्योदेवानागुं हृदयेभ्यः स्वाहा॥ १४०॥

ॐ नमऽ अनिर्हतेभ्यो देवानागुं हृदयेभ्यः स्वाहा॥ १४१॥

ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसाम्प्रजाना मेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मो च नः क्रिञ्चनाममत् स्वाहा॥ १४२॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्श्वम्पुष्टंग्रामेऽ स्मिन्ननातुरम् स्वाहा॥ १४३॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्श्वाहा भेषजी। शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृढ़ जीवसे स्वाहा॥ १४४॥

ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः। अवस्थिरामघवद्ब्भ्यस्तनुष्व मीड्ढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा॥ १४५॥

ॐ मीढुष्ट्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे व्वृक्षऽ आयुधन्निधाय कृत्तिं व्वासानऽ आ चर पिनाकम्बिब्भ्रदागहि स्वाहा॥ १४६॥

ॐ व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रꣳहेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा॥ १४७॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा॥ १४८॥

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्म्याम्। तेषाꣳ सहस्र-योजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १४९॥

ॐ अस्मिन्म्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि। तेषाꣳ सहस्र-योजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५०॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्द्राऽ उपश्श्रताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽवधन्नवानि तन्नमसि स्वाहा॥ १५१॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अंधः क्षमाचराः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५२॥

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः। तेषाꣳ सहस्र-योजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५३॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः। तेषाꣳ सहस्र-योजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५४॥

ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः। तेषाꣳ सहस्र-योजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५५॥

ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः। तेषाᳬ सहस्र-योजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५६॥

ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषाᳬ सहस्र-योजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५७॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाᳫसश्च्च दिशो रुद्रा व्वितस्थिरे। तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ १५८॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्योये दिवि येषां व्वर्षमिषवः। तेब्भ्योदश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्योनमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्ष्मो यश्च्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा॥ १५९॥

ॐ नमोऽस्तु रूद्रदेब्भ्योयेऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽइषवः। तेब्भ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोचीर्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्ष्मो यश्च्चच नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्म् स्वाहा॥ १६०॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रदेब्भ्योये पृथिव्व्यां येषामन्नऽमिषवः। तेब्भ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रीचीर्दशोदीर्दशोद्ध्वाः तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा॥ १६१॥

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः। ॐ व्वयᳫसोम (८ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)। ॐ उग्रश्च (७ मन्त्राः) (पाठमात्रम्) ॐ व्वाजश्च॥ १॥ प्राणश्च॥ २॥ ओजश्च॥ ३॥ ज्यैष्ठयं च॥ ४॥ स्वाहा। ॐ सत्यञ्च॥ १॥ ऋतञ्च॥ २॥ शान्ता च०॥ ३॥ शञ्च०॥ ४॥ स्वाहा ॐ ऊर्क् च॥ १॥ रयिश्च॥ २॥ वित्तञ्च॥ ३॥ व्व्रीहयश्च॥ ४॥ स्वाहा।

ॐ अश्मा च॥ १॥ अग्निश्च॥ २॥ व्वसु च॥ ३॥ स्वाहा।

ॐ ᳫ शुश्च०॥ १॥ आग्रयणश्च०॥ २॥ स्तुचश्च०॥ ३॥ स्वाहा।

ॐ अग्निश्च मऽइन्द्रश्च॥ १॥ मित्रश्च॥ २॥ पृथ्वी च॥ ३॥ स्वाहा।

ॐ अग्निश्च॥ १॥ व्रतञ्च॥ २॥ स्वाहा।

ॐ एका च ॥ १ ॥ स्वाहा।

ॐ चतस्रश्च ॥ १ ॥ स्वाहा।

ॐ त्र्यविश्च ॥ १ ॥ पष्ठवाट् च ॥ २ ॥ स्वाहा।

ॐ व्वाजाय स्वाहा० ॥ १ ॥ आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्० ॥ २ ॥ स्वाहा।

ॐ ऋचं वाचम्० स्वाहा। ॐ यन्मे छिद्रम० स्वाहा।

ॐ भूभुर्वः स्वः तस्तवितुः० स्वाहा। ॐ कयानश्चित्र० स्वाहा।

ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा। ॐ अभी षु णः० स्वाहा।

ॐ कया त्वन्नऽ ऊत्याभि० स्वाहा। ॐ इन्द्रो व्विश्वस्य० स्वाहा।

ॐ शं न्नो मित्रः शं वरुणाः० स्वाहा। शन्नो वाताः पवताꣳशंनः स्वाहा।

ॐ अहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा। ॐ शन्नो देवीः० स्वाहा।

ॐ स्योना पृथिवि स्वाहा। आपो हिष्ठा स्वाहा।

ॐ यो वः शिवतमो रसः० स्वाहा। ॐ तस्माऽ अरं गमाम वः० स्वाहा।

ॐ द्यौः शान्तिः० स्वाहा। ॐ दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा० स्वाहा।

ॐ दृते दृꣳ० माज्योक्ते० स्वाहा। ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे० स्वाहा।

ॐ नमस्तेऽ अस्तु व्विद्युते० स्वाहा। ॐ यतो-यतः समीहसे० स्वाहा।

ॐ सुमित्रिया नऽ आपः० स्वाहा। ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्० स्वाहा।

ॐ सद्योजातम० (५ मन्त्राः) पाठमात्रम्

ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति।

गुग्गुलहोम

मम गृहे भूतादिदोषनिवृत्ति अर्थं गुग्गुलहोम करिष्ये। **ॐ त्र्यंबकं यजामहे०** ॐ मृत्युंजय महादेव... स्वाहा।

सर्षपहोम

मम सर्वारिष्ट शांति अर्थं शत्रुबलक्षयार्थं सर्षपहोमं करिष्ये। **ॐ सजोषा इन्द्र स गणो मरुभ्दिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ १ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥** सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी। एवमेव त्वया कार्यं अस्मद् वैरिविनाशनम्॥ स्वाहा॥ उदकस्पर्शः।

लक्ष्मी होम

मम गृहे अलक्ष्मी विसर्जनार्थं महालक्ष्मी प्रसन्नातार्थं लक्ष्मीहोमं करिष्ये। ॐ इदम्मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्। मयि देवा देधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी...० स्वाहा।

व्याहृतिहोम

कर्मणि न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थं व्याहृतिहोमं करिष्ये। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥

स्विष्टकृत् होम

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

नवाहुतयः प्रोक्षण्यां त्यागः

१. ॐ अग्नये नमः : इदमग्नये न मम।
२. ॐ वायवे नमः : इदम् वायवे न मम।
३. ॐ सूर्याय नमः : इदम् सूर्याय न मम।
४. ॐ अग्निवरुणाभ्यां नमः : इदमग्नि वरुणाभ्यां न मम। पुनः
५. ॐ अग्निवरुणाभ्यां नमः : इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।

६.	ॐ अग्निवरुणांभ्यां नमः	: इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।
६.	ॐ अग्नये अयसे नमः	: इदमग्नये अयसे न मम।
७.	ॐ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमः	: इदम् वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।
८.	ॐ वरुणायादित्यायादितयेनमः	: इदम् वरुणायादित्यायादितये न मम।
९.	ॐ प्रजापतये नमः	: इदम् प्रजापतये न मम।

दशांशतर्पणमार्जनविधिः

पाठ अथवा जप का दशांश होम तत् दशांश तर्पण तत् दशांश मार्जन और तत् दशांश ब्राह्मण भोजन-नियम है।

आचमन प्राणायाम संकल्पः

कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं जपदशाशने कृतस्य होमकर्मणः परिपूर्णतार्थ तत् दशांशेन तर्पण तत दशांशेन मार्जनं करिष्ये।

तर्पण

जल में कर्पूर, केसर आदि सुवासित पदार्थ डालकर उसमें तीर्थों का आवाहन अथवा तीर्थजल एवं दूध डालें। गंध पुष्प से मूलमंत्र से/ देवमंत्र से जल की पूजा करें। उसमें देवी का आवाहन करे।

अन्य पात्र में देवता की प्रतिमा रखें। प्रतिमा की पूजा करें। पश्चात् मूलमंत्र से/पाठमंत्र बोलते अभीष्ट देवता के नाम के साथ "तर्पयामि" पद जोड़ें। यथा—मंत्रः **श्री महाकालीं तर्पयामि/चंडिकां तर्पयामि** बोलकर किंचित् जल देवतीर्थं से प्रतिमा के पाँव पर छोड़ें। देवी अतिशय प्रसन्न हो रही हैं ऐसा करें। तर्पण पूर्ण होने पर प्राणायाम आदि करें। प्रतिमा को

शुद्धजल से स्नान करायें व पूजा कर मूलस्थान पर रखें। जल स्थित देवता का विसर्जन करें व हृदय में स्थापित करें।

मार्जन विधि

आचमनं, प्राणायामः। मार्जन में दो विधान है—

१. देवता की प्रतिमा पर जल से मार्जन करते मंत्रोच्चार।

२. यजमान/अपने में देवता बुद्धि कर, देवता ध्यान कर पूजा करें।

मूलमंत्र/देवता मंत्र बोलते देवता का ध्यान सतत रखते हुए देवता का नाम लेकर **मार्जयामि** अथवा अभिषिंचामि नमः पद जोड़ें और अपने पर जल का मार्जन करें।

संकल्प

अनेन तर्पणेन मार्जनेन च..... देवता प्रीयताम्। बोलते जल देवता को अर्पित करें। प्रतिमा पर मार्जन किया हो तो जल का विसर्जन करें।

॥ अथ बलिदानम् ॥

हस्ते जलमादाय

कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं दिक्पाल देवतासमन्वित-स्थापितमण्डल-देवतानां पूजनपूर्वकं बलिदानकर्माहं करिष्ये। (बलिदान कर्म केवल पुरुष यजमान ही करें।)

एकतन्त्रेण

१. पूर्वे इन्द्रबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

२. आग्नेय्यामग्निबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

३. दक्षिणस्यां यमबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

४. नैर्ऋत्यांनिर्ऋतिबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

५. पश्चिमायां वरुणबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

६. वायव्यां वायुबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

७. उदिच्यां सोमबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

८. ऐशान्यामीश्वरबलिद्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

९. पूर्वेशानयोर्मध्ये ब्रह्मबलि
द्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

१०. निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये अनंत बलि
द्रव्याय नमः : गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि

अथवा

बलिदानम्.....एकतंत्रेण

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहो र्ध्वायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा॥ इन्द्रादिदशदिक्पालान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिर्गंधाद्युपचारैः युष्मान् अहं पूजयामि। **हस्ते जलमादाय—** इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितबलिं समर्पयामि। **हाथ जोड़ कर रखें—**भो इंद्रादिदशदिक्पालदेवाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदाभवत। **हस्ते जलमादाय—** अनेन पूजनपूर्वकबलिदानेन इंद्रादिदशदिक्पालदेवाः प्रीयंतां न मम।

गणपतिबलि

ॐ गणानान्त्वा० ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिं सांगं परिवारं सायुधं सशक्तिकम् एभिर्गंधाद्युपचारैः त्वामहं पूजयामि। गणपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादित बलिं सम०। भो गणपते इमं बलिं गृहाण मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। मम गृहे

आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तृष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वकबलिदानेन गणपतिः प्रीयतां....

मातृकाबलि

ॐ भूर्भुवः स्वः सगणेशगौर्याद्यावाहित मातृः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः एभिर्गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि। सगणेशगौर्याद्यावाहित मातृभ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बलिं सम०। भो भो सगणेशगौर्याद्यावाहित। मातरः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वक बलिदानेन सगणेशगौर्याद्यावाहित मातरः प्रीयन्तां न मम।

बसोर्धाराबलि

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीआदि वसोर्धाराः सांगाः .... पूजयामि। श्रीआदि आवाहित वसोर्धाराभ्य.....सम। भो भो श्री आदि आवाहित वसोर्धाराः इमं बलिं.... भवत। अनेन पूजनपूर्वक बलिदानेन वसोर्धाराः प्रीयन्तां।

वास्तोष्पतिबलि

ॐ भूर्भुवः स्वः शिख्यादि (ब्रह्मादि) वास्तुमंडलदेवता सहितं वास्तुपुरुषं ...पूज.। मंडलदेवता सहिताय वास्तुपुरुषाय सांगाय.... इमं आसादित बलिं सम.। भो भो मंडलदेवता सहित वास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। मम गृहे आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वक बलिदानेन मंडलसहित वास्तुपुरुषः प्रीयताम् न मम।

योगिनीबलि

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिता गजाननादि (विश्वदुर्गादि) चतुः षष्टियोगिनीः सांगाः... अहं पूजयामि। सांगाभ्यः... बलिं सम०। भो भो ....योगिन्यः इमं बलिं गृह्णीत। मम... कुरुत। आयुः कर्त्र्यः

क्षेमकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्य निर्विघ्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन श्रीमहाकाली योगिन्यः प्रीयन्ताम्।

क्षेत्रपालबलि

ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादि क्षेत्रपालदेवान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिः गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि। क्षेत्रपालदेवेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितबलिं सम्। भो भो क्षेत्रपालदेवाः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः इमं बलिं गृह्णीत। **मम** सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन क्षेत्रपालदेवाः प्रीयन्ताम् न मम।

भैरवबलि

ॐ भूर्भुवः स्वः चतुः षष्टि भैरवान्... पूर्ववत्।

प्रधान देवता बलि

ब्रह्मादि सर्वतो भद्रमंडलदेवता समन्वितां अमुकदेवतां (महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणीं त्रिगुणात्मिकां जगदंबिकां राजराजेश्वरीं) सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकां एभिः गंधाद्युपचारैः त्वां अहं पूजयामि। ब्रह्मादि सर्वतो भद्रमंडलदेवता समन्वितायै.... सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपं आसादित बलिं सम०। भो भो ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमंडलदेवता समन्विते.... त्रिगुणात्मिके जगदंबिके राजराजेश्वरि देवते इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शांतिकर्त्री पुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री कल्याणकर्त्री वरदा भव। अनेन पूजनपूर्वक बलिदानेन सर्वतोभद्रमंडलसमन्विता.... देवता प्रीयताम् न मम।

नवग्रहबलि

सूर्यादिनवग्रहमंडलदेवान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिः गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि। सूर्यादिनवग्रहमंडलदेवेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादित बलिं सम०। भो

भो सूर्यादि नवग्रहमंडलदेवाः इमं बलिं गृहणीत मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वक बलिदानेन सूर्यादि नवग्रहमंडलदेवाः प्रीयन्ताम् न मम।

देवी पूजा में बलिदान का विशेष स्थान है। तंत्र ग्रंथों में पशु बलिदान का विधान है। लेकिन तत्त्वचिंतक पशु का यौगिक अर्थ लेते हैं। आज कूष्मांड बलि प्रचलित है। वही योग्य है। चंडीपाठ में पशुबलि को विप्रवर्ज्य कहा है।

॥ पूर्णाहुतिमन्त्रा ॥

हस्ते जलमादाय—मया प्रारब्धस्य ...... कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये।

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ२ ॥ उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥ १ ॥

व्वयं नाम प्रव्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नामोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद् गौर ऽएतत् ॥ २ ॥

चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ २ आविवेश ॥ ३ ॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्रऽएकंꣳ सूर्य ऽएकंजजान वेनादेकंꣳ स्वधया निष्ट्तक्षुः ॥ ४ ॥

एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धारा ऽ अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य ऽ आसाम् ॥ ५ ॥

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽ अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते ऽ अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा ऽ इव क्षिपणोरीषमाणा ॥ ६ ॥

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥ ७ ॥

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो ऽ अग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥ ८॥

कन्या ऽइव वहतुमेतवा ऽ उ ऽ अञ्ज्यञ्जाना ऽ अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽ अभि तत्पवन्ते॥ ९॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञ नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ १०॥

धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे य ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं ऽ ऊर्मिम्॥ ११॥

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ १२॥

मूर्धानं दिवो ऽ अरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽ आ जातमग्निम्। कवि१० सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १३॥

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्ज ৬ शतक्रतो स्वाहा॥ १४॥

वसोर्द्धारामन्त्र

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽ ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि॥ सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनी रापृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १॥

घृत मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ २॥

अनाधृष्यो जातवेदा ऽअनिष्टृतो व्विराडग्ने क्षत्त्रभृद्दीदिहीह॥ व्विश्श्वा ऽ आशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परि पाहि नो व्वृधे॥ ३॥

बृहस्पते सवितर्बोधयैन৬ स৬शितं चित्सन्तरा৬स৬शिशाधि॥ व्वर्द्धयैनं महते सौभगाय व्विश्श्व ऽएनमनु मदन्तु देवाः॥ ४॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्क्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पा৬सुरे स्वाहा॥ ५॥

इरावती धेनुमती हि भूतꣳ सूयवसनी मनवे दशस्या॥ व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥ ६॥

ॐ विष्णोर्नु कं व्वीर्य्याणि प्रवोचं यः पार्त्थिवानि विममे रजाꣳसि॥ यो ऽअस्वकभायदुत्तरꣳ सधस्थं विचक्क्रमाणस्त्रे धोरुगायो विष्णवे त्वा॥ ७॥

दिवा वा विष्ण ऽउत वा पृथिव्या महो वा विष्ण ऽउरोरन्तरिक्षात्॥ उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा॥ ८॥

प्रतद्विष्णु स्तवते वीर्य्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः॥ यस्योरूषु त्रिषु विक्क्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि व्विश्श्वा॥ ९॥

विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्द्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ १०॥

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्॥ देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा॥ ११॥

कुण्डाग्ने प्रदक्षिणामन्त्रः

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान्वि श्वानि देव वयुनानि विद्वान्॥ यु योद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते न ऽ उक्तिं व्विधेम॥

भस्मधारणमन्त्र

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। कस्यपश्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायम्। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे। तन्नो ऽ अस्तु त्र्याषमिति हृदि।

संस्रव प्राशनम् पवित्राभ्यां मार्जनम्। अग्नौ पवित्र प्रति पत्तिः॥

॥ अथ दानम् ॥

पूर्णपात्रदानम्

कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं ब्रह्मन् तुभ्यमहं सम्प्रददे। 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।' अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः कुर्यात्।

'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तुभेषजम्।' इतिमन्त्रेण सकुटुम्बं यजमानम् उपयमनकुशमार्जयेत्। उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। ब्रह्मग्रन्थिविमोकः।

श्रेयोदानम्

तत आचार्यः श्रेयोदानं कुर्यात्। तद्यथा—अद्येत्यादिकृतस्य .... कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये। भवन्नियोगेन मया अस्मिन् .... कर्मणियत्कृतम् आचार्यत्व तदुत्पन्नं श्रेयः तत् अमुना साक्षतेन सजलेन पूगी फलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। प्रतिगृह्यताम् 'देवस्यत्वे' ति प्रतिगृह्णामि। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव। 'भवामी' ति तेन वाच्यम्। इति श्रेयोदानम्।

दक्षिणासङ्कल्प

अद्य कृतस्य .... कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्यो मन्त्रजापकेभ्यो हवनकर्तृभ्योऽन्येभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे। इति दक्षिणासङ्कल्पः।

ब्राह्मणभोजनसङ्कल्प

ततो ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पं कुर्यात्। कृतस्य ...... कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनाऽन्नेनाऽहं भोजयिष्ये। भोजनान्ते तेभ्यस्ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये। इति ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः।

पीठदानसङ्कल्प

ततो ग्रह (वाप्रधान) पीठदेवतानां गन्धादिपञ्चोपचारैरुत्तरपूजनं कुर्यात्। गणपत्याद्यावाहित-देवताभ्यो नमः। आचार्याय प्रधानपीठादि दद्यात्। अद्यकृतस्य .... कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणासहितम् आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

छायापात्रदानम्

यजमानः एकस्मिन् कांस्यमात्रे स सुवर्ण स-दक्षिणाकं च आज्यं स्थाप्य, आत्मप्रकृतिं निरीक्ष्य ब्राह्मणाय दद्यात्।

कांस्यपात्रे स्थिताज्यं च आत्मरूपं निरीक्ष्य तु।
स-सुवर्ण तु यो दद्यात् सर्व विघ्नोपशान्तये॥

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्ष यत्तस्व सदस्यैः॥

इति मन्त्रं पठित्वाऽऽज्ये मुखमवलोक्य सङ्कल्पं कुर्यात्।

सङ्कल्प

'अद्येत्याद्युच्चार्य ममै तच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षय-सर्वग्रहपीडाशान्ति-शरीरोत्थार्तिनाशाय प्रासादवाञ्छाऽऽयुरारोग्यादि-सर्वसौभाग्यप्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वमुखछायावीक्षिताज्यपूरित-कांस्यपात्रं स-सुवर्णं स-दक्षिणाकं श्रीविष्णुदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।' सङ्कल्पं कृत्वा प्रार्थयेत्।

प्रार्थना

याऽलक्ष्मीर्चच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्गि समुपस्थितम्।
तत्सर्वं नाशयाऽऽज्य त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय॥१॥
आज्यं सुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम्।
आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम॥२॥

भूयसीदक्षिणासङ्कल्प

तत अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दद्यात्। 'कृतस्य .... कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनाऽतिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्योनानाशर्मब्राह्मणेभ्यः समाश्रितबन्धुवर्गेभ्योनट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।'

॥ आरती श्री गणपति ॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
एकदंत दयावंत चार भुजाधारी,
मस्तक सिंदूर सोहे, मूस की सवारी॥ १॥
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा,
लड्डुअन्न को भोग लगे, संत करे सेवा॥ २॥
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया,
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥ ३॥

सुखकर्ता दुखःहर्ता वातर्त विघ्नांची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।
सर्वांगी सुंदर उटि शेंदूराची।
कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दशर्नमात्रे मनः कामना पुरती॥ जयदेव॥ १॥
रत्नखचित फरा तुज गौरी कुमरा।
चंदनाची उटी कुंकमकेशरा।
हिरेजडित मुकुट शोभते बरा।
रूणझुणती नूपुरे चरणी घागरिया॥ जयदेव॥ २॥
लंबोदर पीतांबर फणिवर बंधना।
सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना।
दासा रामाचा वाट पाहे सदना।
संकटी पावावे, निर्वाणी रक्षावे सुदरवंदना॥ जयदेव॥ ३॥

॥ श्री विष्णुजी की आरती ॥

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, छण में दूर करे॥ १॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ २॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मै किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं किसकी॥ ३॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ५॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राण पती।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती॥ ६॥
दीन बन्धु दुख हर्ता, ठाकुर तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ७॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ८॥
तन मन धन सब है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा॥ ९॥
श्याम सुंदरजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपति पावे॥ १०॥

॥ श्री सत्यनारायणजी की आरती ॥

जय श्री लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा॥ १॥
रत्न जड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छबि राजे।
नारद करते निराजन, घंटा ध्वनि बाजे॥ २॥
प्रकट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो॥ ३॥
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपति हरी॥ ४॥
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभु जी फिर स्तुति कीनी॥ ५॥
भाव भक्ति के कारण, क्षण-क्षण रूप धरो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरो॥ ६॥
ग्वाल बाल संग राजा बन में भक्ति करी।
मन वांछित फल दीना, दीनदयाल हरी॥ ७॥
चढ़त प्रसाद सवाया, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्य देवा॥ ८॥
श्री सत्यनारायणजी की आरति जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥ ९॥

॥ शिवशंकर जी की आरती ॥

ॐ जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा॥
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसासन गरुडासन, वृषवाहन साजे॥ १॥
दोय भुज चार चतुर्भुज, दशभुज ते सोहैं।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे॥ २॥
अक्षमाला वनमाला, रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद् सोहै भाले शुभकारी॥ ३॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे॥ ४॥
कर मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता।
सुख-कर्ता दुःख-हर्ता जग-पालनकर्ता॥ ५॥
ब्रह्म-विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका॥ ६॥
त्रिगुणस्वामी की आरति जो कोई नर गावै।
भनत शिवानन्द स्वामी मन-वांछित फल पावै॥ ७॥

ॐ हर हर महादेव॥

॥ दुर्गाजी की आरती ॥

ॐ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री॥ १॥
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥ २॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै॥ ३॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥ ४॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर राजत समज्योती॥ ५॥
शुम्भ निशुम्भ विडारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥ ६॥
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ ७॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥ ८॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥ ९॥
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पत्ति करता॥ १०॥
भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्परधारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी॥ ११॥

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
श्रीमालाकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती॥ १२॥
अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥ १३॥

रुद्रयामलोक्त-श्रीसूक्तस्य सम्पुटपुरश्चर्णाविधः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः—

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सद्रार्द्रचित्ता॥ १॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः—

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोंः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ २॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः—

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मातिमतीव शुभां ददासि। ॐ अश्वपूर्णां मध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम्॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोप कारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ ३॥

॥ नान्दी मुखश्राद्ध ॥

अपने सामने १ पत्तल रखे, उसी पर चार स्थानों पर जल-जव-दर्भ आदि क्रमशः छोड़े—

पहले—हाथ में ४ बार जल ले-लेकर छोड़े-निम्न मन्त्र पढ़े—

१. ॐ सत्य वसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं व पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।

२. ॐ मातृ-पितामही-प्रमितामहीः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं प्राद प्रक्षालनं वृद्धिः।

३. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।

४. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।

१. ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः॥

२. ॐ मातृपितामही-प्रपितामहीः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः॥

३. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः। नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्, यथा—प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

जल चढ़ावे— ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु॥

रोली चढ़ावे— ॥ ॐ गन्धाः पान्तु॥

अक्षत चढ़ावे— ॥ ॐ अक्षतं चारिष्ट मस्तु॥

फूल चढ़ावे— ॥ ॐ सौमनस्य मस्तु॥

हाथ में जल लेकर फिर ४ बार छोड़े

१. ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

२. ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामही: नान्दीमुख्य: भूर्भुव: स्व: इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

३. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्वाहा इदं गन्धाद्यर्चन स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

४. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहा: सपत्नीका: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

भोजन निष्क्रय यथाशक्ति द्रव्य चढ़ावे

१. ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुख: भूर्भुव: स्व: इदं भोजन निष्क्रयभूतं द्रव्यम्-अमृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

२. ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामही: नान्दीमुख्य: भूर्भुव: स्व: इदं भोजन निष्क्रयभूतं द्रव्यम्-अमृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

३. ॐ पितृ-पितामह प्रपितामहा: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं भोजन निष्क्रय भूतं द्रव्यम्-अमृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

४. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहा: सपत्नीका: नान्दीमुखा: भूर्भुव: स्व: इदं भोजन-निष्क्रय भूतं द्रव्यम्-अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।

हाथ में दूध-जव-जल लेकर ४ बार छोड़े

१. ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: प्रीयन्ताम्।

२. ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामही: नान्दीमुख्य: प्रीयन्ताम्।

३. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नान्दीमुखा: प्रीयन्ताम्।

४. ॐ मातामह-प्रमातामह-बृद्धप्रमातामहा: सपत्नीका: नान्दीमुखा: प्रीयन्ताम्।

हाथ में जल लेकर पूर्व की ओर धारा देते हुए ४ बार छोड़े

यजमान कहे—अघोराः पितरः सन्तु॥

ब्राह्मण कहे—सन्त्वघोराः पितरः।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां, दातारो नोऽभिवर्धन्तां, वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहुभवेदतिथीश्चलभे-महि॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्याः आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मण कहे—**सन्तु एतः सत्या आशिषः॥**

जव-दर्भ-जल-दक्षिणा लेकर संकल्प करे

१. ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठार्थं द्राक्षाऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमृत्सृजे।

२. ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामहीः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

३. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमृत्सृजे।

४. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भुर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥(नोट-कुछ लोग सीधा दान करते हैं।)

सीधा दान संकल्प

अद्य मयाचरितस्य अमुक कर्मणः कर्माङ्गत्वेन नान्दी श्राद्ध नैमित्तिकेन

च ब्राह्मण भेजन पर्याप्तामात्रं तद् फल सिध्यर्थं दक्षिणां च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

ब्राह्मण मन्त्र पाठ करें

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमाना येन्दवे। अभिदेवांइयक्षते। इडामग्ने पुरदᳫ स ᳫसनिंगोः शश्वत्तमᳫहवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने साते सुमतिर्भूत्वस्मे।

यजमान कहे—ॐ अनेन नान्दी श्राद्धं सम्पन्नम्॥

ब्राह्मण कहे—ॐ सुसम्पन्नम्।

विसर्जनम्

ॐ वाजे वाजे वत वाजिनी नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः॥ १॥

ॐ आमा वाजस्य प्रसवो जगम्या दे मे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे। आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्॥ २॥

मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही। पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥ ३॥

माता महस्तत् पिता च प्रमाता महकादयः। एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम्॥ ४॥

यजमान कहे—मयाचरिते सांकल्पिक नान्दी श्राद्धे-न्यूनातिरिक्तो यो विधिः सः भवद् वचनात् गणपति प्रसादात् च परिपूर्णोऽस्तु।

ब्राह्मण कहे—अस्तु परिपूर्णः।

॥ आयुष्यमंत्र जप ॥

ॐ यदायुष्यं चिरं देवाः सप्त कल्पान्त जीविषु।
ददुस्तेनायुषयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥ १ ॥
ॐ दीर्घानागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥ २ ॥
सत्यानि पंचभूतानि विनाश रहितानि च।
अविनाश्या युषा तादृवज्जीवेम शरदः शतम्॥ ३ ॥
ॐ आयुष्यं वर्चस्य७ँ रायस्पोषमौभ्दिदम्।
इद१० हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्राया विशता दुमाम्॥ ४॥
न तद्ररक्षा७ँसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः।
प्रथमज७ँ ह्येतत्। यो विभर्ति दाक्षायण ७ँ हिरण्य ७ँ।·
स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः।
७ँ समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥ ५ ॥
यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ७ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आबध्नामि शत शारदा यायुष्मा ज्ञरदष्ट्रिर्यथासम्॥ ६ ॥

श्रीगायत्री माता

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

श्रीगायत्रीयन्त्रम्
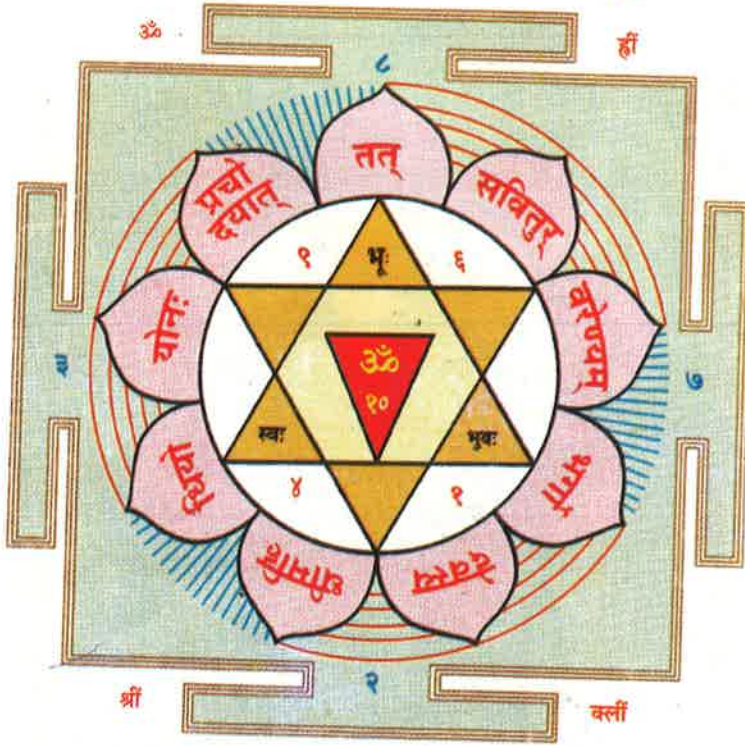
गायत्री ध्यान

रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां रक्तां रक्तनवस्त्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम् ।
गायत्रीं कमलासनां करतलव्यान ध्दकुण्डाम्बुजां पद्माक्षीं चवरस्त्रजं चदधतीं हंसाधिरुढां भजे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

श्रीगायत्री महामन्त्र
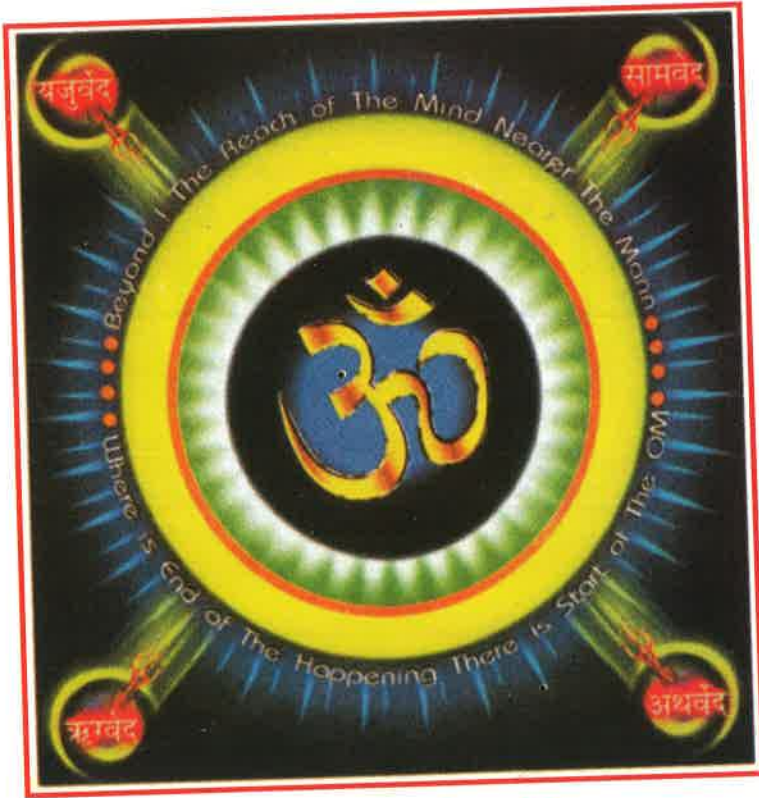
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

श्री महामृत्युञ्जययन्त्रम्

महामृत्युञ्जय मन्त्र

अघोरेभ्यो, अथघोरेभ्यो, घोरघोरतरेभ्यः सर्वतः शर्वसर्वेभ्यो।
नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः मृत्युंजय, त्र्यंबक, सदाशिव नमस्ते॥

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः जूं हौं ॐ

सर्वतोभद्रचक्र
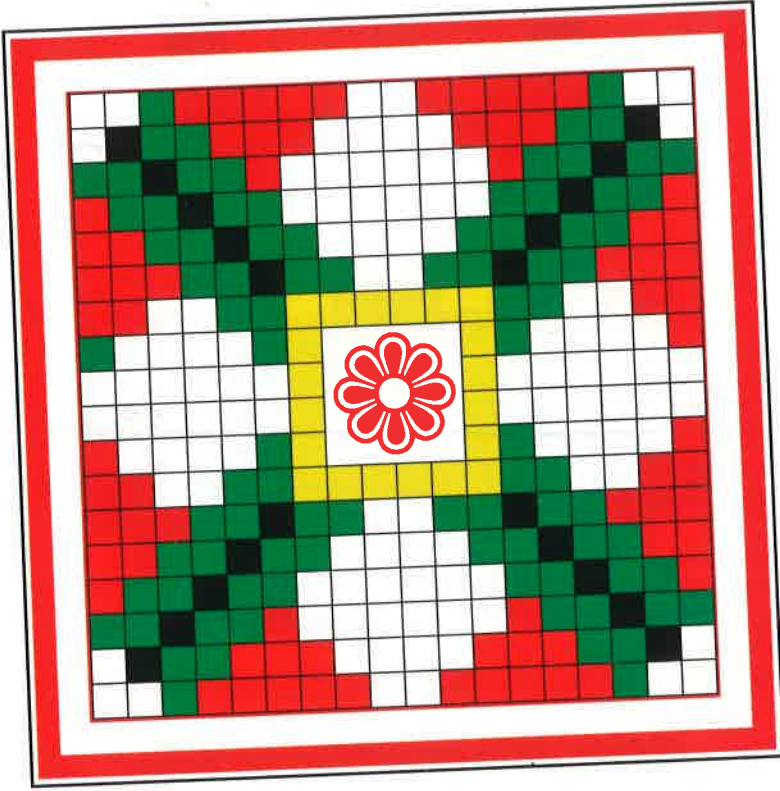
प्रागुदीच्यायता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम्। खण्डेदुस्त्रिपदैः कोणे शृङ्खला पञ्चभिः पदैः।।१।।
एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः। चतुर्विंशत्पदा वापी परिधिर्विंशतिः पदैः।।२।।
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टलं स्मृतम्। श्वेतेन्दुः शृङ्खला कृष्णावली नीलेन पूरयेत्।।३।।
भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीतवर्णकः। बाह्यान्तर्दला श्वेत कर्णिका पीतवर्णिका।।४।।
परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्वं रजस्तमः। तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान्।।५।।
भद्रेण पूजनाशक्तौ कुर्य्यमष्टदलं शुभम्। गोधूमान्नेन तत्कार्यं तण्डुलेनाऽथवा शुभम्।।६।।

एकलिङ्गतोभद्रचक्रम्

आभ्युदयिक-नान्दीश्राद्धप्रारूपः

पूर्व

(1) विश्वेदेव

उत्तर

(4) मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह
1 2 3

(3) पितृ-पितामह-प्रपितामह
1 2 3

(2) मातृ-पितामही-प्रपितामही
1 2 3

दक्षिण

पश्चिम
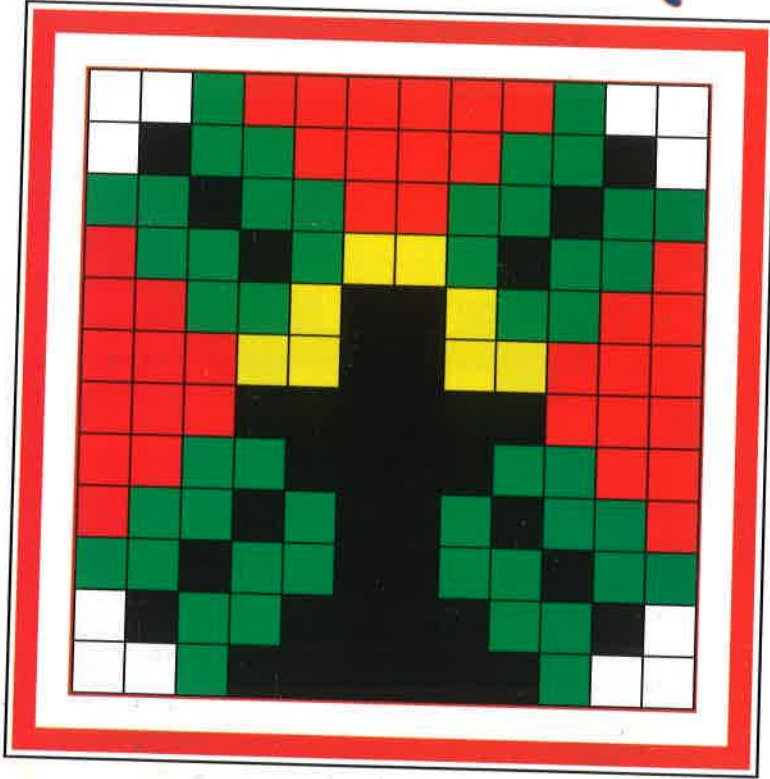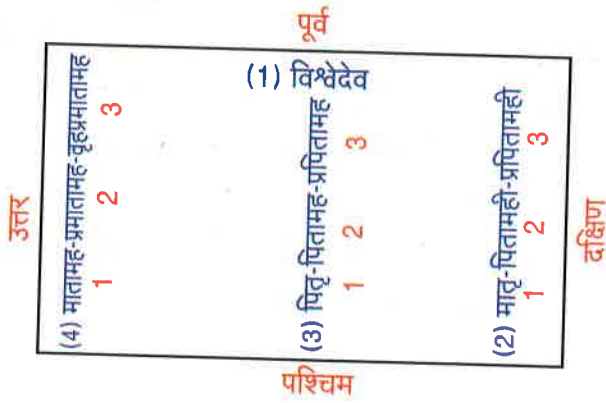
चतुर्लिङ्गतोभद्रचक्र

द्वादशलिङ्गतोभद्रं हरिहरमंडलम्

नवग्रह चक्र

वारुण मण्डल चक्र

क्षेत्रपालचक्र
पू०
उ०
द०
प०
चतुःषष्टियोगिनीचक्र
ई०
पू०
अ०
उ०
द०
वा०
प०
नै०

चतुःषष्टिपदं वास्तुमण्डलचक्र

षोडशमातृकाचक्र

ॐ आत्मनःकुल- देवतायै नमः १७	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसायै नमः ९	ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः १२
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः ११	ॐ सावित्र्यै नमः ७	ॐ गौर्य्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १

सप्तघृतमातृकाचक्र

॥ श्री ॥
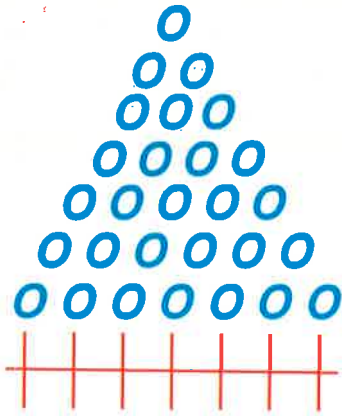
तोरणद्वारचक्र
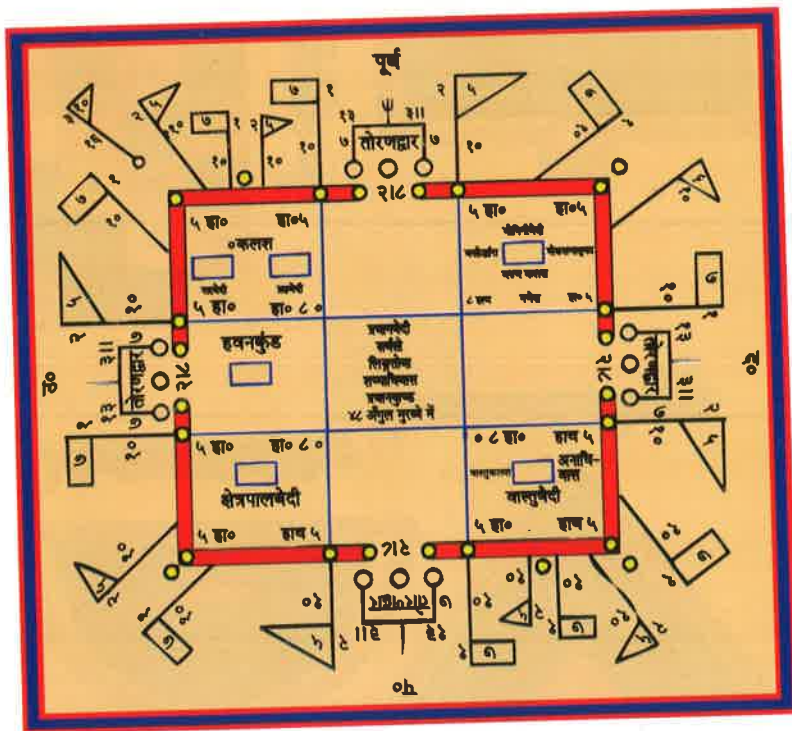
चतुरस्रकुण्डस्वरूपम्

कुण्डसिद्धि-हस्तादिमानम्

ह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१६
अं.	२४	३४	४२	४८	५३	५८	६३	६७	७२	७५	९६
य.	०	०	५	०	५	६	४	७	०	७	०
यू.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

योनिकुण्डस्वरूपम्

अर्द्धचन्द्रस्वरूपम्

त्रिकोणकुण्डस्वरूपम्
वृत्तकुण्डस्वरूपम्
१ २
४ ४
व्यासार्द्ध
१ २
४ ४

विषम-षडस्त्र-कुण्डस्वरूपम्
व्या० १८।२

पद्मकुण्डस्वरूपम्

विषम-अष्टस्त्र-कुण्डस्वरूपम्